सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
www.newsparivahan.com
परिवहन विशेष
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023
वर्ष 03, अंक 03, नई दिल्ली । शुक्रवार, 14 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 दिल्ली सरकार आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना लागू करने को तैयार
06 डिजिटल युग में होली समारोह का भविष्य क्या है?
08 दक्ष फाउंडेशन परिवार ने वृद्धाश्रम और अनाथालय में फूलों संग खेली होली

एनआईसी परिवहन परियोजना में भ्रष्टाचार और हेराफेरी के संबंध में

सत्यमेव जयते
MoRTH
Ministry of Road Transport & Highways
Government of India

संजय बाटला

मैं आपको औपचारिक रूप से राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एनआईसी) में वर्तमान में हो रहे भ्रष्टाचार और हेराफेरी के बारे में गंभीर चिंताओं को ध्यान में लाने के लिए लिख रहा हूँ, विशेष रूप से परिवहन परियोजना के संचालन के भीतर।

एनआईसी में वरिष्ठ अधिकारियों से जुड़ी अनियमितताएँ चल रही हैं जो परियोजना की अखंडता को गंभीर रूप से कमज़ोर कर रही हैं और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) द्वारा निर्धारित दिशानिर्देशों का उल्लंघन कर रही हैं।

प्राथमिक मुद्दा काम पर रखे गए कर्मचारियों के वेतन में हेराफेरी से जुड़ा है, जिसमें विशिष्ट विक्रेताओं को अत्यधिक कमीशन मिलता है जो कि Meity के दिशा-निर्देशों के अनुसार, सरकारी ई-मार्केटप्लेस (GEM) प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से कार्य निष्पादित किए जाने पर मिलने वाले कमीशन से कहीं अधिक है। इस हेराफेरी के परिणामस्वरूप कुछ कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि होती है, जबकि अन्य कर्मचारियों के वेतन में कमी आती है। यह स्थिति एनआईसी (NIC) अधिकारियों और कुछ विक्रेताओं के बीच स्पष्ट सांठगांठ का संकेत देती है, जिसमें दोनों पक्षों को इन बढ़े हुए वेतन और कमीशन से लाभ मिलता है, जबकि अन्य वैध कर्मियों को कम वेतन दिया जाता है।

यह स्पष्ट है कि ये अनियमितताएँ लंबे समय से हो रही हैं। दुर्भाग्य से, इन भ्रष्ट प्रथाओं को अनदेखा किया जाता रहा है, और अधिकारियों द्वारा उन्हें संबोधित करने के लिए कोई कार्रवाई नहीं की गई है। मेरे पास ऐसे साक्ष्य हैं जो एनआईसी (NIC) अधिकारियों द्वारा किए गए कुछ हेरफेरों को उजागर करते हैं, जो आज भी जारी हैं। MeitY द्वारा अनिवार्य किए जाने के बावजूद, जनशक्ति का प्रावधान GEM ढांचे से बाहर है।

इस स्थिति पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। चल रहे भ्रष्टाचार से न केवल एनआईसी की अखंडता को खतरा है, बल्कि वित्तीय कुप्रबंधन भी होता है, जिससे अंततः परिवहन परियोजना के लिए निर्धारित संसाधनों का दुरुपयोग होता है। इसके अलावा, यह एक ऐसा माहौल बनाता है जहाँ अयोग्य विक्रेता और व्यक्ति गैरकानूनी तरीके से लाभ उठा रहे हैं, जबकि अन्य जो इन लाभों के हकदार हैं, उनकी उपेक्षा की जा रही है।

मैं अनुरोध करता हूँ कि इन मामलों की गहन जांच की जाए और सुधारात्मक उपाय तुरंत लागू किए जाएं। संबंधित एनआईसी अधिकारियों के साथ-साथ इसमें शामिल विक्रेताओं को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए और यह सुनिश्चित करने के लिए एक स्पष्ट रूपरेखा लागू की जानी चाहिए कि सभी संचालन निर्धारित जीईएम दिशानिर्देशों का पालन करें।

मुझे विश्वास है कि इस गंभीर मुद्दे को तत्परता और गंभीरता से लिया जाएगा।

राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र की टीम वाहन मालिकों की जानकारी इनबॉक्स में बेच रही है

परिवहन विभाग के डेटा को संभालने वाली राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र की टीम के बारे में एक बहुत ही गंभीर मुद्दे पर ध्यान आकृषित करने के लिए लिख रहा हूँ। मेरे संज्ञान में आया है कि वे वाहन मालिकों के मोबाइल नंबर को 50 रुपये प्रति वाहन के हिसाब से बेचा जा रहे हैं, साथ ही वाहन मालिकों की सभी व्यक्तिगत जानकारी भी। इसका इस्तेमाल अपराधियों द्वारा डिजिटल गिरफ़्तारी और महिलाओं के खिलाफ़ कई अन्य अपराधों और कई अन्य गोपनीयता समस्याओं के लिए किया जा रहा है।

मैंने पहले भी कई बार इस मुद्दे पर आपका ध्यान आकर्षित किया है, लेकिन भ्रष्टाचार रोकने का दावा करने वाली सरकार ने कोई कार्रवाई नहीं की है। एक जिम्मेदार नागरिक के तौर पर मैं ऐसे मुद्दे उठाता रहूंगा, क्योंकि इससे मेरे साथी नागरिकों को इस सरकार के जोखिम का सामना करना पड़ता है।

दलालों के निर्देश पर राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र द्वारा वाहन शुल्क और कर डेटा के कथित हेरफेर के संबंध में

परिवहन विभाग के डेटा को संभालने वाली टीम के बारे में एक गंभीर मामले की जानकारी हेतु लिए लिख रहा हूँ। यह पाया गया है कि एप्लिकेशन में दिए गए एक पेज के माध्यम से वाहनों के शुल्क और करों में हेराफेरी की जा रही है, जिसका उपयोग प्रोजेक्ट को संभालने वाले राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्रों की डेवलपर्स टीम द्वारा वाहन शुल्क और करों और डेटाबेस में अन्य हेराफेरी को अपडेट करने के लिए किया जा रहा है। यह सब फील्ड में दलालों से पैसे लेकर किया जा रहा है, जो इन दलालों द्वारा देश के आम नागरिकों का शोषण करने और संबंधित सरकारों को राजस्व हानि पहुँचाने की सांठगांठ है।

यह पेज सीधे डेटाबेस में अपडेट होता है। मैं बर्प सूट और जैप का उपयोग करके वेबपेज तक पहुंचने में सक्षम है और यह दिखाता है कि सिस्टम कितना कमजोर है।

वायु प्रदूषण से छुटकारे के लिए अब दिल्ली सरकार उठाएगी ये कदम

दिल्ली सरकार ने राजधानी में वायु प्रदूषण को कम करने के लिए कई कदम उठाए हैं। अब पूरे साल पानी का छिड़काव करने के लिए स्प्रिंकलर्स और स्माग गन तैनात रहेंगे। साथ ही बॉर्डर एरिया में वाहनों की जांच के लिए एनफोर्समेंट टीम बढ़ाई जाएगी। सभी सड़कों की मरम्मत और साफ-सफाई से संबंधित साप्ताहिक रिपोर्ट देने को भी कहा गया है।

नई दिल्ली। राजधानी में धूल प्रदूषण कम करने के लिए मानसून को छोड़कर अब पूरे साल पानी का छिडकाव करने के लिए स्प्रिंकलर्स और स्माग गन तैनात रहेंगी। साथ ही बार्डर एरिया में वाहनों की जांच के लिए एनफोर्समेंट टीम बढ़ाने के निर्देश भी दिए गए है। सभी सड़कों की मरम्मत और साफ सफाई से संबद्ध साप्ताहिक रिपोर्ट देने को भी कहा गया है। साथ ही सभी संबंधित विभागों से एक सप्ताह में कार्ययोजना देने के लिए भी कहा गया है।

कई विभागों के अधिकारी रहे मौजूद

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की अध्यक्षता में बृहस्पतिवार को दिल्ली सचिवालय में वायु प्रदूषण नियंत्रण को लेकर महत्वपूर्ण बैठक हुई। बैठक के दौरान पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा समेत शहरी विकास विभाग, एमसीडी, डीपीसीसी, डीडीए, ट्रैफिक पुलिस, लोक निर्माण विभाग, राजस्व, डीएसआईआईडीसी सहित तमाम संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद रहे।

बैठक के बाद रेखा गुप्ता ने बताया कि दिल्ली सरकार ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और दूरदर्शी नेतृत्व में वायु प्रदूषण को कम करने के लिए प्रयास तेज कर दिए हैं। "विकसित दिल्ली संकल्प पत्र" के तहत राजधानी को स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए सभी आवश्यक तैयारियां शुरू कर दी गई हैं।

होली पर संभलकर चलाएं गाड़ी, नहीं तो गलती पड़ेगी भारी; ट्रैफिक पुलिस ने दी ये खास सलाह

होली के मौके पर दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने शराब पीकर गाड़ी चलाने तेज रफ्तार लापरवाह ड्राइविंग रेड लाइट जंपिंग ट्रिपल राइडिंग नाबालिगों द्वारा गाड़ी चलाना बिना हेलमेट गाड़ी चलाना बाइक पर स्टंट करने जैसी घटनाओं को रोकने के लिए विशेष यातायात प्रबंध किए हैं। ट्रैफिक उल्लंघनों का पता लगाने और कार्रवाई करने के लिए प्रमुख चौराहों शराब पीने के बिंदुओं और संवेदनशील स्थानों पर विशेष चेकिंग टीमें तैनात की जाएंगी।

नई दिल्ली। होली पर शराब पीकर गाड़ी चलाना और नियम तोड़ने वालों के खिलाफ यातायात पुलिस की पैनी नजर रहेगी। इस दौरान यातायात पुलिस सड़कों पर तो तैनात रहेगी ही, साथ ही सीसीटीवी कैमरों से भी नियम तोड़ने वालों पर निगरानी की जाएगी। अक्सर देखा जाता है कि होली के अवसर पर लोग नशे में वाहन चलाते हैं, जिससे वह खुद और अन्य लोगों के लिए खतरा पैदा करते हैं।

यातायात पुलिस के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त सत्यवीर कटारा के मुताबिक, होली के अवसर पर दिल्ली यातायात पुलिस ने सड़कों पर पैदल चलने वालों और वाहन चालकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए और शराब पीकर गाड़ी चलाने, तेज गति से गाड़ी चलाने, लापरवाह ड्राइविंग, जिग-जैग ड्राइविंग।

रोकने के लिए विशेष यातायात प्रबंध

खतरनाक ड्राइविंग, लाल बत्ती कूदने, ट्रिपल राइडिंग, नाबालिगों द्वारा गाड़ी चलाना, हेलमेट के बिना गाड़ी चलाना, बाइक पर स्टंट करने जैसी घटनाओं को रोकने के लिए विशेष यातायात प्रबंध किए हैं। उन्होंने बताया कि होली के मौके पर विशेष चेकिंग टीमें बनाई गई है।

जश्न के दौरान ट्रैफिक उल्लंघनों का पता लगाने और कार्रवाई करने के लिए प्रमुख चौराहों, शराब पीने के बिंदुओं और संवेदनशील स्थानों पर विशेष चेकिंग टीमें तैनात की जाएंगी। ये टीमें दिल्ली भर के विभिन्न रास्तों और महत्वपूर्ण चौराहों पर पीसीआर वैन और स्थानीय पुलिस टीमों के साथ मिलकर शराब पीकर गाड़ी चलाने, लाल बत्ती कूदने आदि पर निगरानी रखेंगी।

ड्राइविंग लाइसेंस होगा जब्त

मोटर व्हीकल्स एक्ट, 1988 की धारा 206 के तहत, शराब पीकर गाड़ी चलाने, लाल बत्ती कूदने, गाड़ी चलाते हुए मोबाइल फोन का उपयोग करने, खतरनाक ड्राइविंग, तेज गति से गाड़ी चलाने, बाइक पर ट्रिपल राइडिंग, हेलमेट के बिना सवारी करने, और स्टंट करने जैसी घटनाओं के मामलों में, अपराधी का ड्राइविंग लाइसेंस भी जब्त किया जाएगा।

कम से कम तीन महीने के लिए निलंबित कर दिया जाएगा। इसके अलावा, उन वाहन मालिकों के खिलाफ भी कार्रवाई की जाएगी जिनके वाहन नाबालिगों या बिना अनुमति वाले व्यक्तियों द्वारा चलाए जा रहे हैं या जो स्टंट कर रहे हैं।

यातयात पुलिस की ओर से दी गई सलाह

शराब पीकर गाड़ी न चलाएं।

निर्धारित गति सीमा का पालन करें।

दोपहिया वाहनों पर स्टंट न करें।

ट्रैफिक संकेतों का पालन करें।

अन्य वाहनों के साथ रेसिंग या प्रतिस्पर्धा में न शामिल हों।

दोपहिया वाहन चालकों और सवारी करने वालों को हेलमेट पहनना अनिवार्य है और ट्रिपल राइडिंग से बचें।

लापरवाह, खतरनाक या जिग-जैग ड्राइविंग से बचें।

नाबालिगों या बिना अनुमति वाले व्यक्तियों को वाहन न चलाने दें।

इसके अलावा, आम जनता और गाड़ी चालकों से अनुरोध किया गया है कि वे धैर्य रखें, ट्रैफिक नियमों और सड़क अनुशासन का पालन करें, और सभी चौराहों पर तैनात ट्रैफिक कर्मियों के निर्देशों का पालन करें।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर गाजीपुर फ्लाईओवर के मरम्मत कार्य के चलते वाहन चालकों को करना पड़ रहा भारी जाम का सामना

पूर्वी दिल्ली में दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर गाजीपुर फ्लाईओवर के मरम्मत कार्य के चलते वाहन चालकों को भारी जाम का सामना करना पड़ रहा है। त्योहार के समय भी लोग जाम से जूझ रहे हैं। 25 जून तक मरम्मत कार्य चलेगा। आइपी एक्सटेंशन से लेकर गाजीपुर तक भीषण जाम लगा रहता है। वाहन चालकों का कहना है कि एनएचएआई को त्योहार के बाद कार्य करवाना चाहिए था।

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली। दिल्ली मेरठ एक्सप्रेसवे पर गाजीपुर के पास फ्लाईओवर पर चल रहे एक्सपेंशन ज्वाइंट के मरम्मत कार्य के चलते वाहन चालकों को भीषण जाम का सामना करना पड़ रहा है। बृहस्तपिवार को होलिका दहन पर भी वाहन चालकों को भीषण जाम से जूझना पड़ा।

त्योहार के समय मरम्मत कार्य से वाहन चालकों में नाराजगी है। त्योहार की वजह से एक्सप्रेसवे पर वाहनों का दबाव अधिक है। जाम के कारण लोग समय पर अपने गंतव्य तक नहीं पहुंच पा रहे हैं। 25 जून तक मरम्मत कार्य चलेगा, ऐसे में वाहन चालकों को तब तक जाम का सामना करना पड़ेगा।

आइपी एक्सटेंशन से लेकर गाजीपुर तक भीषण जाम रहा

बृहस्तपिवार रात को दिल्ली से गाजियाबाद जाने वाले मार्ग पर आइपी एक्सटेंशन से लेकर गाजीपुर तक भीषण जाम रहा। जाम में फंसे लोगों ने कहा कि एनएचएआई को त्योहार के बाद कार्य करवाना चाहिए था। जाम से निपटने की भी व्यापक व्यवस्था एनएचएआई व यातायात पुलिस ने नहीं की हुई है, जिसका खामियाजा वाहन चालकों को भुगतना पड़ रहा है।

पीकआवर में एक्सप्रेसवे पर वाहनों का दबाव काफी अधिक रहता है, मरम्मत कार्य के चलते गाजीपुर से लेकर समसपुर जागीर तक जाम लग रहा है। पिछले 11 दिन से मरम्मत कार्य चल रहा है, ऐसा कोई दिन नहीं जब वाहन चालकों ने जाम का सामना न किया हो।

सात वर्ष बाद किया जा रहा है मरम्मत कार्य

एनएचएआइ के परियोजना निदेशक अरविंद कुमार ने कहा कि सात वर्ष बाद गाजीपुर में फ्लाईओवर के एक्सपेंशन ज्वाइंट बदलने का काम किया जा रहा है। हर साल जरूरत पड़ने पर एनएच-नौ व दिल्ली मेरठ एक्सप्रेसवे पर कोई न कोई मरम्मत कार्य चलता रहता है।

उनसे पूछा गया कि त्योहार के समय वाहनों का दबाव अधिक रहता है तो इस वक्त मरम्मत क्यों करवाई जा रही है। इसपर उन्होंने कहा कि सर्दियों में एक्सपेंशन सिकुड़ जाते हैं और गर्मियों में फैल जाते हैं। इसलिए जरूरत पड़ने पर गर्मियों से पहले इनकी मरम्मत की जाती है, ताकि वाहन चालकों को वाहन चलाते सयम कोई परेशानी पेश न आए।

हर रोज जाम का सामना करना पड़ रहा है। ऑफिस जाने में करीब एक घंटे की देरी हो जाती है। जाम खुलवाने के लिए एक्सप्रेसवे पर कोई पुलिसकर्मी नहीं होता।

- रमेश झा, वाहन चालक

मंडावली से गाजीपुर जाने में 40 मिनट का समय लग रहा है। जबकि दस मिनट का रास्ता है। मरम्मत कार्य कर रहे हैं तो कम से कम वाहन चालकों की परेशानी का भी ध्यान रखना चाहिए।

-फारुख, वाहन चालक

भक्त प्रहलाद की दस रोचक बातें

होलिका दहन का त्योहार भक्त प्रहलाद की कथा से जुड़ा हुआ है। हिरण्यकश्यप की बहन होलिका भक्त प्रहलाद को अपनी गोद में लेकर अग्नि कुंड में बैठ गई थी लेकिन होलिका अग्नि में भस्म हो गई और भक्त प्रहलाद बच गए थे। जीवन के अंत में भक्त प्रहलाद ने मोक्ष प्राप्त करके वैकुंठ में निवास किया। आइए जानते हैं उनके संबंध में 10 खास बातें

1. भक्त प्रहलाद के माता पिता भक्त प्रहलाद के पिता का नाम हिरण्यकश्यप और दादा का नाम कश्यप ऋषि और दादी का नाम दिति था। उनकी माता का नाम कयाधु था।

2. मां के कारण बनें हरि भक्त माता श्री हरि विष्णु की भक्त थीं। कयाधु भक्त प्रहलाद की मां ने अपने पति हिरण्यकश्यप से होशियारी से विष्णु का 108 बार नाम जपवा लिया था। और इसके प्रभाव से ही कयाधु, ने प्रहलाद जैसे विष्णुभक्त को जन्म दिया।

3. भक्त प्रहलाद के गुरु भक्त प्रह्लाद के ब्रह्मा के मानस पुत्र श्रीविष्णु के परम्भक्त नारदमुनिजी गुरु थे। नारद के अलावा दत्तात्रेय, शंड और मर्क आदि कई महान ऋषियों ने भी प्रहलाद को शिक्षित और संस्कारवान बनाया था।

4. विरोचन के पिता और बलि के दादा भक्त प्रहलाद की पत्नि का नाम धृति था जिससे महान पुत्र विरोचन का जन्म हुआ। इसके अलावा आयुष्मान, शिवि और वाष्कल भी उनके पुत्र थे। विरोचन का विवाह बिशालाक्षी से हुआ था। जिससे महाबली और महादानी राजा बलि उत्पन्न हुआ, जो महाबलीपुरम के राजा बने। इन बालि से ही श्री विष्णु ने वामन बनकर तीन पग धरती मांग ली थी। प्रहलाद के महान पुत्र विरोचन से एक नई संक्रांति का सूत्रपात हुआ था। इंद्र से जहां आत्म संस्कृति का विकास हुआ वहीं विरोचन से भोग संस्कृति जन्मी। इसके पीछे एक कथा भी चलित है।

5. भक्त प्रहलाद की बुआ प्रहलाद की बुआ होलिका जहां आग में जलकर मर गई थी वहीं दूसरी बुआ सिंहिका को हनुमानजी ने लंका जाते वक्त रास्ते में मार दिया था।

6. भक्त प्रहलाद के भाई और चाचा भक्त प्रहलाद के तीन भाई थे- अनुहल्लाद, हल्लाद और संहल्लाद। हरिश्यकश्यप का भाई हिरण्याक्ष उनका चाचा था जिसे श्रीहरि विष्णु ने वराह रूप धारण करके मार दिया था।

7. भक्त प्रहलाद दैत्य के कुल के अन्य लोग भक्त प्रहलाद दैत्य कुल के होने के बावजूद विष्णु भक्त थे। उनकी कयाधु के अलावा सभी परिजन हिरण्यकश्यप और बुआ होलिका तथा अन्य आसुरी स्वभाव लोग थे। जिनमें दत्तात्रेय, शंड और मर्क, आयुष्मान, शिवि, विरोचन, वाष्कल, और यशकीर्ति आदि विष्णुभक्त भी थे। जिनमें प्रह्लाद सबसे महान थे।

8. असुरों के महान राजा भक्त प्रहलाद भक्त प्रहलाद श्रीहरि विष्णु के परम भक्त होने के साथ ही महाज्ञानी और पंडित थे। भगवान नृसिंह के आशीर्वाद और दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य के मार्गदर्शन के चलते वे असुरों के महान राजा बन गए थे।

9. भक्त प्रहलाद का जन्म स्थान पौराणिक मान्यताओं के अनुसार श्री विष्णु भक्त प्रहलाद का जन्म कृष्ण नगरी मथुरा के एक गांव फालैन में हुआ था। यहां पर भक्त प्रहलाद तथा भगवान विष्णु की पूजा की जाती है।

10. पिता द्वारा वध की योजना भक्त प्रहलाद को श्रीहरि विष्णु का भक्त होने के कारण उनके पिता हिरण्यकश्यप ने उनका हर तरह के वध करने का प्रयास किया लेकिन श्रीहरि विष्णु की कृपा से भक्त प्रहलाद को नहीं मारा जा सका तब प्रहलाद की बुआ होलिका ने भक्त प्रहलाद को गोदी में लेकर जलती आग में बैठने के लिए कहा, क्योंकि उसका ब्रह्माजी से वरदान प्राप्त था कि वह अग्नि से जलकर नहीं मर सकती थी। परंतु उसने उस वरदान का दुरुपयोग किया इसलिए होलिका आग में जलकर मर गई और भक्त प्रहलाद बच गए। बाद में श्रीहरि ने नृसिंह अवतार लेकर हरिश्यकश्यप का वध करके भक्त प्रहलाद को असुरों का राजा बना दिया।

भावुक किंतु उदार और शेर दिल होते हैं सिंह राशि के जातक ..

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक(इंजी .)

नक्षत्र मंडल में जब चंद्रमा का गोचर मघा नक्षत्र से लेकर उतरा फाल्गुनी के प्रथम चरण में होता है तब चंद्रमा सिंह राशि में भ्रमणगत रहता है। सिंह पुरुष जाति की,स्थिर संज्ञक,अग्नि तत्व वाली,पित प्रकृति की पीत वर्ण,उष्ण स्वभाव वाली,पूर्व दिशा की स्वामी राशि है। इस राशि के लोगो पर सूर्य,गुरु,बुध ग्रह का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। काल पुरुष की कुंडली में हृदय का विचार इस राशि के द्वारा किया जाता है।

गुण और स्वभाव: सिंह राशि के जातक औसत कद के आकर्षक रंग रूप वाले प्रभावशाली व्यक्तित्व के होते हैं। इनका प्राकृतिक स्वभाव स्वतंत्र और उदार प्रेमी होता है। अंडाकार चेहरा लिए हुए कुछ विचार शील से जान पड़ते हैं। सिंह राशि के जातक भावुक प्रवृत्ति के होते है। यह काफी ईमानदार होते है लेकिन जीवन में इनके साथ विश्वासघात अधिक देखने को मिलता है। सिंह राशि के लोग बाहरी तौर पर शांत किंतु जब कोई इन्हे उकसा दे तो शेर की तरह हिंसक प्रवृत्ति के हो जाते हैं। यह सत्य प्रिय ,जिम्मेदार, क्षमाशील,ज्ञानी होते हैं। सिंह राशि के जातकों को संगीत से बड़ा लगाव रहता है। कभी कभी यह घमंडी, हठी,आडंबरपूर्ण,लापरवाह तथा आलसी भी देखने को मिलते है।

कैरियर: सिंह राशि के जातक शिक्षक, सरकारी नौकरी,कोयला, सोना,पत्थर आदि कुशल के व्यापारी, सेना, इंजीनियर, वैज्ञानिक, कलाकार, नाट्यकर, नेता, सांसद, विधायक, न्यायाधीश, कंप्यूटर इंजीनियर, अभिनेता/अभिनेत्री,खिलाड़ी, सरकारी नौकरी आदि में कैरियर बनाकर सफलता प्राप्त करते हैं।

रोग: सिंह राशि के लोगो को हृदय के रोग,डायरिया,रक्तविकार, गले के रोग ,मूर्छा,आंखो के रोग,पाचन संबंधी समस्या,अतिसार, धड़कन बढ़ना आदि रोगों से जूझना होता है।

भाग्यशाली दिन : रवि, मंगल,बुध और गुरु

भाग्यशाली रंग : लाल,पीला और सुनहरा

भाग्यशाली अंक :1,4,5,9

शुभ रत्न : माणिक्य

उपाय: सिंह राशि के जातक को रविवार का व्रत तथा भगवान सूर्य और विष्णु जी की उपासना करना अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है। प्रत्येक रविवार भगवान सूर्य को गुड़ का भोग लगाएं और गायत्री मंत्र का जाप करें।

होलिकोत्सव

होलिका-दहन के अनुपम त्यौहार की सभी को बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं। मंगल हो।_

कभी दास-दासी खरीदने-बेचने की प्रथा रही है, पर अब वैसा नहीं चल सकता। *जब मजदूरों/कैदियों तक के साथ आदान-प्रदान, मर्यादा और सद्भावना की नीति बरती जाती है तो यह नीति स्त्री-पुरुष में भी लागू होती है। यह वह नीति है जिसे अपनाकर पारस्परिक हितों की अधिक सद्भावनापूर्वक आपूर्ति की जा सकती है। ₹नर₹ और ₹नारी₹ के बीच अधिक सघनता और सहकारिता की अपेक्षा की जाती है । परंतु यह प्रयोजन स्वामी और सेवक का रिश्ता पूरा नहीं कर सकता। पुरुष अधिपति और नारी सम्पत्ति की यह मान्यता, एक का अहंकार बढ़ाती और दूसरे को दीनता के गर्त में धकेलती है। आधिपत्य की प्रवृत्ति से दोनों का ही पतन और अहित होता है। अभी हमारे एक माननीय सदस्य ने यह बात उठाई कि 'तलाक के उपरांत यदि स्त्री को गुजारा-भत्ता देने का नियम समाप्त कर दिया जाये तो 90% तलाक रूक जायेंगें।' पुरूष स्वभावगत विविधता का अनुगमन करता है। तलाक के लिए 90% मामले पुरूष के बाहरी स्त्री से संबंध के कारण प्रतिफलित होतें हैं। यदि उनको गुजारा-भत्ता भुगतान से मुक्त रखा जाये तो यहां हर दूसरे-तीसरे महीने/साल में तलाक होने लगेंगें और औसतन तलाक-संख्या अपेक्षाकृत बहुत अधिक बढ़ जायेगी। अभी भी सामान्यतः स्त्री अपने घर-परिवार की बदनामी को सरे-आम 'न' करने की अपनी प्रवृत्ति के कारण, कोर्ट के दरवाजे नहीं खटकाती। और यह भी सच है कि कुछेक स्त्रियां भी तलाक को मुद्दा बनाकर पुरुष का शोषण कर रहीं हैं। लेकिन कुछ/अल्प/अधूरे प्रतिशत आंकड़ों को आधार बनाकर हम पूर्ण निर्णय/सत्य को प्राप्त नहीं कर सकते। वास्तव में जैसे पालतू पशुओं पर आधिपत्य लाभ उठाया जाता है, ऐसा ही प्रयोग मनुष्यों पर सफल नहीं हो सकता। मनुष्य में स्वतंत्र चेतना है, जो स्नेह, सम्मान पाने और सहयोग-सद्भाव देने के आदान-प्रदान से कम में संतुष्ट नहीं रह सकता। ध्यान रहे कि मित्रता/साहचर्य/सहयोग की नीति दोनों के लिए ही आवश्यक है। केवल एक की ही धैर्यता/सहनशीलता काफी नहीं है। स्नेह, सम्मान और सहयोग की समानता के आधार पर आदान-प्रदान करने की नीति अपनाकर ही उभ्यपक्षीय सद्भाव और सहकार बढ़ सकता है । "नर" और "नारी" को सघनता अपेक्षित हो तो उनको भी इसी आदर्श/तथ्य को अपनाकर चलना होगा।

सभी के जीवन में बहुत सारी खुशियॉ और रंग भरता है होली का पर्व

होली का त्यौहार भारत में होली का पर्व सभी के जीवन में बहुत सारी खुशियॉ और रंग भरता है, लोगों के जीवन को रंगीन बनाने के कारण इसे आमतौर पर 'रंग महोत्सव' कहा गया है। यह लोगों के बीच एकता और प्यार लाता है। इसे ₹प्यार का त्यौहार₹ भी कहा जाता है। यह एक पारंपरिक और सांस्कृतिक हिंदू त्यौहार है, जो प्राचीन समय से पुरानी पीढियों द्वारा मनाया जाता रहा है और प्रत्येक वर्ष नयी पीढ़ी द्वारा इसका अनुकरण किया जा रहा है। यह एक प्यार और रंगों का त्यौहार है जो प्रत्येक वर्ष हिन्दू धर्म के लोगों द्वारा आनन्द और उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह मन को तरोताज़ा करने का त्यौहार है, जो न केवल मन को तरोताजा करता है बल्कि रिश्तों को भी करता है। यह ऐसा त्यौहार है जिसे लोग अपने परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों के साथ प्यार और स्नेह वितरित करके मनातें हैं जो उनके रिश्तों को भी मजबूती प्रदान करता हैं। यह एक ऐसा त्यौहार हैं जो लोगों को उनके पुराने बुरे व्यवहार को भुला कर रिश्तों की एक अटूट डोर में बांधता हैं। इस दिन लोग लाल रंग और लाल गुलाल का प्रयोग करते हैं जो केवल लाल रंग ही नही है बल्कि एक-दूसरे से प्यार और स्नेह का भी प्रतीक हैं। वास्तव में यह न केवल लोगों को बाहर से रंगता हैं, बल्कि उनकी आत्मा को भी विभिन्न रंगों में रंग देता हैं। इसे साधारण त्यौहार कहना उचित नही है क्योंकि यह बिना रंगे व्यक्तियों को रंग देता हैं। यह लोगों के व्यस्त जीवन की सामान्य दिनचर्या में एक अल्पविराम लाता हैं। यह भारतीय मूल के हिंदुओं द्वारा हर जगह मनाया जाता है हालांकि, यह मुख्य रूप से भारत और नेपाल के लोगों द्वारा मनाया जाता है। यह एक त्यौहारी रस्म है, जिसमें सब एक साथ होलिका के आलाव को जलाते हैं, गाना गाते हैं और नाचते है, इस मिथक के साथ कि सभी बुरी आदतें और बुरी शक्तियां होलिका के साथ जल गयी और नई ऊर्जा और अच्छी आदतों से अपने जीवन में उपलब्धियों को प्राप्त करेंगें। अगली सुबह उनके लिये बहुत खुशियाँ लेकर आती है जिसे वे पूरे दिन रंग खेलकर व्यक्त करते हैं। होली खेलने के लिए वे खुले सड़क, पार्क और इमारतों में पानी की बंदूकों (पिचकारी) और गुब्बारे का उपयोग करते है। कुछ संगीत वाद्ययंत्र गीत गाने और नृत्य करने के लिए इस्तेमाल किये जाते हैं। वे अपना पूरा दिन रंग, गायन, नृत्य, स्वादिष्ट चीजें खाने, पीने, एक दूसरे के गले मिलने, दोस्तों के घर पर मिलने और बहुत सारी गतिविधियों में व्यतीत करते हैं।

होलिका दहन तिथि एवं मुहूर्त- 2025 में होलिका दहन 13 मार्च, गुरुवार को है ।शुभ मुहूर्त में होलिका दहन रात्रि 11:26 बजे (13 मार्च) से शुरू होकर 12:29 बजे (14 मार्च) तक रहेगा। यानि कुल 1 घंटा 4 मिनट का समय रहेगा। इसके अगले दिन रंगों वाली होली का त्योहार 14 मार्च, 2025 (शुक्रवार) को मनाया जाएगा। पूर्णिमा तिथि (प्रारम्भ) 13 मार्च, 2025 की सुबह 10:35 बजे से शुरू हो जाएगी।

होलिका दहन तिथि - 13 मार्च 2025, (गुरुवार)

होलिका दहन मुहूर्त - 13 मार्च रात्रि 11:26 बजे से 14 मार्च मध्य रात्रि 12:29 बजे तक।

कुल समय अवधि - 1 घंटा 04 मिनट।

रंग वाली होली : 14 मार्च 2025 (शुक्रवार) को मनाई जाएगी।

पूर्णिमा तिथि (प्रारंभ) - प्रातः 10:35, 13 मार्च 2025

पूर्णिमा तिथि (समाप्त) - दोपहर 12:23, 14 मार्च 2025

होली कब मनाई जाती हैं ? हिंदू कैलेंडर के अनुसार, होली महोत्सव फाल्गुन पूर्णिमा में मार्च (या कभी-कभी फरवरी के महीने में) के महीने में वार्षिक आधार पर मनाया जाता है। यह त्यौहार बुराई की सत्ता पर अच्छाई की विजय का भी संकेत है। यह ऐसा त्यौहार है जब लोग एक-दूसरे से मिलते हैं, हँसते हैं, समस्याओं को भूल जाते हैं और एक-दूसरे को माफ करके रिश्तों का पुनरुत्थान करते हैं। यह चंद्र मास, फाल्गुन की पूर्णिमा के अंतिम दिन, गर्मी के मौसम की शुरुआत और सर्दियों के मौसम के अंत में, बहुत खुशी के साथ मनाया जाता है। यह बहुत सारी मस्ती और उल्लास की गतिविधियों का त्यौहार है जो लोगों को एक ही स्थान पर बाँधता है। हर किसी के चेहरे पर एक सुन्दर मुस्कान होती है और अपनी खुशी को दिखाने के लिए नए कपड़े पहनते हैं।

होली क्यों मनायी जाती हैं ? हर साल होली के त्यौहार को मनाने के कई कारण हैं। यह रंग, स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ, एकता और प्रेम का भव्य उत्सव है। परंपरागत रूप से यह बुराई की सत्ता पर या बुराई पर अच्छाई की सफलता के रुप में मनाया जाता है। यह ₹फगवाह₹ के रूप में नामित किया गया है, क्योंकि यह हिन्दी महीने, फाल्गुन में मनाया जाता है। होली शब्द ₹होला₹ शब्द से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है नई और अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए भगवान की पूजा। होली के त्योहार पर होलिका दहन इंगित करता है कि, जो भगवान के प्रिय लोग है उन्हें पौराणिक चरित्र प्रहलाद की तरह बचा लिया जाएगा, जबकि जो भगवान के लोगों से तंग आ चुके है उन्हें एक दिन पौराणिक चरित्र होलिका की तरह दंडित किया जाएगा। होली का त्यौहार मनाने के पीछे (भारत में पौराणिक कहानी के) कई ऐतिहासिक महत्व और किंवदंतियां रही हैं। यह कई सालों से मनाया जाने वाला, सबसे पुराने हिंदू त्यौहारों में से एक है। प्राचीन भारतीय मंदिरों की दीवारों पर होली उत्सव से संबंधित विभिन्न अवशेष पाये गये हैं। अहमदनगर चित्रों और मेवाड़ चित्रों में 16वीं सदी के मध्यकालीन चित्रों की मौजूदा किस्में हैं जो प्राचीन समय के दौरान होली समारोह का प्रतिनिधित्व करती हैं। होली का त्योहार प्रत्येक राज्य में अलग-अलग है जैसे देश के कई राज्यों में, होली महोत्सव लगातार 3 दिन के लिए मनाया जाता है जबकि, अन्य विभिन्न राज्यों में यह 1 दिन का त्यौहार है। लोग पहला दिन होली (पूर्णिमा के दिन या होली पूर्णिमा), घर के अन्य सदस्यों पर रंग का पाउडर बरसाकर मनाते हैं। वे एक थाली में कुछ रंग का पाउडर और पानी से

भरे पीतल के बर्तन डालने से समारोह शुरू करते हैं। त्यौहार का दूसरा दिन ₹पुनो₹ कहा गया इसका अर्थ है कि त्यौहार का मुख्य दिन, जब लोग मुहूर्त के अनुसार होलिका का अलाव जलाते है। यह प्रक्रिया बुराई के ऊपर अच्छाई की विजय के उपलक्ष्य में होलिका और प्रहलाद के प्राचीन इतिहास के मिथक के रुप मनाया जाता है। तीसरे दिन का त्योहार ₹पर्व₹ कहलाता है अर्थात त्योहार का अंतिम दिन, जब लोग अपने घरों से बाहर आते है, एक-दूसरे को गले लगाते है, माथे पर गुलाल लगाते है, रंगों से खेलते है, नाचते है, गाते है, एक-दूसरे से मिलते है, स्वादिष्ट व्यंजन खाते हैं और बहुत सारी गतिविधियां करते है। रीति-रिवाजों और परंपराओं के अनुसार होली उत्तर प्रदेश में 'लट्ठमार होली' के रूप में, असम में ₹फगवाह₹ या ₹देओल₹, बंगाल में 'ढोल पूर्णिमा₹, पश्चिम बंगाल में ''ढोल जात्रा₹, और नेपाल आदि में ₹फागू₹ नामों से लोकप्रिय है।

(1) मथुरा और वृंदावन में होली होली महोत्सव मथुरा और वृंदावन में एक बहुत प्रसिद्ध त्यौहार है। भारत के अन्य क्षेत्रों में रहने वाले कुछ अति उत्साही लोग मथुरा और वृंदावन में विशेष रूप से होली उत्सव को देखने के लिए इकट्ठा होते हैं। मथुरा और वृंदावन महान भूमि हैं जहां, भगवान श्रीकृष्ण ने जन्म लिया और बहुत सारी गतिविधियां की। होली उनमें से एक है। इतिहास के अनुसार, यह माना जाता है कि होली त्योहारोत्सव राधा और श्रीकृष्ण के समय से आरम्भ किया गया था। राधा और कृष्ण शैली में होली उत्सव के लिए दोनों स्थान बहुत प्रसिद्ध हैं। मथुरा में लोग मजाक उल्लास की बहुत सारी गतिविधियों के साथ होली का जश्न मनाते है। होली का त्योहार उनके लिए प्रेम और भक्ति का महत्व रखता है, जहां अनुभव करने और देखने के लिए बहुत सारी प्रेम लीलाएँ मिलती है। भारत के हर कोने से लोगों की एक बड़ी भीड़ के साथ यह उत्सव पूरे एक सप्ताह तक चलता है। वृंदावन में बांके बिहारी मंदिर है जहां यह भव्य समारोह मनाया जाता है। मथुरा के पास होली का जश्न मनाने के लिए एक और जगह है गुलाल-कुंड जो की ब्रज में है, यह गोवर्धन पर्वत के पास एक झील है। होली के त्यौहार का आनंद लेने के लिये बड़े स्तर पर एक कृष्ण-लीला नाटक का आयोजन किया जाता है।

(2) बरसाने में होली या लठमार होली बरसाना में लोग हर साल लट्ठमार होली मनाते हैं, जो बहुत ही रोचक है। निकटतम क्षेत्रों से लोग बरसाने और नंदगांव में होली उत्सव को देखने के लिए आते हैं। बरसाना उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में एक शहर है। लट्ठमार होली, छड़ी के साथ एक होली उत्सव है जिसमें महिलाएँ छड़ी से पुरुषों को मारती है। यह माना जाता है कि, छोटे कृष्ण होली के दिन राधा को देखने के लिए बरसाने आये थे, जहां उन्होंने उन्हें और उनकी सखियों को छेड़ा और बदले में वह भी उनके द्वारा पीछा किये गये थे। तब से, बरसाने और नंदगांव में लोग छड़ियों के प्रयोग से होली मनाते हैं जो लट्ठमार होली कही जाती है। आसपास के क्षेत्रों से हजारों लोग बरसाने में राधा रानी मंदिर में लट्ठमार होली का जश्न मनाने के लिए एक साथ मिलते है। वे होली के गीत भी गाते हैं और श्री राधे और श्री कृष्ण का बयान करते है। प्रत्येक वर्ष नंदगांव के गोप या चरवाहें बरसाने की गोपियों या महिला चरवाहों के साथ होली खेलते है और बरसाने के गोप या चरवाहें नंदगांव की गोपियों या महिला चरवाहों के साथ होली खेलते है। कुछ सामूहिक गीत पुरुषों द्वारा महिलाओं का ध्यान आकर्षित करने के लिए गाये जाते है। बदले में महिलाएँ आक्रामक हो जाती हैं और लाठी के साथ पुरुषों को मारती है। यहाँ पर कोल्ड ड्रिंक या भांग के रूप में ठंडई पीने की परंपरा है।

होली महोत्सव का इतिहास और महत्व। होली का त्यौहार अपनी सांस्कृतिक और पारंपरिक मान्यताओं की वजह से बहुत प्राचीन समय से मनाया जा रहा है। इसका उल्लेख भारत की पवित्र पुस्तकों जैसे; पुराण, दसकुमार चरित, संस्कृत नाटक, रत्नावली और भी बहुत सारी पुस्तकों में किया गया है। होली के इस अनुष्ठान पर लोग सड़कों, पार्कों, सामुदायिक केंद्र, और मंदिरों के आसपास के क्षेत्रों में होलिका दहन की रस्म के लिए लकड़ी और अन्य ज्वलनशील सामग्री के ढेर बनाने शुरू कर देते है। लोग घर पर साफ सफाई, धुलाई, गुझिया, मिठाई, मठ्ठी, मालपुआ, चिप्स आदि और बहुत सारी चीजों की तैयारी शुरू कर देते है। होली पूरे भारत में हिंदुओं के लिए एक बहुत बड़ा त्यौहार है, जो ईसा मसीह से भी पहले कई सदियों से मौजूद है। इससे पहले होली का त्यौहार विवाहित महिलाओं द्वारा पूर्णिमा की पूजा द्वारा उनके परिवार के अच्छे के लिये मनाया जाता था। प्राचीन भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार, इस त्यौहार का जश्न मनाने के पीछे कई किंवदंतियां रही हैं। होली हिंदुओं के लिए एक सांस्कृतिक, धार्मिक और पारंपरिक त्यौहार है। होली शब्द ₹होलिका₹ से उत्पन्न है। होली का त्यौहार विशेष रूप से भारत के लोगों द्वारा मनाया जाता है जिसके पीछे बड़ा कारण है। होली के क्षेत्र वार उत्सव के अनुसार, इस त्यौहार के अपने स्वयं के पौराणिक महत्व है, जिसमें सांस्कृतिक, धार्मिक और जैविक महत्व शामिल है। होली महोत्सव का पौराणिक महत्व ऐतिहासिक किंवदंतियों के अंतर्गत आता है जो इस त्यौहार के साथ जुड़ी है।

पौराणिक महत्व। होली उत्सव का पहला पौराणिक महत्व प्रहलाद, होलिका और हिरण्याकश्यप की कथा है। बहुत समय पहले, हिरण्याकश्यप नामक एक राक्षस राजा था। उसकी बहन का नाम होलिका था और पुत्र प्रहलाद था। बहुत वर्षों तक तप करने के बाद, उसे भगवान ब्रह्मा द्वारा पृथ्वी पर शक्तिशाली आदमी होने का वरदान प्राप्त हुआ। उन शक्तियों ने उसे अंहकारी बना दिया, उसे लगा कि केवल वह ही अलौकिक शक्तियों वाला भगवान है। वह तो उसने हर किसी से खुद को भगवान के रूप में उसे पूजा करने की मांग शुरू कर दी। लोग बहुत कमजोर और डरे हुए थे और बहुत आसानी से उसका अनुकरण करना शुरू कर दिया। हालांकि उसका बेटा जिसका नाम प्रहलाद था, अपने ही पिता के फैसले से असहमत था। प्रहलाद बचपन से ही बहुत धार्मिक व्यक्ति था, और हमेशा भगवान विष्णु को समर्पित रहता था। प्रहलाद का इस तरह के व्यवहार उसके पिता, हिरण्याकश्यप को बिल्कुल पसन्द नहीं था। उसने प्रहलाद को कभी अपना पुत्र नहीं माना और उसे क्रूरता से दण्ड देना शुरु कर दिया। हालांकि, प्रहलाद हर बार आश्चर्यजनक रुप से कुछ प्राकृतिक शक्तियों द्वारा बचाया गया। अंत में, वह अपने बेटे के साथ तंग आ गया और कुछ मदद पाने के लिए अपनी बहन होलिका को बुलाया। उसने अपने भतीजे को गोद में रख कर आग में बैठने की एक योजना बनाई, क्योंकि उसे आग से कभी भी नुकसान न होने का वरदान प्राप्त था। उसने आग से रक्षा करने के लिए एक विशेष शाल में खुद को लपेटा और प्रहलाद के साथ विशाल आग में बैठ गयी। कुछ समय के बाद जब आग बढ़ी और भयानक हुई उसकी शाल प्रहलाद को लपेटने के लिए दूर उड़ी। वह जल गयी और प्रहलाद को उसके भगवान विष्णु द्वारा बचा लिया गया। हिरण्याकश्यप बहुत गुस्से में था और अपने बेटे को मारने के लिए एक और चाल सोचना शुरू कर दिया। वह दिन जब प्रहलाद को बचाया गया था होलिका दहन और होली को बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक के रूप में मनाना शुरू कर दिया। होली महोत्सव का एक अन्य पौराणिक महत्व राधा और कृष्ण की कथा है। ब्रज क्षेत्र में होली के त्यौहार को मनाने के पीछे राधा और कृष्ण का दिव्य प्रेम है। ब्रज में लोग होली दिव्य प्रेम के उपलक्ष्य को प्यार के एक त्योहार के रूप में मनाते हैं। इस दिन, लोग गहरे नीले रंग की त्वचा वाले छोटे कृष्ण को और गोरी त्वचा वाली राधा को गोपियों सहित चरित्रों को सजाते है। भगवान कृष्ण और अन्य गोपियों के चहरे पर रंग लगाने जाते थे। दक्षिणी भारतीय क्षेत्रों में होली के अन्य किंवदंती, भगवान शिव और कामदेव की कथा है। लोग होली का त्यौहार पूरी दुनिया को बचाने के लिये भगवान शिव के ध्यान भंग करने के भगवान कामदेव के बलिदान के उपलक्ष्य में मनाते है। होली का त्यौहार मनाने के पीछे ऑगरेस धुंन्धी की गाथा प्रचलित है। रघु के साम्राज्य में ऑगरेस धुंन्धी बच्चों को परेशान करता था। होली के दिन वह बच्चों के गुर से खुद दूर भाग गया।

सांस्कृतिक महत्व- होली महोत्सव मनाने के पीछे लोगों की एक मजबूत सांस्कृतिक धारणा है। इस त्योहार का जश्न मनाने के पीछे विविध गाथाएं लोगों का बुराई पर सच्चाई की शक्ति की जीत पर पूर्ण विश्वास है। लोगों को विश्वास है कि परमात्मा हमेशा अपने प्रियजनों और सच्चे भक्तों को अपने बड़े हाथों में रखते हैं। वे उन्हें बुरी शक्तियों से कभी भी हानि नहीं पहुँचने देते। यहां तक कि लोगों को अपने सभी पापों और समस्याओं को जलाने के लिए होलिका दहन के दौरान होलिका की पूजा करते हैं और बदले में बहुत खुशी और अच्छे स्वास्थ्य की कामना करते हैं। होली महोत्सव मनाने के पीछे एक और सांस्कृतिक धारणा है, जब लोग अपने घर के लिए खेतों से नई फसल लाते है तो अपनी खुशी और आनन्द को व्यक्त करने के लिए होली का त्यौहार मनाते हैं।

सामाजिक महत्व- होली के त्यौहार का अपने आप में सामाजिक महत्व है, यह समाज में रहने वाले लोगों के लिए बहुत खुशी लाता है। यह सभी समस्याओं को दूर करके लोगों को बहुत करीब लाता है उनके बंधन को मजबूती प्रदान करता है। यह त्यौहार दुश्मनों को आजीवन दोस्तों के रूप में बदलता है साथ ही उम्र, जाति और धर्म के सभी भेदभावो को हटा देता है। एक दूसरे के लिए अपने प्यार और स्नेह दिखाने के लिए, वे अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के लिए उपहार, मिठाई और बधाई कार्ड देते है। यह त्यौहार संबंधों को पुनः जीवित करने और मजबूती के टॉनिक के रूप में कार्य करता है, जो एक-दूसरे को महान भावनात्मक बंधन में बांधता है।

जैविक महत्व- होली का त्यौहार अपने आप में स्वःप्रमाणित जैविक महत्व रखता है। यह हमारे शरीर और मन पर बहुत लाभकारी प्रभाव डालता है, यह बहुत आनन्द और मस्ती लाता है। होली उत्सव का समय वैज्ञानिक रूप से सही होने का अनुमान है। यह गर्मी के मौसम की शुरुआत और सर्दियों के मौसम के अंत में मनाया जाता है जब लोग स्वाभाविक रूप से आलसी और थका हुआ महसूस करते है। तो इस समय होली शरीर की शिथिलता को प्रतिक्रिया करने के लिए बहुत सी गतिविधियॉ और खुशी लाती है। यह रंग खेलने, स्वादिष्ट व्यंजन खाने और परिवार के बड़ों से आशीर्वाद लेने से शरीर को बेहतर महसूस कराती है। होली के त्यौहार पर होलिका दहन की परंपरा है। वैज्ञानिक रूप से यह वातावरण को सुरक्षित और स्वच्छ बनाती है क्योंकि सर्दियां और वसंत का मौसम के बैक्टीरियाओं के विकास के लिए आवश्यक वातावरण प्रदान करता है। पूरे देश में समाज के विभिन्न स्थानों पर होलिका दहन की प्रक्रिया से वातावरण का तापमान 145 डिग्री फारेनहाइट तक बढ़ जाता है जो बैक्टीरिया और अन्य हानिकारक कीटों को मारता है। उसी समय लोग होलिका के चारों ओर एक घेरा बनाते है जो परिक्रमा के रूप में जाना जाता है जिससे उनके शरीर के बैक्टीरिया को मारने में मदद करता है। पूरी तरह से होलिका के जल जाने के बाद, लोग चंदन और नए आम के पत्तों को उसकी राख (जो कि विभूति के रूप में कहा जाता है) के साथ मिश्रण को अपने माथे पर लगाते हैं, जो उनके स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में मदद करता है। इस पर्व पर रंग से खेलने के भी स्वयं के लाभ और महत्व है। यह शरीर और मन की स्वस्थता को बढ़ाता है। घर के वातावरण में कुछ सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह करने और साथ ही मकड़ियों, मच्छरों को या दूसरों को कीड़ों से छुटकारा पाने के लिए घरों को साफ और स्वच्छ में बनाने की एक परंपरा है।

दिल्ली सरकार आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना लागू करने को तैयार

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (AB-PMJAY) को लागू करने के लिए तैयार है। 18 मार्च को राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। बताया जा रहा है कि वर्ष 2011 में हुई सामाजिक आर्थिक जनगणना के आधार ही अभी गरीब लोगों को इस योजना का लाभ दिया जाएगा। ऐसे में दिल्ली में अभी करीब साढ़े छह लाख परिवार इसके दायरे में आएंगे।

इन सभी को मिलेगा लाभ

इसके अलावा 70 वर्ष से अधिक उम्र के बुजुर्गों, आशा वर्कर और आंगनबाड़ी वर्करों को इस योजना का लाभ मिलेगा। पीएमजेएवाई के तहत पांच लाख रुपये तक निशुल्क इलाज का प्राविधान है।

सरकारी अस्पतालों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा

इसके अलावा पांच साल रुपये तक का स्वास्थ्य बीमा दिल्ली सरकार उपलब्ध कराएगी। इस तरह लाभार्थियों को दस लाख रुपये तक का निःशुल्क इलाज मिल सकेगा। इससे गरीब व 70 वर्ष से अधिक उम्र के बुजुर्गों को बड़ी राहत मिल सकेगी। उन्हें इलाज के लिए सरकारी अस्पतालों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। निजी अस्पतालों में वे आसानी से इलाज करा सकेंगे।

हमे होली के दिन समाज से जात पात का वैमनस्य खत्म करना है : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने सभी दिल्लीवासियों को रंगोत्सव होली की हार्दिक शुभकामनाऐ दी हैं और कहा है की होली सौहार्द एवं भाईचारे का पर्व है और हमे इसको परम्परागत हर्षोल्लास के साथ मनाना है। वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की दिल्ली में 27 वर्ष बाद ऐसा रंगोत्सव आया है जब हम कह सकते हैं आज दिल्ली में सनातनी सरकार तो हमे होली के इस दिन के भाईचारे के संदेश को सार्थक करना है और इसी उद्धेश्य से हमे होली के दिन समाज से जात पात का वैमनस्य खत्म करना है।

नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने भाजपा से पूछा, दिल्ली के लोग पूछ रहे हैं, होली आ गई, फ्री सिलिंडर कब आएगा ?

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली, आम आदमी पार्टी ने गुरुवार को आईटीओ पर ह्यूमन बैनर के जरिए भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को होली पर दिल्ली की महिलाओं को मुफ्त सिलेंडर देने के वादे को याद दिलाया। ₹आप₹ के वरिष्ठ नेता और कोंडली से विधायक कुलदीप कुमार के साथ कार्यकर्ताओं ने 'होली आ गई, फ्री सिलेंडर कब आएगा' लिखा बैनर लेकर प्रदर्शन किया। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने फ्री का सिलेंडर कब आएगा, पीएम मोदी की गारंटी जुमला है' समेत तमाम नारे लगाकर भाजपा से फ्री सिलेंडर देने के चुनावी वादे को पूरा करने की मांग की। वहीं, दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री एवं नेता विपक्ष आतिशी ने एक्स पर एक पोस्ट कर भाजपा से पूछा कि दिल्ली के लोग पूछ रहे हैं, होली आ गई, फ्री सिलिंडर कब आएगा ?

आईटीओ पर प्रदर्शन के दौरान ₹आप₹ विधायक कुलदीप कुमार ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, जेपी नड्डा और बीजेपी ने दिल्लीवालों को गारंटी दी थी कि होली पर दिल्ली की महिलाओं को मुक्त सिलेंडर मिलेगा। आज छोटी होली है। होली आ गई, लेकिन सिलेंडर नहीं आया। दिल्ली की मेरी माताएं- बहाने मुफ्त सिलेंडर मिलने का इंतजार कर रही हैं, लेकिन पीएम मोदी की गारंटी जुमला निकली।

कुलदीप कुमार ने कहा कि भाजपा और पीएम मोदी ने दिल्ली की महिलाओं को 2500 रुपए देने का भी वादा किया था, वह भी जुमला निकला। अब फ्री सलेंडर देने का वादा भी झूठा निकल गया। आम आदमी पार्टी आईटीओ पर ह्यूमन बैनर के जरिए भाजपा को उसके वादे को याद दिला रही है कि होली आ गई है। आज भी वक्त है, महिलाओं को फ्री सिलेंडर दे दो।

कुलदीप कुमार ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी एक जुमला पार्टी है। पीएम मोदी की गारंटी जुमला है। दिल्ली की महिलाओं को न मुफ्त सिलेंडर मिला और ना ही 2500 रुपए उनके खाते में आए। आम आदमी पार्टी मुफ्त सिलेंडर देकर भाजपा को अपना वादा पूरा करने की मांग करती है। चुनाव के दौरान पीएम मोदी ने दिल्ली की महिलाओं से कहा था कि होली पर फ्री सिलेंडर मिलेगा। हिंदुओं का पवित्र त्यौहार होली आ गई, लेकिन फ्री सिलेंडर हमारी माताओं - बहनों के घर में नहीं आया।

उन्होंने कहा कि जब तक भारतीय जनता पार्टी और मोदी जी की गारंटी सच साबित नहीं होगी, दिल्ली की महिलाओं को मुफ्त सिलेंडर और 2500 रुपए नहीं मिलेंगे, आम आदमी पार्टी अपना विरोध दर्ज कर भाजपा को उसकेवादी याद दिलाती रहेगी। दिल्ली की जनता के हित में आम आदमी पार्टी का यह संघर्ष जारी रहेगा।

क्रॉम्पटन ने लॉन्च किया 'फ्रेश-मिक्स अल्ट्रा' – अब ताजा फलों और सब्जियों का जूस निकालना होगा और भी आसान

मुख्य संवाददाता

मुंबईः भारत के उपभोक्ता टिकाऊ उत्पाद बाजार में अग्रणी क्रॉम्पटन ग्रीव्स कंज्यूमर इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड ने अपने नए फ्रेश-मिक्स अल्ट्रा जूसर को लॉन्च किया है। यह हाई-परफॉर्मेंस जूसर रोजमर्रा के उपयोग के लिए बेहतरीन है, जो विभिन्न प्रकार के फलों और सब्जियों से आसानी से अधिकतम जूस निकालने की क्षमता रखता है। आज के समय में उपभोक्ता अपने स्वास्थ्य और पोषण को लेकर पहले से ज्यादा जागरूक हो गए हैं। वे ऐसे उपकरण चाहते हैं, जो न केवल तेज़ी से काम करें, बल्कि गुणवत्ता से भी समझौता न करें। क्रॉम्पटन का नया जूसर इस जरूरत को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। चाहे सुबह की ऊर्जा के लिए हो या वर्कआउट के बाद ताजगी के लिए, यह जूसर तेज़, कुशल और पोषण से भरपूर जूस बनाने का भरोसेमंद समाधान देगा।

फ्रेश-मिक्स अल्ट्रा जूसर को अधिकतम जूस निकालने और उपयोग में आसानी को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया गया है। इसकी यूनिक अपसाइड-डाउन सीव (छननी) जूस की मात्रा को बढ़ाने में मदद करती है, जबकि 72mm चौड़ा फीड च्यूट इसे आसानी से उपयोग करने और साफ करने में सहायक बनाता है। इस जूसर में ड्यूल जूसिंग मोड दिया गया है, जिससे फलों और सब्जियों दोनों के लिए बेहतरीन दक्षता सुनिश्चित होती है। इसके अलावा, जूस कलेक्टर जार और मल्टीपल

पुशर्स जूस निकालने की प्रक्रिया को और भी आसान बना देते हैं। फूड-ग्रेड सामग्री से निर्मित, यह जूसर स्वास्थ्यवर्धक और स्वच्छ जूसिंग को प्राथमिकता देता है, जिससे यह एक स्वस्थ जीवनशैली के लिए आदर्श उपकरण बन जाता है।

इस जूसर में कई एडवांस्ड खूबियां हैं जिन्हें जूस निकालने के अनुभव को और बेहतर बनाने के लिए डिजाइन किया गया हैः

x 500-वाट की पावरट्रॉन मोटर – यह मजबूत मोटर आसानी से विभिन्न प्रकार के फलों और सब्जियों का जूस निकालने में सक्षम है।

x ड्यूल जूसिंग मोड – दो अलग-अलग स्पीड मोड, जिसमें स्पीड 1 फलों के लिए और स्पीड 2 सब्जियों के लिए है, जिससे अधिकतम जूस निकाला जा सकता है।

x वाइड और नैरो च्यूट ऑप्शंस – 72mm चौड़ा च्यूट फलों के लिए और संकरा च्यूट सब्जियों के लिए, जिससे जूस निकालने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी होती है।

x बड़ा पल्प कलेक्टर – इसमें एक बड़ा पल्प कलेक्टर है, जिससे बिना रुके लंबे समय तक जूस निकाला जा सकता है।

x 2 साल की वारंटी – प्रोडक्ट और मोटर दोनों पर 2 साल की वारंटी, जो इसकी टिकाऊपन और ब्रांड के भरोसे को दर्शाती है।

क्रॉम्पटन ग्रीव्स कंज्यूमर इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड में स्मॉल डोमेस्टिक अप्लायंसेज के पीएल हेड, केतन चौधरी ने इस नए लॉन्च पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा, ₹क्रॉम्पटन में, हम उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करने और उनके अनुभव को बेहतर बनाने के लिए इनोवेशन, सुविधा और विश्वसनीयता से भरपूर उत्पाद लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। फ्रेश-मिक्स अल्ट्रा जूसर का लॉन्च हमारी किचन अप्लायंसेज श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण कदम है। जैसे-जैसे स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता बढ़ रही है, वैसे-वैसे स्पेशलाइज्ड जूसिंग अप्लायंसेज की मांग भी बढ़ी है। यह जूसर उपभोक्ताओं को एक तेज़, प्रभावी और स्वास्थ्यवर्धक जूसिंग समाधान प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।₹

क्रॉम्पटन का फ्रेश-मिक्स अल्ट्रा जूसर सभी प्रमुख रिटेल आउटलेट्स और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध है। इसे आधुनिक उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया गया है, जो उच्च गुणवत्ता और सुविधा दोनों प्रदान करता है।इसकी अधिकतम खुदरा कीमत 5,500 रूपए रखी गई है।

क्या आपकी किडनी ठीक है? होम्योपैथी से विश्व किडनी दिवस पर रोकथाम और उपचार करें - डॉ. ए.के. गुप्ता

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

१3 मार्च को मनाए जाने वाले विश्व किडनी दिवस २०२५ का थीम है "क्या आपकी किडनी ठीक है ? समय रहते पता लगाएं, किडनी के स्वास्थ्य की रक्षा करें"।

आपका जवाब क्या है - हाँ / नहीं या पता नहीं

किडनी को नुकसान से बचाने के लिए आप ये कर सकते हैं:

स्वस्थ भोजन करें: बहुत सारे फल और सब्ज़ियों वाला संतुलित आहार लें और नमक, चीनी और संतृप्त वसा को सीमित करें।

हाइड्रेटेड रहें: पानी, कॉफ़ी, चाय और जूस जैसे पर्याप्त तरल पदार्थ पिएँ।

सक्रिय रहें: ज़्यादातर दिनों में कम से कम ३0 मिनट शारीरिक गतिविधि करने का लक्ष्य रखें।

अपना वज़न नियंत्रित करें: अगर आपका वज़न ज़्यादा है या आप मोटे हैं, तो वज़न कम करने की कोशिश करें।

धूम्रपान से बचें: धूम्रपान आपकी किडनी को नुकसान पहुँचा सकता है और मौजूदा नुकसान को और भी बदतर बना सकता है।

शराब की मात्रा सीमित करें: ज़्यादा शराब पीने से आपकी किडनी को नुकसान पहुँच सकता है।

अपनी दवाएँ निर्धारित अनुसार लें: इसमें ओवर-द-काउंटर दवाएँ भी शामिल हैं, अगर आप उन्हें लेते हैं।

तनाव कम करें: तनाव उच्च रक्तचाप का कारण बन सकता है, जो आपकी किडनी को नुकसान पहुँचा सकता है।

गैर-स्टेरायडल एंटी-इंफ्लेमेटरी दवाओं (NSAIDs) से बचें: अगर आपको किडनी की बीमारी है, तो ये आपकी किडनी को नुकसान पहुँचा सकती हैं।

अन्य सुझावों में शामिल हैं:

ऐसे खाद्य पदार्थ खाना जो रक्त कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करते हैं ,प्रोटीन सीमित करना ,प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों से बचना ,फास्ट फूड और नमकीन स्नैक्स सीमित करना

ऐसे खाद्य पदार्थ सीमित करना जो अचार या संरक्षित किए गए हों ,यदि आपको मधुमेह है तो अपने रक्त शर्करा (शर्करा) का प्रबंधन करना ,यदि आपको पहले से ही किडनी की बीमारी है, तो आप इसकी प्रगति को धीमा करने के लिए अपने डॉक्टर के साथ मिलकर काम कर सकते हैं।

किडनी की समस्याओं के लक्षणों में शामिल हैं:

मूत्र में परिवर्तन: पेशाब में रक्त या प्रोटीन, बार-बार पेशाब आना या पेशाब के रंग-रूप में परिवर्तन ,सूजन: पानी के जमाव के कारण पैरों, टखनों या हाथों में सूजन

त्वचा में परिवर्तन: सूखी, खुजलीदार, पपड़ीदार या फटी हुई त्वचा,सांस लेने में तकलीफ: ऐसा महसूस होना कि आप सांस नहीं ले पा रहे हैं ,थकान: हर समय थका हुआ महसूस करना ,मतली और उल्टी: किडनी की समस्याओं का एक सामान्य लक्षण ,वजन कम होना: बिना प्रयास किए वजन कम होना ,भूख कम लगना: भूख न लगना,मांसपेशियों में ऐंठन: मांसपेशियों में ऐंठन,सोने में परेशानी: सोने में कठिनाई होना

अन्य लक्षणों में शामिल हैं:

सिरदर्द ,हड्डी में दर्द ,अनिद्रा ,त्वचा का पीला पड़ना ,सांसों की बदबू ,सुनने मेंपरेशानी,भ्रम,उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर) किडनी फेलियर के उपचार में डायलिसिस, किडनी ट्रांसप्लांट और सहायक देखभाल शामिल हैं। इनमें से कुछ लक्षण अन्य विकारों के साथ भी हो सकते हैं, इसलिए यह न समझें कि आपको गुर्दे की बीमारी है।

गुर्दे की बीमारी को रोकना स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है, समग्र स्वास्थ्य के लिए गुर्दे का अपशिष्ट फ़िल्टर रक्तचाप को नियंत्रित करता है और हार्मोन का उत्पादन करता है, जबकि उम्र और आनुवंशिकी जैसे कुछ अपवर्तक अपरिवर्तनीय हैं, जीवनशैली में बदलाव जोखिम को काफी कम कर सकते हैं, रणनीतियों में रक्तचाप का प्रबंधन शामिल है।

टाइप टू डायबिटीज मेलिटस हृदय रोग और क्रोनिक किडनी रोग के जोखिम को काफी बढ़ा देता है, रक्त से और इन अंगों पर कोई भी तनाव उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है।

तीव्र किडनी की चोट एक गंभीर स्थिति है, जो किडनी के कार्य में अचानक गिरावट से चिह्नित होती है, मुख्य रूप से रक्त के प्रवाह में कमी, दवा या संक्रमण से विषाक्त क्षति और मूत्र पथ की रुकावट के कारण होती है। सामान्य लक्षणों में पेशाब की मात्रा में कमी, सूजन, भूख न लगना, मतली और भ्रम शामिल हैं, कुछ परिपक्व होने पर कोई लक्षण नहीं होते हैं।

गुर्दे की पथरी और गुर्दे की क्षति संतुलित आहार लें, जिसमें फल, सब्जियां और साबुत अनाज शामिल हों और पालक और चॉकलेट जैसे अत्यधिक ऑसिलेट युक्त खाद्य पदार्थों से बचें। पशु प्रोटीन का सेवन कम करें, मांस, मुर्गी और मछली की मात्रा सीमित करें और वनस्पति प्रोटीन के साथ संतुलन बनाए रखें। कैल्शियम के सेवन पर नज़र रखें, कैल्शियम को भोजन से लें, न कि पूरकों से, ताकि अधिकता से बचा जा सके। मीठे पेय पदार्थों का सेवन सीमित करें, खासकर मीठे पेय पदार्थों का सेवन कम करें, क्योंकि ये पथरी के जोखिम को बढ़ा सकते हैं।

किडनी और क्रिएटिनिन। आजकल यह अक्सर सुपरहीरो मूवी के विलियन की तरह दिखाई देता है, लेकिन वास्तव में, यह किडनी के स्वास्थ्य के खेल में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी है। कल्पना करें कि मांसपेशियाँ कड़ी मेहनत कर रही हैं, ऊर्जा को परिवर्तित कर रही हैं और ताकत बना रही हैं। एक उप-उत्पाद के रूप में, क्रिएटिनिन नामक एक अपशिष्ट उत्पाद बनता है। स्वस्थ किडनी आपके रक्त से इस अपशिष्ट को छानती है और इसे आपके मूत्र/पेशाब के साथ बाहर भेजती है। किडनी स्वास्थ्य मार्कर के रूप में क्रिएटिनिन; उच्च क्रिएटिनिन स्तर कम किडनी फ़ंक्शन का संकेत दे सकता है। लेकिन याद रखें, यह पहेली का एकमात्र टुकड़ा नहीं है। डॉक्टर अक्सर क्रिएटिनिन के स्तर का उपयोग करते हैं और केवल एक सटीक स्कोर निर्धारित करते हैं जिसे eGFR (अनुमानित ग्लोमेरुलर निस्पंदन दर) कहा जाता है, जो किडनी के स्वास्थ्य की स्पष्ट तस्वीर देता है। क्रिएटिनिन के स्तर पर नज़र रखने से किडनी की समस्याओं का जल्द पता लगाना महत्वपूर्ण है। आप और आपका डॉक्टर संभावित समस्याओं को बढ़ने से पहले ही पकड़ सकते हैं, जिससे समय पर उपचार और बेहतर परिणाम मिल सकते हैं। यह उन व्यक्तियों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जिनमें जोखिम कारक जैसे मधुमेह, उच्च रक्तचाप या किडनी रोग का पारिवारिक इतिहास है।

सामान्य किडनी/गुर्दे संबंधी विकारों के लिए होम्योपैथी - होम्योपैथी शरीर के स्व-उपचार तंत्र को उत्तेजित करने के लिए प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त अत्यधिक पतला पदार्थों का उपयोग करती है। होम्योपैथिक उपचारों को सिमिलिया सिमिलबस क्यूरेंटर या "जैसे इलाज वैसे ही" के सिद्धांत के आधार पर चुना जाता है, जिसका अर्थ है कि एक पदार्थ जो स्वस्थ व्यक्ति में लक्षण पैदा कर सकता है, वह संभावित रूप से किसी बीमारी से पीड़ित व्यक्ति में समान लक्षणों को ठीक कर सकता है।

ये कुछ होम्योपैथिक दवाएँ हैं जो अलग-अलग रोगियों के गुर्दे के विभिन्न लक्षणों और स्थितियों के उपचार में प्रभावी पाई गई हैं। चूँकि होम्योपैथी में उपचार का चयन व्यक्तिगत मूल्यांकन पर आधारित होता है, और एक ही स्थिति वाले सभी व्यक्तियों को एक ही उपचार नहीं मिलेगा।

एपिस मेल, एपोसिनम, बर्बेरिस वल्गेरिस, कैंथरिस, क्यूप्रम आर्स, हाइड्रैंगिया, काली क्लोर, लाइकोपोडियम, मैग्नेशिया फॉस, सरसापैला, सॉलिडैगो, टेरीबिंथ, थूजा आदि।

यह सलाह दी जाती है कि इन दवाओं को केवल होम्योपैथिक डॉक्टर की देखरेख में ही लिया जाना चाहिए।

होली रंगों और खुशियों का त्योहार है

कोई भी उत्सव और त्योहार धर्म से ज्यादा मनुष्य के प्रेम और जुनून को जागृत करता है। हमारे मुल्क भारत में होली भी एक त्योहार के रूप में बढ़ चढ़ मनाया जाता है, इसलिए इस मौके पर हिंदू और मुसलमानों के बीच अंतर करना न्याय संगत नहीं है। क्योंकि ये त्योहार होली रंगों और खुशियों का त्योहार है। मुहब्बतों का त्यौहार भाई चारे का त्योहार है। यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत, सर्दियों के मौसम की बिदाई, और बसंत ऋतु के आगमन की खुशी, एक दूसरे से मिलने, मुस्कुराने,खेलने और हंसने, क्षमा करने और क्षमा मांगने और टूटे हुए रिश्तों को फिर से जीवंत करने का प्रतीक है। इसे अच्छी फसल के लिए ईश्वर को धन्यवाद देने के रूप में भी मनाया जाता है। होली खास हिंदू त्यौहारों में से एक है। यह खास तौर से हिंदुस्तान और नेपाल देशों में मनाया जाता रहा है। एक पहलू यह भी है कि होली एक वसंत त्योहार है, जो सर्दियों के मौसम के अंत में मनाया जाता है। यानी सर्दियों का मौसम एक तरह से बिदाई ले रहा होता है।दूसरी ओर, यह ख़रीफ़ सीज़न की फसल का त्यौहार भी है। लेकिन इस त्यौहार की पृष्ठभूमि बहुत दिलचस्प है।

ऐसा कहा जाता है कि हिरण्यकश्यप नामक एक प्राचीन राजा की पूजा से प्रसन्न होकर देवताओं ने उसे एक उपहार या वरदान दिया था कि न तो मनुष्य और न ही जानवर उसे मार सकते थे, वह न दिन में मरेगा, न रात में, न ही वह पृथ्वी पर मरेगा। न जल में, न वायु में, न घर के अन्दर मरेगा, न बाहर।

हिरण्यकश्यप ने सोचा कि वह अब अमर है और कभी नहीं मरेगा। यह सोचकर वह अहंकार से फूल गया और उसने अपने राज्य में क्रूरता का बाजार गर्म कर दिया। यहां तक कि उसने अपनी प्रजा को अपनी पूजा करने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया।

हालाँकि, उनके बेटे प्रह्लाद ने अपने पिता की पूजा करने से साफ़ इनकार कर दिया। क्रोधित होकर, हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका को प्रह्लाद को जलाकर मारने का आदेश दिया। होलिका आग से प्रतिरक्षित थी, इसलिए वह प्रह्लाद को साथ लेकर आग में कूद गई।

दर्शकों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि आग ने प्रह्लाद को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया, लेकिन होलिका जलकर राख हो गई। ऐसी परंपरा है कि अंतिम सांस लेने से पहले होलिका को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने प्रह्लाद से माफी मांगी। प्रह्लाद ने वादा किया कि उसका नाम हमेशा जीवित रहेगा। ऐसा कहा जाता है कि 'होली' शब्द की उत्पत्ति होलिका के नाम से हुई है।

जब भगवान विष्णु का धैर्य समाप्त हो गया, तो एक दिन उन्होंने विद्रोही राजा को मार डाला। आख़िर कैसे ?

भगवान विष्णु ने रचना की कि गोधूलि बेला (न दिन, न रात) में नरसिंह (आधा मनुष्य, आधा सिंह) (न मनुष्य, न पशु) का रूप धारण करके, अपनी गोद में लेकर (न पृथ्वी पर, न जल में, न वायु में), राजा का गला घोंट दिया। घर की दहलीज (न तो घर के अंदर और न ही बाहर)।

होली, भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख त्योहार है। जो रंगों का उत्सव मनाने के लिए मनाया जाता है। यह त्यौहार हिन्दू पंचांग के फाल्गुन मास की पूर्णिमा को भारत व अन्य कई देशों में धूमधाम से मनाया जाता है।

होली के रंग भी प्रतीकात्मक हैं। लाल रंग प्रेम और उर्वरता का प्रतीक है, हरा प्रकृति का प्रतिनिधित्व करता है, पीला भोजन का प्रतीक है, जबकि नीला रंग भगवान विष्णु से संबंधित होने के कारण धर्म और आध्यात्मिकता का प्रतिनिधित्व करता है।

डॉ.मुश्ताक ,अहमद शाह
सहज़ हरदा मध्यप्रदेश.

पाकिस्तान के गले की फांस बन रहा आतंकवाद !

सुनील कुमार महला

भारत के पड़ोसी पाकिस्तान के हालात बहुत ही बुरे हैं। हाल ही में बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) ने पाकिस्तान में क्वेटा से पेशावर जा रही ज़फ़र एक्सप्रेस ट्रेन को भारी गोलीबारी कर अपने कब्जे में ले लिया। बीएलए ने ट्रेन पर हमले और उसके बाद सेना के साथ मुठभेड़ में ३0 पाकिस्तानी सैनिकों को मार डालने का दावा किया है। २१4 लोगों के कब्जे में होने का दावा करते हुए बीएलए ने यह चेतावनी दी कि यदि सेना ने बंधकों को छुड़ाने की कोशिश की, तो सभी को मार दिया जाएगा। पाठकों को बताता चलूं कि इन बंधकों में सेना के जवान, अर्धसैनिक बल, पुलिस और खुफिया एजेंसियों के अधिकारी भी शामिल हैं। हालांकि, पुलिस ने सिर्फ 35 लोगों के बंधक होने की बात मानी है।इसी बीच, पाकिस्तानी सेना ने 13 बलोच लड़ाकों को मार गिराने का दावा किया है। वास्तव में,बीएलए ने पाकिस्तान की जेल में बंद बलूच कैदियों की रिहाई के लिए शहबाज शरीफ सरकार को 48 घंटे का अल्टीमेटम दिया है। यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत की राजधानी क्वेटा से करीब 100 किलोमीटर दूर स्थित बोलन स्टेशन पर बलूच लिबरेशन आर्मी (बीएलए) के अलगाववादियों द्वारा जफर एक्सप्रेस ट्रेन को अगवा करने और लगभग 180-190 यात्रियों को बंधक बनाने की खबर दहलाने वाली है।यह आलेख लिखे जाने तक यह भी खबरें आ रहीं हैं कि बलूचों ने पाक के सौ सुरक्षा कर्मियों को मार गिराया है।यह भी खबरें आ रहीं हैं कि जाफर एक्सप्रेस को हाइजैक करने वाले हथियारबंद तीस बलूचों को सुरक्षा बलों ने ढ़ेर कर दिया है। इधर, सरकारी मीडिया रेडियो पाकिस्तान के हवाले से यह खबरें भी आईं हैं कि आपरेशन खत्म हो चुका है और सारे विद्रोही मारे जा चुके हैं। वहीं बलूचों ने यह अल्टीमेटम दिया बताते हैं कि बीस घंटे ही बचे हैं और सैन्य कार्रवाई पर वे सभी बंधकों को मौत के घाट उतार देंगे।सैन्य सूत्रों ने दावा किया है कि 190 यात्रियों को मुक्त कराया जा चुका है और तीस घायलों को अस्पताल में भरती कराया गया है। अब वास्तव में क्या सच है और क्या झूठ है,यह तो समय आने पर ही पता चल पाएगा, लेकिन यह एक कटु सत्य है कि पाकिस्तान में जो भी हो रहा है, वह अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए ठीक नहीं कहा जा सकता है।बहरहाल, यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरस ने ट्रेन हाईजैक की निंदा करते हुए कहा कि बंधकों को तत्काल मुक्त करना चाहिए। वहीं चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता माओ निंग ने कहा कि हम आतंकवाद से लोगों की रक्षा करने में पाकिस्तान का पूरी तरह से समर्थन जारी रखेंगे। हाल फिलहाल जो घटना हुई है,यह आर्थिक रूप से खस्ताहाल पाकिस्तान की सुरक्षा व्यवस्थाओं और उसकी स्थिरता पर अनेक प्रकार के सवालिया निशान पैदा करती है। यह घटना दर्शाती है कि पाकिस्तान आतंकवाद का गढ़ तो है ही, साथ ही साथ पाकिस्तान दिन-ब-दिन अराजकता और असंतोष की तरफ बढ़ता चला जा रहा है। पाठकों को बताता चलूं कि बलूचिस्तान से गुजरने वाली जफर एक्सप्रेस पर यह कोई पहला हमला नहीं है। वास्तव में यह वह ट्रेन है, जिसमें अक्सर सरकारी कर्मचारी, सैनिक और अधिकारी वगैरह यात्रा करते हैं और बीएलए की इस पर हमेशा नजर रहती है।सच तो यह है कि बीएलए पिछले कई सालों से पाकिस्तान पर ऐसे हमले करता रहा है। उसने कभी चीन के इंजीनियर को निशाना बनाया तो वह कभी पाकिस्तान के राजनयिकों को निशाना बनाता है।उल्लेखनीय है कि बीएलए अफगानिस्तान के दक्षिणी हिस्से में सक्रिय एक बलूच राष्ट्रवादी चरमपंथी संगठन है, जिसका उद्देश्य बलूचिस्तान को पाकिस्तान से अलग कर स्वतंत्र राष्ट्र बनाना है। वास्तव में, कहना ग़लत नहीं होगा कि ब्लूचिस्तान में अलगाववाद अपने चरम पर है। दरअसल, पाकिस्तानी शासन के दमन और राजनीतिक रूप से हाशिए पर धकेले जाने का नतीजा ही है कि बलूचिस्तान में लोग अलगाववाद में लिप्त हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि अफगानिस्तान और ईरान की सीमा से लगे हुए खनिज संपदा से समृद्ध क्षेत्र बलूचिस्तान में बीजिंग ने ग्वादर बंदरगाह और अन्य परियोजनाओं में निवेश किया है।कहना ग़लत नहीं होगा कि पिछले कुछ वर्षों में कई बलूच अलगाववादी समूह उभरकर आए हैं, जो लगातार पाकिस्तानी सेना के खिलाफ राजनीतिक हिंसा को अंजाम दे रहे हैं।बलूचिस्तान लिबरेशन फ्रंट (बीएलएफ) और बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) सहित इन समूहों का टारगेट बलूचिस्तान के लिए पूर्ण स्वतंत्रता हासिल करना है। गौरतलब है कि बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) सबसे बड़ा बलूच अलगाववादी समूह है और यह बलूचिस्तान की स्वतंत्रता की मांग करते हुए दशकों से पाकिस्तान सरकार के खिलाफ विद्रोह कर रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो बलूच लिबरेशन आर्मी (बीएलए) या बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी खुद को बलूचिस्तान की आजादी की मांग करने वाला सशस्त्र समूह है। यह बलूचिस्तान में सक्रिय सबसे पुराना अलगाववादी समूह भी है। यह संगठन पहली बार 1970 के दशक में सामने आया था। बलूचिस्तान के महत्व की यदि हम बात करें तो बलूचिस्तान चीन के ६0 अरब डालर के निवेश (सीपीईसी) का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहां रेको डिक जैसे खनन प्रोजेक्ट शामिल हैं, जिन्हें दुनिया की सबसे बड़ी स्वर्ण और तांबा खदान माना जाता है। यह प्रांत अस्थिरता और सुरक्षा चिंताओं से जूझ रहा है। बलूचों ने जुल्फिकार अली भुट्टो की सरकार के समय बलूचिस्तान सूबे में सशस्त्र विद्रोह शुरू किया, लेकिन सैन्य तानशाह जियाउल हक की सत्ता पर कब्जे के बाद बलूच नेताओं के साथ हुई वार्ता के बाद उन्होंने पाकिस्तान के साथ संघर्ष विराम कर लिया था, लेकिन बीएलए एक बार फिर से जिंदा हो गया। उपलब्ध जानकारी के अनुसार पाकिस्तान में कारगिल युद्ध के बाद तानाशाह जनरल परवेज मुशर्रफ ने नवाज शरीफ का तख्तापलट कर सत्ता पर कब्जा कर लिया। इसके बाद मुशर्रफ के इशारे पर वर्ष २000 में बलूचिस्तान हाईकोर्ट के जस्टिस नवाब मिरी की हत्या कर दी गई। पाकिस्तानी सेना ने मुशर्रफ के कहने पर इस केस में बलूच नेता खैर बक्श मिरी को गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद से बलूच लिबरेशन आर्मी एक बार फिर सक्रिय हो गई। यह भी उल्लेखनीय है कि आज की बलूच लिबरेशन आर्मी की आधिकारिक स्थापना २0२0 में हुई थी। इसके बाद से बलूच लिबरेशन आर्मी ने बलूचिस्तान के विभिन्न इलाकों में सरकारी प्रतिष्ठानों और सुरक्षा बलों पर हमला करना शुरू कर दिया। इस समूह में शामिल ज्यादातर लगाके मैरी और बुगती जनजाति से थे। ये जनजातियां क्षेत्रीय स्वायत्तता पाने के लिए अब भी पाकिस्तान सरकार से लड़ रही हैं। संक्षेप में कहें तो, भारत और पाकिस्तान के अलगाव के बाद वर्ष 1948 से ही बलूचों के लिए एक अलग देश की मांग के साथ विद्रोह की शुरुआत हो गई थी। यह संघर्ष 1950 से 1970 के दशकों तक कई चरणों में चला। वर्ष २003 में परवेज मुशर्रफ के कार्यकाल के दौरान विद्रोही गतिविधियां काफी बढ़ गईं और उन्होंने बलूची विद्रोहियों के विरुद्ध कई अभियान चलाए। बलूचों द्वारा उनके शोषण और मानवाधिकारों के हनन की शिकायत की जाती रही है।यहां यह भी उल्लेखनीय है कि बीएलए को पाकिस्तान, अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देश 'आतंकवादी संगठन' मानते हैं। बीएलए सुरक्षा बलों, विभिन्न सरकारी इमारतों, चीनी सेना और उसके वर्कर्स को टारगेट करके हमले करता रहा है। चीन के बढ़ते प्रभाव के बीच बीएलए ने सुसाइड अटैक, बड़े हमलों को अंजाम दिया है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि मजीद ब्रिगेड को बीएलए का सुसाइड स्क्वाड माना जाता है, जो कई हाई-प्रोफाइल हमलों जैसे कि वर्ष २018 में कराची में चीनी दूतावास पर हमले और वर्ष २019 में ग्वादर में एक लग्ज़री होटल पर हमले में शामिल रहा है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि बलूचिस्तान प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से एक बहुत ही समृद्ध प्रांत है और उसकी लड़ाई इस बात को लेकर है कि पाकिस्तान उसके संसाधनों का लगातार दोहन करता है। इससे ब्लूचिस्तान के स्थानीय लोगों को इससे कोई फायदा नहीं मिलता है। पाकिस्तानी सेना के अत्याचारों के खिलाफ बीएलए पिछले करीब ६0-70 सालों से लड़ रहा है। गौरतलब है कि पाकिस्तान ने वर्ष २006 में ही बीएलए पर प्रतिबंध लगा दिया था। बहरहाल, बीएलए या यूं कहें कि बलूचों की पहली और सबसे बड़ी मांग ये है कि बलूचिस्तान में पाकिस्तान की किसी भी एजेंसी या सुरक्षा एजेंसी के कोई भी नुमाइंदे वहां नहीं होने चाहिए। इसके अलावा बलूचों का यह भी मानना है कि चीन के साथ सीपीईसी प्रोजेक्ट चल रहे हैं, और इन प्रोजेक्टों से उनके खनिजों का लगातार दोहन हो रहा है। उनका यह मानना है कि इन प्रोजेक्ट्स की वजह से बड़ी संख्या में समुदाय के लोग विस्थापित हुए हैं। वास्तव में, बलूच लोग इन प्रोजेक्ट्स के यहां से हटाने की लगातार कई सालों से मांग कर रहे हैं। बहरहाल,आईएमएफ के कर्ज के बोझ तले पाकिस्तान आर्थिक बदहाली से तो जूझ ही रहा है, वैश्विक आतंकवाद सूचकांक की २0२5 की रिपोर्ट में भी उसे दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा आतंक प्रभावित देश बताया गया था। आंकड़े यह भी बताते है कि वर्ष २0२4 में पाकिस्तान में आतंकी हमलों में 1,600 से ज्यादा लोग मारे गए थे, जो पिछले एक दशक में सर्वाधिक मौतों वाला वर्ष भी है।सच तो यह है कि पाकिस्तान आतंकवाद का एक बड़ा गढ़ रहा है और आज भी है और यही आतंकवाद उसके गले की फांस बना हुआ है।इन हालातों के बीच पाकिस्तान में हाल ही में आयोजित आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी सुरक्षित ढंग से निपट गई, यह अच्छी बात है। आज जरूरत इस बात की है अंतरराष्ट्रीय समुदाय पाकिस्तान में ऐसी घटनाओं पर पूरी नजर और सतर्कता बरते, क्यों कि यह कभी भी पूरे क्षेत्र की सुरक्षा के लिए एक बड़ा व गंभीर खतरा बनकर उभर सकता है। पाकिस्तान की अक्सर यह आदत रही है कि जब कभी भी उसके देश के अंदर ऐसी घटनाएं घटित होतीं हैं तो वह दुनिया का ध्यान भटकाने के लिए भारत विरोधी सुर अलापने लगता है, ऐसे में भारत के लिए यह जरूरी हो जाता है कि वह पूरी सतर्कता के साथ पूरे घटनाक्रम पर लगातार अपनी पैनी नजर बनाए रखे।

49 साल बाद भी हिन्दी फिल्मों की सबसे बड़ी सुपर-डुपर हिंट फिल्म शोले

यादों के संस्मरण

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

हेट एण्ड टेल सिक्के के दो पहलू होते हैं। कहीं जाना हो या कोई काम करना हो कुछ करना हो तो वह टांस होना भी फिल्म शोले का अलग अंदाज ही था। फिल्म की शुरुआत में जो दृश्य फिल्माए गए वह उस जमाने की सबसे शानदार चलचित्रों में था। भारतीय हिन्दी सिनेमा की नींव का पत्थर इस फिल्म को कहे तो कोई ग़लती नही होगी। फिल्म के लेखक सलीम जावेद की इस जोड़ी ने हर एक किरदार को छेनी हथौड़ी से तराश कर जीवित किया था। जैसे बसंती (हेमा-मालिनी) की बात करने की हर स्टाईल बहुत निराली थी। क्योंकि उस गांव की तांगेवाली की घोड़ी धन्नो भी अलग-अलग रंग में दिखी। रामगढ़ की रहने वाली बसंती की बात तो सौ बात की सौ बात ही थी। जब रेलगाड़ी से रेलवे स्टेशन पर दो जवान लड़के शहर से आते हैं वह कहते हैं कि हमें रामगढ़ जाना है....। अच्छा अच्छा पर वहां कहा जायेंगे? ठाकुर बलदेव सिंह के घर जाना है। बाबू जी आप सोच रहे होंगे की बसंती लड़की होकर तांगा चलातीं है...। अरे जब धन्नो घोड़ी होकर तांगा चला सकती है तो हम क्यों नहीं चला सकते हैं। यह इठलाते हुए संवाद और जय और वीरू का किरदार निभाते अमिताभ व धर्मेंद्र अपने आप में अलग ही थें। शोले फिल्म में हर एक छोटे-से छोटे किरदार प्रभावी व सटिक रहे। तभी तो आज 49 साल बाद भी हिन्दी फिल्मों की रीड की हड्डी है फिल्म शोले । ठाकुर बलदेव सिंह की हवेली में काम करने वाले नौकर रामलाल हो या फिर मौलवी बने ए के हंगल जी हो वही ठाकुर साहब की सबसे छोटी बहू जया बच्चन पहली झलक में बहुत सीधी

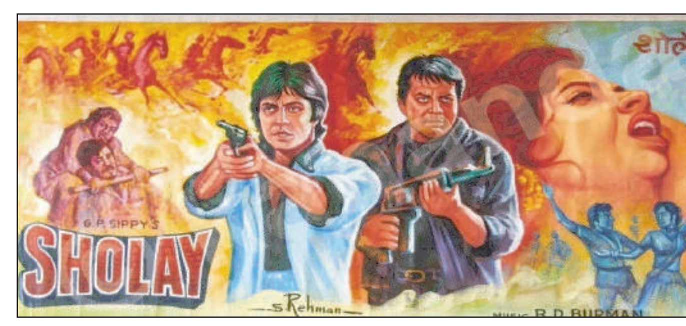

सादी सी विधवा बहूं के किरदार में अच्छा प्रभाव छोड़ कर गई । वहीं आहमत मियां का किरदार में सचिन ने थोड़े समय के लिए अपने आप के अभियान को पूर्ण रूप से न्याय किया था। इस फिल्म के चार प्रमुख स्तंभ थे वहीं दो आंतरिक महत्वपूर्ण सारथी भी थे । जय वीरू ठाकुर बलदेव सिंह डाकु गब्बर सिंग बसंती व ठाकुर साहब की विधवा बहू इन्हीं के आसपास फ़िल्मी कैमरा जरुर घूमा पर जब कोई मनोरंजन व्यंग्य कमेड़ी की बात होगी तो असरानी जो अंग्रेजों के जमाने के जेलर से शुद्ध मनोरंजन किया वहीं हरिराम नाई की चुगली ने दशकों को चंद मिनटों के लिए गुदगुदाया। इस फिल्म शोले में धमेंद्र ,अमिताभ, संजीव कुमार ,अमजद खान, हेमा-मालिनी, जय बच्चन का अभियान इतने सालों बाद भी सिनेप्रेमियों के सिर चढ़कर बोल रहा है। नई पीढ़ी भी अगर शोले फिल्म को देखतीं हैं तो वह बीच में उठकर कहीं जा आ नहीं सकती है । वह वहीं ठहर सी जाती है इस फिल्म के संवादों ने दशकों को बंधे रखा था । जैसे बेलापुर जाने के लिए बसंती व धन्नो की बातचीत या मौसी जी और जय का संवाद गांव के देसी परिवेश में बातचीत का अनोखा रंग फ़िल्मी दृश्य बहुत जोरदार बने थे । इस फिल्म का एक एक सीन फिल्म का मजबूत हिस्सा था। जिसके बल पर सुपर-डुपर हिंट नहीं बल्कि लाखों करोड़ों चाहने वालों के दिलों में आज 49 साल बाद भी शोले जिंदा है तभी तो आज भी शोले जैसी हिंदी फिल्म अपने इतिहास के स्वर्णिम सफ़र पर है ....। इतने वर्षों बाद भी चाहने वालों के दिलों में आज भी राज कर रही है यह फिल्म जिसे निर्माता निर्देशक जे पी सिप्पी व रमेश सिप्पी जी ने बनाई थी जिसमें उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी था इस फिल्म को बनाने में । इस फिल्म में जब डाकु गांव में आते थे जब दर्शक भी बहुत डर से जाते थे । वहीं डाकु कालिया का सीन दो मुठ्ठी ज्वार लायें हो । वहीं फिर डायलॉग ठाकुर ने हिजड़ों की फौज बनाईं है / ठाकुर बोलते हैं मौत तुम्हारे सिर पर खड़ी हैं । वहीं डाकु गब्बर सिंह का डायलॉग कितने आदमी थे सरकार दो आदमी थे / गब्बर .... सुअर के बच्चों वह दो थे तुम तीन फिर भी खाली हाथ आ गये.....। तम्बाकू की पोटली से ठेठ देसी अंदाज में अमजद खान साहब का अभियान ने डर व खोफ की इबादत अपने अभिनय से लिखी उन्होंने उस अभिनय को अमर कर दिया । तभी तो पचास पचास कोस दूरी पर जब कोई बच्चा रोता है तो मां बोलती है सो जा बेटा नहीं तो गब्बर आ जायेगा। इसी बीच बंदूक की गोली भरते भरते तीनों डाकुओं की हंसी गब्बर का संवाद ने ज़िन्दगी व मौत के बीच तड़का लगा दिया। डाकु गब्बर सिंह का डायलॉग तेरा क्या होगा कालिया ... कालिया मेने आप का नमक खाया है, अब गोली खा ... ।फिल्म शोले में होली कब हैं आमजन का डायलॉग बना हुआ है इतने वर्षों बाद भी उसी पर फिल्माया हिट गाना होली के दिन दिल मिल जातें हैं रंगों में रंग मिल जातें हैं । भारतीय परिधानों का रंगीन व सतरंगी आसमान में जब इस फिल्म को बनाया गया तब और उसके बाद इस गीत की धूम वर्तमान में भी उसी उंमगता के साथ बनी हुई है। इसी होली की मस्ती के बीच रामगढ़ में ड़ाकू आते हैं और ठाकुर साहब बन्दूक नहीं उठा पाते हैं उसके बाद गब्बर का संवाद .... ठाकुर इन्हें लायें थें रामगढ़ में गब्बर से रक्षा के लिए ? गब्बर के खोफ से एक आदमी बचा सकता वह है खुद गब्बर । धन्नो का तांगा से बसंती की बुद्धि कौशल के जरिए गब्बर से लड़ाई में गांव वालों की जीत होती है ।

वहीं बहुचर्चित डायलॉग लोहा गरम है मर दो हाथोडा और आर डी बर्मन दा का गीत व संगीत आवाज भी उनकी महबूबा हो महबूबा गुलशन में गुल खिलाते हैं या फिर इस फिल्म का एक और गाना कोई हसीना जब रुठ जाती है तो और भी हसीन हो जाती है। इसी फिल्म शोले का सबसे लोकप्रिय गीत मन्ना डे और किशोर कुमार की आवाज में ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे छोड़ेंगे दम मगर तेरा साथ ना छोड़ेंगे। जय की मौत पर जब यह गाना बचता है तो गमहीन माहौल हो जाता है। ऐसे तो इस फिल्म में गाने कम थे मगर जो भी थे वह रजत पटल पर रखे हुए कर्ण प्रिय थे । वहीं धमेंद्र का वह यादगार सीन जिसमें पानी की टंकी पर चढ़कर बसंती से शादी के लिए प्रस्ताव निराले अंदाज में फिल्माया गया था ।जिस में किरदार में रहे कर धर्मेन्द्र वीरू ने एक अलग छाप छोड़ी। वहीं ए क हंगल साहब का एक छोटा सा डायलॉग इतना सन्नाटा क्यों है भाई....। कौन यह बोझ नहीं उठा सकता ...। सबसे बड़ा बोझ बेटे का जनाजा बाप के कन्धे पर उठना होता है। वहीं सलीम जावेद की लेखनी में असली किरदार सूरमा भोपाली का अलग ही था जो कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है। इस ऐतिहासिक फिल्म को चित्र पट जगत की सबसे बड़ी व सुपर-डुपर हिट मानी जाती है। फिल्म शोले आज इसी लिए हिन्दी सिनेमा जगत के बेमिसाल इतिहास के स्वर्णिम सफ़र पर है ...। क्योंकि लोकप्रियता में इस का कोई मुकाबला नहीं हो सकता है ।49 सालो की लम्बी फिल्मी यात्रा आज भी यादगार पलों में बनी हुई है । खासकर होली पर बहुत याद आती है और टेलीविजन पर प्रसारित जरूर होती है। इस फिल्म ने कई पीढीयों के गुज़र जाने के बाद भी आज जब कभी या फिल्म आतीं हैं टेलीविजन में आतीं हैं तो दर्शक स्थिर हो जाते है। हर एक चीज में यह फिल्म जनमानस के पटल पर रेखांकित करती है । संवाद डायलॉग गीत संगीत या शोले के कोई भी किरदार हर एक चीज मन-मस्तिष्क पर बनीं हुईं हैं जो चिरस्मरणीय है। शोले जैसी फिल्म फिर कभी भी नहीं बन सकतीं यह फिल्मी दुनिया के लिए अजुबा ही है। तभी तो इतने वर्षों बाद भी इस फिल्म के बारे में लिखते लिखते बहुत कुछ पहेलू छुट गये पर जो हम दशकों में फिल्मों के प्रति समर्पित जिंदादिल इंसान के ज़हन में जो भाव थे वह सब आप के लिए लिखें है क्योंकि शोले जैसी हिंदी फिल्म सिनेमा इतिहास के स्वर्णिम सफ़र पर है.....।।

होली मिलन समारोह समाज में समानता, भाईचारे और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण अवसर

सामाजिक न्याय संगठन द्वारा मनाया गया होली मिलन समारोह समाज में समानता, भाईचारे और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण अवसर होता है। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य विभिन्न जाति, धर्म, और पृष्ठभूमि से आने वाले लोगों को एक साथ लाना और आपसी सौहार्द व एकता को बढ़ावा देना है। होली मिलन समारोह में सामाजिक न्याय संगठन ने इस बात को सुनिश्चित किया कि सभी वर्गों के लोग, खासकर हाशिए पर रहने वाले समुदायों, को बराबरी का अवसर मिले और उन्हें सम्मान के साथ शामिल किया जाए। कार्यक्रम के दौरान संगठन अक्सर सामाजिक और आर्थिक समानता के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए प्रेरक भाषण, कार्यशालाएँ, और अन्य गतिविधियाँ आयोजित करते हैं। इसके अलावा, होली के रंगों के साथ यह समारोह सामाजिक न्याय और समानता का प्रतीक बनकर, लोगों को अपनी विविधता में एकता का अहसास कराता है। ऐसे आयोजन समाज में सामूहिक जागरूकता पैदा करते हैं और लोगों को समान अधिकारों की ओर प्रेरित करते हैं। इस समारोह में सामाजिक न्याय संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष लक्ष्मी जी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुनील सत्यार्थी सलाहकार स्वयं प्रकाश जी एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सरदार तजिंदर सिंह जी अन्य सदस्यों के साथ उपस्थित रहे तथा सभी को होली की हार्दिक शुभकामनाएं दी।

होली का त्योहार एक ऐसा अवसर है,,,

उड़ाओ गुलाल प्रेम का बरसाओ तुम रंग।
आपस में मिलो गले आ जाओ तुम संग।

आज की होली और बीते समय की होली में बहुत बड़ा अंतर आया है। पहले, होली एक पारंपरिक त्योहार था जो समुदाय के लोगों को एक साथ लाता था। लोग अपने घरों को रंगोली से सजाते थे, होलिका दहन करते थे, और एक दूसरे के साथ रंग और गुलाल खेलते थे। ऐसा नहीं है कि आज ये तेवहार नहीं मनाया जाता,मनाया तो जाता है मगर सिर्फ रस्म अदायगी तक सीमित नज़र आता है।

लेकिन आज, होली की रस्म अदायगी सिर्फ एक औपचारिकता बन गई है। लोग होली के दिन को सिर्फ एक अवकाश के रूप में देखते हैं, न कि एक पारंपरिक त्योहार के रूप में। हमें इसके पीछे की सच्चाई और परंपरा को समझकर आत्मसात करना चाहिए,भारत परंपराओं और विषद परंपराओं का देश है।

इसके अलावा, आज के डिजिटल युग में, लोगों की जीवनशैली भी बदल रही है। लोग अब अपने घरों में बैठकर होली के गीत सुनते हैं और सोशल मीडिया पर होली की शुभकामनाएं देते हैं। और इसी को इतिश्री मान कर खुद को धन्य समझ बैठते हैं ,लेकिन वे होली के वास्तविक अर्थ और महत्व को भूलते जा रहे हैं।हम संकुचित मानसिकता और संकुचित प्रवृति को गले लगा कर बैठ गए हैं। हम अपने आपसी सौहार्द और एकता को भूल जाते हैं और सिर्फ अपने व्यक्तिगत हितों को देखते हैं। लेकिन मुझे उम्मीद है कि हम अभी भी होली के वास्तविक अर्थ और महत्व को समझ सकते हैं,ओर समझना ही चाहिए, ऐसा करके हम अपने आपसी सौहार्द और एकता को बढ़ावा दे सकते हैं। हमें होली के रंगों और खुशियों के साथ-साथ, अपने समुदाय और समाज के लिए भी काम करना चाहिए।

होली का त्योहार एक ऐसा अवसर है, जो हमें

एकता, सौहार्द और प्रेम की भावना को बढ़ावा देने का मौका देता है। लेकिन जब हम इसे जाति-पाति और धार्मिक कट्टरता के चश्मे से देखते हैं, तो यह त्योहार अपना वास्तविक अर्थ खो देता है। भारत एक ऐसा देश है जो गंगा-जमुनी तहज़ीब का गहवारा है, जहां विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के लोग एक साथ रहते हैं और एक दूसरे के त्योहारों में शामिल होते हैं। लेकिन जब कुछ लोग इसे अपने राजनीतिक फायदे के लिए इस्तेमाल करने लगते हैं, तो यह न केवल अन्यायसंगत है, बल्कि यह हमारे समाज की एकता और सौहार्द को भी कमजोर करता है।

हमें होली के त्योहार को उसके वास्तविक अर्थ में मनाना चाहिए, जो एकता, प्रेम और सौहार्द का प्रतीक है। हमें अपने मतभेदों को भूलकर एक दूसरे के साथ मिलकर इस त्योहार को मनाना चाहिए ।होली का त्योहार एक ऐसा अवसर है।

डॉ. मुश्ताक अहमद

पत्रकार सुरक्षा अधिनियम तत्काल प्रभाव से लागू किया जाएं : पत्रकार विष्णु सिकरवार

आगरा, संजय साग़र सिंह। ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन जिला इकाई आगरा के जिलाध्यक्ष पत्रकार विष्णु सिकरवार ने सीतापुर जनपद में हिंदी दैनिक समाचार पत्र के निर्भीक पत्रकार राघवेंद्र बाजपेई की दिनदहाड़े गोली मारकर की गई हत्या को अत्यंत दुःखद एवं निंदनीय बताते हुए कहा कि अब तक अपराधी खुलेआम घूम रहे हैं। उन्होंने इस घटना की कठोर निंदा करते हुए मुख्यमंत्री से मांग की कि पत्रकारों की सुरक्षा को लेकर वे तत्काल दिशा-निर्देश जारी करें और पत्रकार सुरक्षा अधिनियम को तुरंत प्रभाव से लागू करें।

श्री सिकरवार ने आगे कहा, “आजकल पत्रकारों के खिलाफ असामाजिक तत्वों द्वारा अनर्गल मुकदमे लिखवाए जाने का भी प्रचलन बढ़ता जा रहा है। यह निष्पक्ष और निर्भीक पत्रकारिता के लिए एक बड़ी चुनौती है।” उन्होंने सरकार से पत्रकारों और उनके परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित करने की अपील की और कहा कि हत्यारों और साजिश में शामिल लोगों के खिलाफ त्वरित और कठोर कार्रवाई की जाए।

उन्होंने यह भी कहा कि पत्रकारों की सुरक्षा के लिए एक उच्च स्तरीय समिति गठित हो, जिसमें ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन की भी भागीदारी हो, और समिति की रिपोर्ट के आधार पर पत्रकारों की सुरक्षा की व्यवस्था की जाए।

जिलाध्यक्ष ने बताया कि प्रदेश के कई जनपदों में पत्रकार उत्पीड़न की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं, जो प्रेस की स्वतंत्रता पर सीधा हमला है। इस स्थिति को गंभीरता से लेते हुए ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन, आगरा द्वारा 17 मार्च को मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी, आगरा के माध्यम से सौंपा जाएगा।

हमारी प्रमुख मांगें:

1. पत्रकार सुरक्षा कानून को तत्काल प्रभाव से लागू किया जाए।
2. राघवेंद्र बाजपेई के हत्यारों को अविलंब गिरफ्तार कर जेल भेजा जाए।
3. मृतक के परिवार को उचित मुआवजा दिया जाए।
4. प्रदेश में पत्रकार उत्पीड़न पर प्रभावी रोक लगाने के लिए ठोस कदम उठाए जाएं।

अंत में उन्होंने कहा, “अब समय आ गया है कि हम सब एकजुट होकर अपनी सुरक्षा और सम्मान के लिए आवाज बुलंद करें। सभी पत्रकार साथी इस ज्ञापन कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर अपनी ताकत का अहसास कराएं। एकता ही हमारी शक्ति है !”

मॉरीशस की धरती पर भारतीय धड़कन: एक आत्मीय मिलन की महागाथा

[हिंद महासागर के नीले आकाश में उभरा भारत-मॉरीशस का स्वर्णिम सूरज]

हिंद महासागर की नीली लहरों के बीच जगमगाता मॉरीशस कोई आम द्वीप नहीं है—यह भारत के दिल का एक जीवंत हिस्सा है, जहां हर गली में भारतीय संस्कृति की मधुर सुगंध तैरती है और हर चेहरे पर अपनत्व की गर्माहट झलकती है। जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस मनोरम देश की धरती पर अपनी दो दिवसीय यात्रा के लिए कदम रखा, तो यह क्षण केवल एक औपचारिक मुलाकात नहीं था—यह था दो आत्माओं का संगम, एक ऐसा संकल्प जो इतिहास की गहराइयों से उभरकर भविष्य के सुनहरे शिखरों को छूने को आतुर है। मॉरीशस की 12 लाख की आबादी में 70 प्रतिशत लोग भारतीय मूल के हैं—यह महज एक आंकड़ा नहीं, बल्कि उस अटूट रिश्ते का जीवंत प्रमाण है, जो खून की रगों, संस्कृति की जड़ों और साझा सपनों की उड़ान से बुना गया है। इस यात्रा में हर हस्ताक्षर एक वचन बना, हर वादा एक नई उम्मीद जगा, और हर मुस्कान ने इस बंधन को अडिग मजबूती दी। यह दौर सिर्फ भारत और मॉरीशस की दोस्ती का उत्सव नहीं था, बल्कि दुनिया के सामने एक संदेश था—एक शक्तिशाली घोषणा कि ये दोनों देश मिलकर न केवल अपने लिए, बल्कि ‘ग्लोबल साउथ’ के लिए एक स्वर्णिम भविष्य का निर्माण करने को तैयार हैं।

इस यात्रा का एक चमकदार पड़ाव तब आया, जब मॉरीशस ने अपने सर्वोच्च सम्मान ‘द ग्रांड कमांडर ऑफ ऑर्डर ऑफ स्टार एंड की ऑफ इंडियन ओशन’ से प्रधानमंत्री मोदी को नवाजा। यह सम्मान केवल एक शख्सियत के लिए नहीं था—यह उस देश के लिए था, जो हर तूफान में मॉरीशस का सहारा बना, हर खुशी में उसका साथी रहा। इस मौके को दोनों देशों ने एक ऐतिहासिक शुरुआत में बदला—‘विस्तारित रणनीतिक साझेदारी’ की मंजिल तक पहुंचते हुए आठ समझौतों पर दस्तखत किए गए। व्यापार, समुद्री सुरक्षा, धनशोधन के खिलाफ संयुक्त लड़ाई और एमएसएमई के विकास जैसे क्षेत्रों में ये समझौते एक नई राह बनाते हैं। सीमा पार लेनदेन में राष्ट्रीय मुद्राओं का इस्तेमाल और समुद्री डाटा साझाकरण जैसे कदम दोनों देशों को आर्थिक रूप से सशक्त करने के साथ-साथ हिंद महासागर में स्थिरता का झंडा बुलंद करते हैं। जब चीन इस क्षेत्र में अपने पांव पसारने की कोशिश कर रहा है, तब भारत और मॉरीशस का यह एकजुट कदम एक सशक्त जवाब है—हमारी दोस्ती अडिग है, हमारा इरादा अटल है। प्रधानमंत्री मोदी ने मॉरीशस के अपने समकक्ष नवीनचंद्र रामगुलाम के साथ बातचीत में ‘ग्लोबल साउथ’ के लिए एक ऐसा दृष्टिकोण पेश किया, जो उम्मीद की किरण बनकर उभरा। इसे नाम दिया गया ‘महासागर’—‘म्यूचुअल एंड होलिस्टिक एडवांस्मेंट फॉर सिक्योरिटी एंड ग्रोथ एक्रॉस रीजन्स’। यह कोई साधारण नीति नहीं, बल्कि एक क्रांतिकारी सपना है—जहां विकासशील देश प्रौद्योगिकी के बल पर, रियायती ऋणों के सहारे और आपसी सहयोग की ताकत से एक-दूसरे के साथ आगे बढ़ें। हिंद महासागर को मुक्त, सुरक्षित और समृद्ध बनाना भारत और मॉरीशस का साझा मिशन है, और यह दृष्टिकोण उस मिशन को पंख देता है। 2015 में शुरू हुई ‘सागर’ नीति की 10वीं सालगिरह पर यह घोषणा और भी प्रेरक बन जाती है। जहां ‘सागर’ ने सभी के लिए सुरक्षा और विकास का आधार रखा, वहीं ‘महासागर’ इसे और ऊंचा उठाता है—व्यापार से समृद्धि, कौशल से सतत प्रगति और सुरक्षा से साझा भविष्य का वादा लेकर।

रक्षा और समुद्री सुरक्षा में सहयोग इस यात्रा का अडिग आधार बना, जिसने दोनों देशों की दोस्ती को नई मजबूती दी। दोनों नेताओं ने इसे अपनी रणनीतिक साझेदारी का दिल और आत्मा करार दिया। पीएम मोदी ने मॉरीशस के विशेष आर्थिक क्षेत्र की सुरक्षा के लिए भारत के अटूट संकल्प को दोहराया, जो भरोसे की एक मजबूत मिसाल बना। एक पुलिस अकादमी का निर्माण, राष्ट्रीय समुद्री सूचना साझाकरण केंद्र की स्थापना और तटरक्षक बल की जरूरतों को पूरा करने में भारत का योगदान—ये सभी इस सहयोग को न सिर्फ शब्दों में, बल्कि कार्यों में भी साकार करते हैं। श्वेत नौवहन, नीली अर्थव्यवस्था और जल विज्ञान जैसे क्षेत्रों में साझेदारी को और गहरा करने का दृढ़ निश्चय इस रिश्ते को भविष्य की ओर ले जाता है। लेकिन सबसे मार्मिक और हृदयस्पर्शी क्षण तब आया, जब पीएम मोदी ने मॉरीशस के लिए नए संसद भवन के निर्माण में सहयोग की घोषणा की। इसे उन्होंने ‘लोकतंत्र की जननी’ की ओर से एक अनमोल उपहार बताया। यह भवन महज ईंट-पत्थर का ढांचा नहीं होगा, बल्कि दोनों देशों के साझा लोकतांत्रिक मूल्यों का जीवंत प्रतीक बनकर उभरेगा—एक ऐसी विरासत, जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देगी।

चागोस द्वीपसमूह का मुद्दा भी इस यात्रा में गूंजा। 1965 में मॉरीशस की आजादी के बाद ब्रिटेन ने इस द्वीपसमूह को अलग कर दिया था, लेकिन मॉरीशस इसे अपनी संप्रभुता का हिस्सा मानता रहा। पिछले साल ब्रिटेन ने चागोस को मॉरीशस को सौंपने का फैसला किया, हालांकि डिएगो गार्सिया पर सैन्य अड्डे के लिए 99 साल का पट्टा रखा। नई मॉरीशस सरकार इस समझौते पर फिर से विचार चाहती है, और भारत इस मुश्किल वक्त में मॉरीशस के साथ मजबूती से खड़ा है। पीएम मोदी ने कहा, “चागोस विवाद में हम मॉरीशस की संप्रभुता का पूरा सम्मान करते हैं।” यह समर्थन उस भरोसे की गहराई को दिखाता है, जो दोनों देशों को एक-दूसरे से जोड़ता है।

सांस्कृतिक और विकासात्मक सहयोग ने इस यात्रा को और रंगीन बनाया। भारत मॉरीशस के लोगों के लिए चार धाम यात्रा और रामायण यात्रा की सुविधाएं देगा—यह कदम दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक धागों को और मजबूत करेगा। विकास के मोर्चे पर भारत ने कई वादे किए—100 किलोमीटर लंबी जल पाइपलाइन का आधुनिकीकरण, 50 करोड़ मॉरीशस रुपये की सामुदायिक परियोजनाएं और स्थानीय मुद्राओं में व्यापार को बढ़ावा। मॉरीशस में मेट्रो एक्सप्रेस, सर्वोच्च न्यायालय भवन, ईएनटी अस्पताल और यूपीआई जैसी परियोजनाएं पहले ही भारत की मदद से चमक रही हैं। दोनों नेताओं ने ‘अटल बिहारी वाजपेयी लोक सेवा एवं नवाचार संस्थान’ का उद्घाटन किया, जो शिक्षा और नवाचार का नया सूरज बनकर उगेगा।

यह यात्रा महज कागजों पर लिखी औपचारिकता नहीं थी, बल्कि यह सुंदरता, सहयोग और गहरे रिश्तों की एक जीवंत कहानी बन गई। हर समझौता, हर घोषणा और हर मुलाकात ने इस दोस्ती को नई ताकत और उत्साह से भर दिया। पीएम मोदी ने भावुकता के साथ कहा, “चाहे रक्षा का क्षेत्र हो, शिक्षा की बात हो, स्वास्थ्य का मसला हो या अंतरिक्ष की ऊंचाइयां, हम दोनों देश कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रहे हैं। बीते 10 वर्षों में हमने अपने संबंधों को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है, जो समय की कसौटी पर और मजबूत हुआ है।” मॉरीशस के राष्ट्रीय दिवस पर दूसरी बार मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होकर पीएम मोदी ने भारतीय समुदाय के साथ जो मुलाकात की, उसने इस यात्रा को भावनाओं के रंगों से और गहरा कर दिया, मानो यह दोस्ती का एक अनमोल उत्सव हो।

हिंद महासागर का यह छोटा सा द्वीप और भारत का विशाल लोकतंत्र—दोनों का यह संगम दुनिया के सामने एक मिसाल है। यह यात्रा सिर्फ दो देशों की साझेदारी नहीं थी—यह थी एक नई सुबह की शुरुआत, जहां ‘महासागर’ का सपना ‘ग्लोबल साउथ’ को रोशनी देगा। यह दोस्ती सिर्फ अतीत की कहानियों से नहीं बनी—यह भविष्य के लिए एक मजबूत नींव है, जो समृद्धि, सुरक्षा और सम्मान की नई इबारत लिखेगी। जब लहरें मॉरीशस के तटों से टकराती हैं, तो वे भारत के उस वादे को गुनगुनाती हैं—हम साथ हैं, और यह साथ एक बेहतर दुनिया का वादा है। यह यात्रा उस उम्मीद का प्रतीक है, जो सीमाओं को पार करती है, दिलों को जोड़ती है, और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुनहरा कल रचती है।

प्रो. आरके जैन “अरिजीत”, बड़वानी (मप्र)

आओ रंगों के महोत्सव होली को सावधानी से मनाएं- शासकीय नियमों का पालन करें

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी
गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर त्योहारों के प्रतीक भारत में आदि अनादि काल, हजारों वर्षों से सभी त्यौहारों को बड़े ही आत्मीयता, उत्साह सौहार्द से मनाने की प्रथा रही है जो आज भी उसी लगन, उत्सव, आनंद से शुरू है !

साथियों बात अगर हम 13-14 मार्च 2025 दो दिवसीय होलीका पर्व उत्सव की करें तो हर भारतीय त्योहार की तरह होली मनाने का भी अपना एक कारण है जिसको जानना आधुनिक युवाओं के लिए ख़ास महत्वपूर्ण है। पौराणिक कथाओं के अनुसार प्राचीन काल में हिरण्यकश्यप नामक राक्षस राजा का पुत्र प्रहलाद, भगवान विष्णु का परम भक्त था जो उसके राक्षस पिता को पसंद नहीं था और भक्ति से विमुक्ति करने उसने अपनी बहन होलिका को यह जिम्मेदारी सौंपी, जिसे वरदान प्राप्त था कि अग्नि भी उसकी देह को जला नहीं सकती। इसलिए होलिका ने भगत प्रह्लाद को मारने उसे गोद में लेकर अग्नि में प्रवेश हो गई परंतु वह खुद जल गई पर भगत प्रल्हाद का बाल भी बांका नहीं हुआ दूसरी ओर रंग वाली होली पर्व उत्सव राधा-कृष्ण के पावन प्रेम के प्रतीक के रूप में भी मनाई जाती है इसके अलावा मीडिया में इसे मनाने को लेकर अनेक पर्यावरणीय योग उपचार, स्वास्थ्य संबंधी वैज्ञानिक कारण भी बताए गए हैं।

साथियों बात अगर हम होली में बरतने वाली सावधानियों की करें तो, (1) त्वचा की सुरक्षा के लिए विशेष देखभाल आवश्यक है। जब भी होली खेलने निकलें, उससे पहले त्वचा पर कोई तैलीय क्रीम या फिर तेल, घी या फिर मलाई लगाकर निकलें, ताकि त्वचा पर रंगों का विपरीत असर न पड़े। (2) बालों को रंग से बचाने का पूरा प्रयास करें। रंग आपके बालों को रूखा, बेजान और कमजोर बना सकते हैं। इनसे आपके बालों का पोषण भी छिन सकता है। (3) यदि होली खेलते समय आंखों में रंग चला जाए तो तुरंत आंखों को साफ पानी से धोएं। यदि आंखें धोने के बाद भी तेज जलन हो, तो बिना देर किए डॉक्टर को दिखाएं। (4) आंखों पर गलती से गुब्बारा लग जाए या खून निकल आए तो पहले सूती कपड़े से आंखों को ढंकें या फोहा लगाएं। इसके बाद डॉक्टर को जरूर दिखाएं।(5) बाजार के हरे रंग से होली खेलते समय ध्यान रखें, इसमें कॉपर सल्फेट पाया है, जो आंखों में एलर्जी, सूजन अंधापन जैसी समस्याएं पैदा कर सकता है। इस बात का विशेष ध्यान रखें। (6) सिल्वर चमकीले रंग का इस्तेमाल न करें। इसमें एल्युमीनियम ब्रोमाइड होता है, जो त्वचा के कैंसर के लिए जिम्मेदार हो सकता है। वहीं काले रंग में उपस्थित लेड ऑक्साइड किडनी को बुरी तरह प्रभावित करता है। (7) होली खेलें लेकिन पूरे होश में खेलें। अधिक नशा करना आपके स्वास्थ्य को तो प्रभावित करता ही है, कई बार अनहोनी घटनाओं का कारण भी बनता है। होली सुरक्षित तरीके से खेलें। (8) बाजार की मिठाईयों का सेवन करने से बचें। इनमें मिलावट हो सकती है, जो आपके लिए खतरनाक साबित हो सकती है। घर पर बने व्यंजनों का भरपूर मजा लें, क्योंकि वे शुद्धता के साथ बनाए जाते हैं। (9) होली की मस्ती में कई

बार लड़ाई- झगड़े भी हो जाते हैं, लेकिन यह भाई-चारे का पर्व है भूलें नहीं। आपसी भाईचारा बनाए रखें और मिलजुलकर खूबसूरत रंगों के साथ होली मनाएं। (10) कोशिश करें कि हर्बल रंगों का ही प्रयोग करें। इन रंगों का कोई दुष्प्रभाव भी नहीं होता और इन्हें आसानी से घर पर बनाया भी जा सकता है। वैसे बाजार में भी हर्बल रंग उपलब्ध हैँ।

साथियों बात अगर हम उपरोक्त पौराणिक और वैज्ञानिक कारणों को मानकर होली मनाने के उद्देश्य समझने की करें तो बुराई में चाहे कितनी भी ताकत हो किंतु अच्छाई की तपिश में खाक हो जाती है। इसलिए हम पिछले दो साल के कोरोनाकाल के दुखदाई क्षणों से उबर रहें हैं तो होलिका दहन के साथ हम अपनी नकारात्मकता और बुराइयों को दहन कर भाईचारे को मजबूत रंगों में रंगे !आओ सब मिलकर होली के रंग में सराबोर हो आपसी सौहार्द, भाईचारा, प्रेम सामाजिक समरसता का संकल्प लेकर एक नए मज़बूत भारत में प्रवेश कर अपने विज़न 2047 और 5 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था को मज़बूत करने की ओर आगे क़दम बढ़ाएं।

साथियों बात अगर हम होली पर्व उत्सव से प्रेरणा की करें तो, अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक, असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक यह त्यौहार हमें बताता है कि अधर्म, असत्य कितना भी बलशाही क्यों न हो, हमारी ताकत, संकल्प, जुनून, जांबाज़ी, ज़ज़बे की ताकत उसे ध्वस्त कर देगी। यह ताकत हमें आपसी भाईचारे, सद्भाव, सौहार्द और मानवीय सामाजिक समरसता से ही मिलेगी जिसकी प्रेरणा हमें होली पर्व महोत्सव से लेने की जरूरत है। यह त्यौहार हमें भीतरी विकारों को त्यागने वह नष्ट करने की प्रेरणा सदियों से देता आया है और इस होलिका दहन पर हम सभी के विकारों का इस पवित्र अग्नि के साथ समूल नाश करें।

साथियों बात अगर हम होलिका दहन के बाद रंगोत्सव की करें तो यह हमेशा परंपरा के साथ वैदिक रीति-रिवाज के अनुसार प्रतिवर्ष प्रकृति के कण-कण की भीनी भीनी सुगंध में महकाने वाले वसंत ऋतु फाल्गुन पूर्णिमा की संध्याकाल में होलिका दहन किया जाता है यह अवसर हमें अपने चारित्रिक अवगुणों, दुर्गुणों को भस्मीभूत करने का आध्यात्मिक संदेश देता है। हमारे मानवीय मूल्यों की निरंतर अभिवृद्धि होती रहे यह हमें इस दिवस पर संकल्प लेना है तथा देश की संस्कृति में सराबोर होने आपसी सौहार्द के रंग में, रंगों की मस्ती में मस्त होने भाईचारे, प्रेम, भाव को प्रोत्साहित करने में अपना अमूल्य योगदान दें।

साथियों बात अगर हम होली पर्व उत्सव को वर्तमान आधुनिक परिपेक्ष में दूषित करने से बचाने की करें तो,होली का त्यौहार भारतीय त्यौहारों में एक महत्व रखता है ,खासकर के पूर्वोत्तर क्षेत्र में। होली का त्यौहार यूं तो आज पूरे विश्व में मनाया जाता है ।भारतीय त्योहारों को मनाने के पीछे उसका उद्देश्य छिपा रहता है। यह त्यौहार प्रकृति तथा व्यक्ति के जीवन पर आधारित होता है ।इसको मनाने के पीछे वैज्ञानिक तर्क भी कार्य करते हैं ।होली के त्यौहार को भारत के विद्वान तथा बुद्धिजीवी लोग तो जानते हैं,किंतु कुछ असामाजिक तत्व इसकी मर्यादा को भंग करते हैं। मर्यादा से तात्पर्य यह है कि इसके उद्देश्य को क्षति पहुंचाते हैं। यह त्यौहार खुशियां मनाने का है, एक दूसरे के सुख में शामिल होने का है, अपने दुखों को भूल जाने का है। वहीं कुछ लोग इस त्यौहार को दूषित करते हैं अर्थात दारू, मदिरा, भांग, मांस आदि खाकर इस त्यौहार की मर्यादा को तोड़ते है साथ ही वह अपने परिवार तथा समाज के मर्यादाओं को भी क्षति पहुंचाते हैं। और त्योहार की गरिमा को भंग करते हैं ? हालांकि यह उनके विवेक पर निर्भर करता है ।हमारा उद्देश्य है समाज में त्यौहार की मर्यादा को बनाए रखना तथा उसके प्रति समाज को जागरूक करना। जो व्यक्ति इस मर्यादा को तोड़ता है अथवा भंग करता है उसे हम एक सच्चे समाज के व्यक्ति होने के नाते रोक सकते हैं। इसकी गरिमा को बचाए रखने के लिए इसके वैज्ञानिक तथ्य को उसके समक्ष रख सकते हैं। हम सबसे आशा करते हैं तोहार को त्यौहार के रूप में मनाते रहे इससे दारू, मदिरा तथा मांस आदि का सेवन करके समाज को दूषित ना करें।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि,आओ रंगों के महोत्सव होली को सावधानी से बनाएं-शासकीय नियमों का पालन करें ।रंगों की मस्ती में मस्त होने भाईचारे, प्रेम, भाव को प्रोत्साहित करने में अपना अमूल्य योगदान दें ।आओ सब मिलकर होली के रंग में सराबोर हो आपसी सौहार्द भाईचारा प्रेम सामाजिक समरस्ता का संकल्प लें।

मारुति सुजुकी बलेनो के बेस वेरिएंट को दो लाख रुपये की डाउन पेमेंट के बाद ले आएं घर..

परिवहन विशेष न्यूज

मारुति की ओर से नेक्सा डीलरशिप के जरिए प्रीमियम हैचबैक Maruti Baleno को ऑफर किया जाता है। अगर आप भी इस कार के बेस वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं। तो दो लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इस गाड़ी को घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में Maruti Suzuki की ओर से प्रीमियम डीलरशिप नेक्सा के जरिए प्रीमियम हैचबैक सेगमेंट में Maruti Baleno को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। अगर आप भी इस हैचबैक के बेस वेरिएंट Sigma को घर लाने का मन बना रहे हैं, तो दो लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इसे घर लाया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti Baleno Sigma Price

Maruti की ओर से Baleno के बेस वेरिएंट के तौर पर Sigma को ऑफर किया जाता है। कंपनी इस प्रीमियम हैचबैक के बेस वेरिएंट को 6.70 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर बिक्री के लिए उपलब्ध करवा रही है। अगर इसे दिल्ली में खरीदा जाता है तो 6.70 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के साथ ही इस पर रजिस्ट्रेशन, इंश्योरेंस भी देना होगा। इस गाड़ी को खरीदने के लिए करीब 47 हजार रुपये का रजिस्ट्रेशन टैक्स, करीब 37 रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। जिसके बाद गाड़ी की दिल्ली में ऑन रोड कीमत 7.54 लाख रुपये हो जाती है।

2 लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर Maruti Baleno के बेस वेरिएंट Sigma को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 5.54 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 5.54 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 8918 रुपये की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी Car

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 5.54 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 8918 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Maruti Baleno के बेस वेरिएंट Sigma के लिए करीब 1.95 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 9.49 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Maruti Suzuki की ओर से Baleno को प्रीमियम हैचबैक सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Tata Altroz, Toyota Glanza, Hyundai i20 के साथ होता है। इसके अलावा कीमत के मामले में इसे Nissan Magnite, Renault Kiger, Maruti Swift, Fronx जैसी कारों से चुनौती मिलती है।

स्कोडा कोडिआक के बाद आएगा RS वर्जन, सीबीयू के तौर पर आ सकती है भारत, जानें कब तक हो सकती है लॉन्च

परिवहन विशेष न्यूज

यूरोप की वाहन निर्माता Skoda की ओर से भारतीय बाजार में जल्द ही नई गाड़ी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। जिसके बाद उसके ज्यादा स्पोर्टी वर्जन को भी लाया जा सकता है। कंपनी की ओर से कब तक और किस सेगमेंट में नई गाड़ी लाई जा सकती है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। चेक रिपब्लिक की वाहन निर्माता Skoda की ओर से भारत में सेडान से लेकर एसयूवी सेगमेंट के वाहनों की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से किस नई एसयूवी को भारत लाने की तैयारी की जा रही है। किस सेगमेंट किस तरह के फीचर्स और इंजन के साथ इसे लाया जा सकता है। कब तक एसयूवी के स्पोर्टी वर्जन को लॉन्च (Skoda Kodiaq RS SUV Launch) किया जाएगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

स्कोडा लाएगी Kodiaq RS

भारत में स्कोडा की ओर से इस साल कई वाहनों को लाने की तैयारी की जा रही है। इसमें कंपनी की ओर से सबसे पहले अप्रैल 2025 में Skoda Kodiaq को लॉन्च किया जाएगा। जिसके कुछ समय बाद इसके ज्यादा दमदार वर्जन Skoda Kodiaq RS को भी औपचारिक तौर पर लॉन्च किया जाएगा। हालांकि अभी कंपनी की ओर से इसके बारे में आधिकारिक तौर पर घोषणा नहीं की गई है।

कितना दमदार इंजन

स्कोडा की ओर से कोडियाक आरएस में एक दमदार इंजन को दिया जाएगा। इसमें दो लीटर की क्षमता के टीएसआई ईवो इंजन को दिया जाएगा। जिससे इसे 265 हॉर्स पावर के साथ 400 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इसमें 7स्पीड डीएसजी ट्रांसमिशन को भी दिया जाएगा। साथ ही इसे ऑल व्हील ड्राइव के साथ ऑफर किया जाएगा। इस इंजन से एसयूवी को 0-100 किलोमीटर की स्पीड से चलाने में 6.4 सेकेंड का समय लगेगा। इसकी टॉप स्पीड 231 किलोमीटर प्रति घंटे तक होगी।

कैसे होंगे फीचर्स

एसयूवी में स्कोडा की ओर से ग्लॉसी ब्लैक एक्सटीरियर को दिया जाएगा। इसमें ग्लॉसी ब्लैक फ्रंट ग्रिल, लाइट स्ट्रिप, 20 इंच अलॉय व्हील्स, एलईडी मैट्रिक्स बीम हेडलाइट, स्पोर्ट्स सीट्स, इलेक्ट्रिक एडजस्टेबल फ्रंट सीट्स, स्पोर्टी ब्लैक इंटीरियर, 10 इंच डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, 13 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, आरएस वेलकम लोगो, कैंटन साउंड सिस्टम, स्टेलनेस स्टील पैडल कवर जैसे कई बेहतरीन फीचर्स के साथ लाया जाएगा।

कब तक आ सकती है Skoda Kodiaq RS

जानकारी के मुताबिक कंपनी की ओर से स्कोडा कोडियाक के आरएस वर्जन को फेस्टिव सीजन के पहले अक्टूबर 2025 तक भारत में लॉन्च किया जा सकता है। शुरूआत में इस एसयूवी को सीबीयू के तौर पर लाया जा सकता है। लेकिन बाद में इसका निर्माण भारत में ही किया जा सकता है।

किनसे होगा मुकाबला

स्कोडा की ओर से कोडियाक आरएस को फुल साइज एसयूवी सेगमेंट में लाया जाएगा। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला टोयोटा लिजेंडर के साथ होगा।

कार में करना है सफर तो किन बातों का रखें ध्यान, गंदी होने से बच जाएगी गाड़ी

परिवहन विशेष न्यूज

भारत सहित दुनियाभर में 13 और 14 मार्च 2025 को होली का त्योहार मनाया जाएगा। इस दौरान कई लोग कार में सफर भी करते हैं। जिससे आपकी कार के इंटीरियर को नुकसान भी हो सकता है। अगर आप भी अपनी कार के इंटीरियर को होली के रंगों से बचाना चाहते हैं तो किन बातों का ध्यान रखना जरूरी (Car Travel Tips) हो जाता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत सहित दुनिया भर के अलग अलग देशों में रहने वाले हिंदुओं का प्रमुख त्योहार होली 13 और 14 मार्च 2025 को मनाया जाएगा। इस दौरान लोग अलग अलग रंगों वाले गुलाल और पक्के रंगों के साथ होली खेलना पसंद करते हैं। होली खेलने के दौरान रंग कपड़ों पर लग जाते हैं और फिर कार में सफर के दौरान कार गंदी हो जाती है। लेकिन कुछ बातों का ध्यान रखा जाए तो होली के रंगों से कार के इंटीरियर को आसानी (Protect car from Holi colors) से बचाया जा सकता है। ऐसा किस तरह किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

गीले कपड़ों में कार में न करें सफर

अगर आप होली (Holi 2025) के त्योहार पर अच्छी तरह से रंग खेलने का मन बना रहे हैं तो ऐसा करने के बाद गीले कपड़ों के साथ गाड़ी में नहीं बैठना चाहिए। ऐसा इसलिए क्योंकि कपड़ों पर रंग लगा रहता है और कार में बैठने पर इंटीरियर खराब हो जाता है।

खिड़कियां खोलकर न चलाएं कार

होली के समय कुछ लोग कार की खिड़कियां खोलकर सफर करते हैं। ऐसा करने से बाहर से रंग या पानी कार के अंदर (Car Travel Tips) आ सकता है। जिसके कारण न सिर्फ ड्राइवर का ध्यान भटक सकता है बल्कि

कार गंदी भी हो जाती है।

सीट बचाने के लिए करें कपड़े का उपयोग

कितनी भी सावधानी के साथ होली खेली जाए उसके बाद भी कपड़ों पर तो रंग लगा रह ही जाता है। जिससे कार की सीट खराब हो जाती हैं। इससे बचने के लिए कार की सीटों पर कपड़े का उपयोग करना चाहिए। किसी पुराने कपड़े को कार की सीटों पर इस तरह से बिछाना चाहिए जिससे सीट कवर पूरी तरह से ढक जाएं। ऐसा करने से सीटों को रंग से होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है।

कागज का करें उपयोग

कार में इंटीरियर काफी महंगा होता है और उसे साफ करवाना उतना ही मुश्किल होता है। साथ ही इसमें काफी खर्चा भी होता है। इसलिए सीटों के अलावा आर्म रेस्ट, स्टेयरिंग व्हील, मैट आदि के आस-पास और गियर के आस-पास बटर पेपर जैसे विकल्प का उपयोग किया जा सकता है। ऐसी जगहों पर अच्छी तरह से पेपर को लगाकर आप कार के इंटीरियर को आसानी से रंगों से होने वाले नुकसान से बचा सकते हैं।

ऑटोमैटिक या गियर वाली कार, कौन-सी गाड़ी ज्यादा देती है माइलेज

परिवहन विशेष न्यूज

बहुत से लोगों को यह कंफ्यूजन रहता है कि आखिरकार उन्हें ज्यादा माइलेज ऑटोमेटिक में मिलेगी या फिर मैनुअल कार में। हम यहां पर आपको इस सवाल का जवाब दे रहे हैं। इसके साथ ही बता रहे हैं कि कार का माइलेज किस पर पर निर्भर करता है। आइए जानते हैं कि दोनों में से कम पेट्रोल कौन खर्च करती है।

नई दिल्ली। जब भी हम कोई कार खरीदने के लिए जाते हैं, तो हम उसमें कई फैक्टर देखते हैं। इसमें कार में मिलने वाले सेफ्टी फीचर्स से लेकर माइलेज तक शामिल होता है। अक्सर बहुत से लोग हमसे यह सवाल करते हैं कि ऑटोमेटिक कार और मैनुअल गियर वाली कार में से कौन-सी गाड़ी ज्यादा माइलेज देती है। इस सवाल का जवाब कई तकनीकी पहलुओं पर निर्भर करता है, जिसमें इंजन, गियरबॉक्स, और ड्राइविंग स्टाइल तक शामिल होता है। आइए जानते हैं कि ऑटोमैटिक और मैनुअल कार में से कौन-सी गाड़ी ज्यादा माइलेज देती है।

1. मैनुअल कार

मैनअल यानी गियर वाली कार में ड्राइवर को गियर शिफ्ट करने की जिम्मेदारी होती है। इसमें कुछ तकनीकी पहलू होते हैं, तो मैनुअल कार का माइलेज (Manual car fuel efficiency) के मामले में थोड़ी ज्यादा फायदेमंद बन सकती है।

मैनुअल गियरबॉक्स वाली गाड़ियों में ड्राइवर को इंजन की स्पीड और गियर शिफ्टिंग पर कंट्रोल होता है। ड्राइवर अपनी स्पीड को अपने हिसाब से कंट्रोल कर सकता है, जिससे इंजन ज्यादा से ज्यादा फ्यूल एफिशिएंसी मिल सकें।

मैनुअल गियरबॉक्स में कम तकनीकी उपकरण का इस्तेमाल किया जाता है, जिसकी वजह से इसका रखरखाव कम महंगा होता है। यह कार की लंबी उम्र और अच्छी माइलेज के कारण बनता है।

2. ऑटोमेटिक कार

ऑटोमेटिक गियर शिफ्टिंग की जिम्मेदारी गियरबॉक्स के पास होती है। इसकी वजह से ड्राइवर को गियर बदलने की चिंता नहीं होती है। यह गाड़ियों में मिलने वाली तकनीक माइलेज (Automatic car mileage) पर प्रभाव डाल सकते हैं।

इसमें स्पीड के आधार पर खुद-ब-खुद गियर बदलात है, जिससे कार को हमेशा सही गियर में चलाया जा सकता है। इससे गियर बदलने में होने वाली गलती और ड्राइवर की लापरवाही कम होती है, जिसकी वजह से इंजन ज्यादा पेट्रोल खर्च नहीं करता है।

हाल में आने वाली सभी गाड़ियों को ऑटोमैटिक गियरबॉक्स, जैसे CVT (Continuously Variable Transmission) के साथ पेश किया जाता है, जो बेहतर फ्यूल एफिशिएंसी देता है। यह इंजन की स्पीड और लोड को समक्षते हुए उसे सबसे प्रभावी गियर में खुद ही बदल देते हैं, जिससे माइलेज बेहतर मिलता है। इसमें ड्राइविंग अधिक स्मूद होती है, जिससे फ्यूल की खपत कम होती है।

कौन सी कार ज्यादा देती है माइलेज?

मैन्युअल कारः मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ आने वाली गाड़ियां अच्छा माइलेज देती है। यह पूरी तरह से ड्राइवर के ऊपर निर्भर करता है कि वह कार को किस तरह से चला रहा है। वहीं, इन गाड़ियों के लिए कम पावर की जरूरत होती है, जिससे माइलेज बेहतर मिलता है।

ऑटोमैटिक कारः यह गाड़ियां मॉर्डन तकनीकों से लैस होती है, जो बेहतर फ्यूल एफिशिएंसी देने में मददगार होते है। इसकी वजह से यह गाड़ियां मैनुअल गियरबॉक्स के साथ आने वाली गाड़ियों के मुकाबले ज्यादा माइलेज देती है। वहीं, इन ट्रांसमिशन के साथ पेश करने वाले ऑटोमेकर भी ज्यादा माइलेज देने का दावा करते हैं।

जागरण एक्सपर्ट एडवाइस

कार चाहे मैनुअल गियरबॉक्स वाली हो या फिर ऑटोमैटिक गियर वाली (Gear vs automatic car comparison), यह कितना माइलेज देती है वह पूरी तरह से ड्राइवर के ऊपर निर्भर होता है।

यामाहा ने लॉन्च की देश की पहली हाइब्रिड बाइक, जानिए पेट्रोल वाली से कितनी है अलग

परिवहन विशेष न्यूज

Yamaha FZ-S FI Hybrid vs FZ-S FI हाल ही में Yamaha ने देश की पहली हाइब्रिड मोटरसाइकिल FZ-S FI Hybrid को लॉन्च किया है। इसकी कीमत 144800 रुपये रखी गई है। यह स्टैंडर्ड FZ-S Fi से 10 हजार रुपये ज्यादा महंगी है। Yamaha FZ-S FI Hybrid में ज्यादा फीचर्स दिए गए हैं। आइए जानते हैं कि इन दोनों बाइक में कितना अंतर है।

नई दिल्ली। इंडिया यामाहा मोटर (IYM) ने अपनी पॉपुलर बाइक FZ-S Fi के अपडेटेड हाइब्रिड वर्जन को लॉन्च किया है। कंपनी का कहना है कि ये भारत में पहली हाइब्रिड बाइक है। यामाहा कि इस हाइब्रिड की कीमत स्टैंडर्ड FZ-S Fi से 10 हजार रुपये ज्यादा है। इतना ही नहीं, यह तो इसी पर बेस्ड भी है। इसमें नियमित बाइक के फीचर्स को बरकरार रखने के साथ ही नए फीचर्स भी दिए गए हैं। आइए जानते हैं कि Yamaha FZ-S FI Hybrid और FZ-S FI में कितना अंतर है।

1. कीमत (Price)

FZ-S FI Hybrid: 1,44,800 रुपये (एक्स-शोरूम, दिल्ली)

FZ-S FI: 1,34,800 रुपये (एक्स-शोरूम, दिल्ली)

अंतरः FZ-S FI Hybrid की कीमत FZ-S FI से 10,000 रुपये ज्यादा रखी गई है।

2. डिजाइन (Design)

FZ-S FI Hybrid: Racing Blue और Cyan Metallic Grey रंग में उपलब्ध है।

FZ-S FI: Metallic Grey और Matt Black रंग में उपलब्ध है।

अंतरः दोनों ही मोटरसाइकिल के सिल्हूट एक समान है और दोनों एक ही वेरिएंट में आती है। दोनों के कलर ऑप्शन में थोड़ा अंतर है। Hybrid मॉडल को नए और स्टाइलिश कलर ऑप्शन में लेकर आया गया है।

3. इंजन (Engine)

दोनों ही मोटरसाइकिल में 149cc, सिंगल-सिलेंडर, एयर-कूल्ड इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 12.4PS की पावर और 13.3Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके साथ ही यह E20-फ्यूल और OBD-2B के लिए अनुपात करते हैं।

अंतरः FZ-S FI Hybrid में SMG (Smart Motor Generator) में तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है, जो इंजन की रिफाईनमेंट को बढ़ाने के साथ ही इसे साइलेंट स्टार्ट करता है। इसमें दिया गया SMG इलेक्ट्रिक मोटर की तरह काम करता है और इंजन के पावर आउटपुट को भी बढ़ाने में मदद करता है, जिसकी वजह से बाइक स्मूद चलती है। वहीं SMG बैटरी को भी चार्ज करता है। इस फीचर को स्टैंडर्ड FZ-S Fi में नहीं दिया गया है।

4. फीचर्स (Features)

FZ-S FI Hybrid: इसे 4.2-इंच TFT इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, स्मार्टफोन कनेक्टिविटी, टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन, कॉल और SMS अलर्ट्स जैसे फीचर्स लैस किया गया है।

FZ-S FI: इसमें LCD इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर और कम कनेक्टिविटी फीचर्स दिए गए हैं।

अंतरः FZ-S FI Hybrid को TFT स्क्रीन और स्मार्टफोन कनेक्टिविटी जैसी मॉडर्न फीचर्स दिए हैं, जो FZ-S FI में नहीं मिलते हैं।

5. अंडरपिनिंग (Underpinnings)

दोनों ही बाइक में समान अंडरपिनिंग मिलते हैं। दोनों में ही 17-इंच एलॉय व्हील्स, 100-सेक्शन फ्रंट और 140-सेक्शन रियर ट्यूबलेस टायर्स, टेलीस्कोपिक फोर्क और 7-स्टेप एडजस्टेबल मोनोशॉक सस्पेंशन, 282mm फ्रंट और 220mm रियर डिस्क ब्रेक (सिंगल-चैनल ABS के साथ) दिया गया है।

अंतरः भले ही दोनों मोटरसाइकिल के अंडरपिनिंग्स समान हैं। हालांकि, FZ-S FI Hybrid का वजन 1kg ज्यादा है, क्योंकि इसमें Hybrid तकनीक का इंटिग्रेशन किया गया है।

6. सुरक्षा (Safety)

दोनों ही मोटरसाइकिल में सेफ्टी फीचर्स समान ही दिए गए हैं। इनमें ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम, साइड-स्टैंड इंजन कट ऑफ दिया गया है। इनमें से ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम बाइक को सड़क पर बेहतर पकड़ बनाए रखने में मदद करता है और साइड-स्टैंड इंजन कट ऑफ इंजन को साइड-स्टैंड पर रहते हुए चालू नहीं होने देता है।

डिजिटल युग में होली समारोह का भविष्य क्या है?

विजय गर्ग

परंपराओं को संरक्षित करते हुए प्रौद्योगिकी को गले लगाना डिजिटल युग में होली मनाने के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक प्रौद्योगिकी को गले लगाने और पारंपरिक प्रथाओं को संरक्षित करने के बीच सही संतुलन पा रहा है। जबकि आभासी उत्सव और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म दुनिया भर के व्यक्तियों को जोड़ सकते हैं और उत्सव की भावना को बढ़ा सकते हैं, भारतीय संस्कृति और पौराणिक कथाओं में होली की जड़ों को याद रखना आवश्यक है।

परिचय रंगों का जीवंत त्योहार होली बुराई पर अच्छाई की जीत और वसंत के आगमन का जश्न मनाता है। यह प्राचीन हिंदू त्योहार सदियों से मनाया जाता रहा है, जिसमें दुनिया भर के लोग एक-दूसरे को रंगने, नृत्य करने और उत्सव के खाद्य पदार्थों का आनंद लेने के लिए एक साथ आते हैं। जैसे-जैसे हम डिजिटल युग में आगे बढ़ते हैं, होली मनाने के तरीके भी विकसित हो रहे हैं। प्रौद्योगिकी ने हमारे संवाद करने, अनुभवों को साझा करने और एक दूसरे के साथ जुड़ने के तरीके को बदल दिया है, जो स्वाभाविक रूप से प्रभावित करता है कि हम होली जैसे सांस्कृतिक त्योहार कैसे मनाते हैं। डिजिटल युग में होली समारोह का भविष्य अभिनव और समावेशी उत्सव की क्षमता रखता है।

डिजिटल युग में होलीः एक रंगीन विकास जैसा कि प्रौद्योगिकी हमारे जीवन को आकार देना जारी रखती है, यह अपरिहार्य है कि हमारी सांस्कृतिक परंपराएं और उत्सव भी डिजिटल प्रगति से प्रभावित होंगे। अपने शानदार रंगों और खुशी के माहौल के लिए जानी जाने वाली होली इन बदलावों से इम्यून नहीं है। इस ब्लॉग पोस्ट में, हम डिजिटल युग में होली समारोह के भविष्य का पता लगाएंगे, यह देखते हुए कि कैसे प्रौद्योगिकी इस उत्सव के अवसर का अनुभव करने के तरीके को समृद्ध और रूपांतरित कर सकती है।

परंपराओं को संरक्षित करते हुए प्रौद्योगिकी को गले लगाना डिजिटल युग में होली मनाने के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक प्रौद्योगिकी को गले लगाने और पारंपरिक प्रथाओं को संरक्षित करने के बीच सही संतुलन पा रहा है। जबकि आभासी उत्सव और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म दुनिया भर के व्यक्तियों को जोड़ सकते हैं और उत्सव की भावना को बढ़ा सकते हैं, भारतीय संस्कृति और पौराणिक कथाओं में होली की जड़ों को याद रखना आवश्यक है। प्राकृतिक रंगों के साथ खेलना, पारंपरिक मिठाइयों को साझा करना, और सांप्रदायिक नृत्यों में उलझाने जैसे कार्यों को होली समारोह के केंद्र में रहना चाहिए, यहां तक कि हम नए डिजिटल तत्वों को भी शामिल करते हैं।

आभासी होली समारोहः सीमाओं से परे जोड़ना हाल के वर्षों में, आभासी समारोहों के उदय ने लोगों को अपने स्थान की परवाह किए बिना होली उत्सव में भाग लेने की अनुमति दी है। वीडियो कॉल, सोशल मीडिया पोस्ट और आभासी घटनाओं के माध्यम से, व्यक्ति दुनिया भर में दोस्तों और परिवार के साथ अपने होली के अनुभवों को साझा कर सकते हैं, एकजुटता और एकता की भावना को बढ़ावा दे सकते हैं। यह डिजिटल कनेक्टिविटी एक अधिक समावेशी उत्सव को सक्षम बनाती है, भौगोलिक बाधाओं को तोड़ती है और प्रतिभागियों को दुनिया में कहीं से भी होली के जीवंत रंगों और आनंद में विसर्जित करने की अनुमति देती है।

डिजिटल होली समारोह के लिए कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि 1.। ** वर्चुअल होली इवेंट्स का आयोजन करें **: ऑनलाइन होली समारोहों की मेजबानी करें जहां प्रतिभागी आभासी रंग फेंकने, नृत्य प्रदर्शन और इंटरैक्टिव खेलों में शामिल हो सकते हैं।

2.। ** सोशल मीडिया पर होली के क्षणों को साझा करें **: प्रतिभागियों को समुदाय की भावना पैदा करने के लिए समर्पित हैशटैग का उपयोग करके सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर अपने होली समारोह को पकड़ने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

3। ** वर्चुअल होली की शुभकामनाएं भेजें **: ई-कार्ड, एनिमेटेड संदेशों और डिजिटल कलाकृतियों का उपयोग दोस्तों और परिवार को उत्सव की शुभकामनाएं भेजने के लिए करें, होली की खुशी को डिजिटल रूप से फैलाएं।

4। ** संवर्धित वास्तविकता (एआर) होली ऐप्स का अन्वेषण करें **: एआर अनुभवों की पेशकश करने वाले मोबाइल एप्लिकेशन खोजें, जिससे उपयोगकर्ता लगभग रंग लागू कर सकते हैं, परिवेश को सजा सकते हैं और इंटरैक्टिव होली-थीम वाली गतिविधियों में संलग्न हो सकते हैं। डिजिटल युग में होली परंपराओं का संरक्षण जबकि डिजिटल युग होली समारोह के लिए रोमांचक अवसर प्रदान करता है, पारंपरिक रीति-रिवाजों और मूल्यों की रक्षा करना आवश्यक है जो इस त्योहार को अद्वितीय बनाते हैं। होलिका दहन (अलाव प्रकाश व्यवस्था) जैसे पारंपरिक अनुष्ठानों को शामिल करना, हर्बल रंगों के साथ खेलना, और उत्सव व्यंजनों को तैयार करना यह सुनिश्चित करता है कि तकनीकी प्रगति के बीच होली का सार संरक्षित है। आधुनिक प्रथाओं के साथ सदियों पुरानी परंपराओं को मिलाकर, हम एक सामंजस्यपूर्ण मिश्रण बना सकते हैं जो नवाचार को गले लगाते हुए होली के सांस्कृतिक महत्व का सम्मान करता है।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

कहानी ...पैकिंग....

विजय गर्ग

एक बहुत ही बड़े उद्योगपति का पुत्र कॉलेज में अंतिम वर्ष की परीक्षा की तैयारी में लगा रहता है,

तो उसके पिता उसकी परीक्षा के विषय में पूछते है तो वो जवाब में कहता है कि हो सकता है कॉलेज में अव्वल आऊँ,

अगर मै अव्वल आया तो मुझे वो महंगी वाली कार ला दोगे जो मुझे बहुत पसन्द है..

तो पिता खुश होकर कहते हैं क्यों नहीं अवश्य ला दूंगा.

ये तो उनके लिए आसान था. उनके पास पैसो की कोई कमी नहीं थी।

जब पुत्र ने सुना तो वो दो गुने उत्साह से पढाई में लग गया। रोज कॉलेज आते जाते वो शो रुम में रखी कार को निहारता और मन ही मन कल्पना करता की वह अपनी मनपसंद कार चला रहा है।

दिन बीतते गए और परीक्षा खत्म हुई। परिणाम आया वो कॉलेज में अव्वल आया उसने कॉलेज से ही पिता को फोन लगाकर बताया की वे उसका इनाम कार तैयार रखे मै घर आ रहा हूं।

घर आते आते वो ख्यालो में गाडी को घर के आँगन में खड़ा देख रहा था। जैसे ही घर पंहुचा उसे वहाँ कोई कार नही दिखी.

वो बुझे मन से पिता के कमरे में दाखिल हुआ.

उसे देखते ही पिता ने गले लगाकर बधाई दी और उसके हाथ में कागज में लिपटी एक वस्तु थमाई और कहा लो यह तुम्हारा गिफ्ट।

पुत्र ने बहुत ही अनमने दिल से गिफ्ट हाथ में लिया और अपने कमरे में चला गया। मन ही मन पिता को कोसते हुए उसने कागज खोल कर देखा उसमे सोने के कवर में रामायण दिखी ये देखकर अपने पिता पर बहुत गुस्सा आया..

लेकिन उसने अपने गुस्से को संयमित कर एक चिठ्ठी अपने पिता के नाम लिखी की पिता जी आपने मेरी कार गिफ्ट न देकर ये रामायण दी शायद इसके पीछे आपका कोई अच्छा राज छिपा होगा.. लेकिन मै यह घर छोड़ कर जा रहा हु और तब तक वापस नही आऊंगा जब तक मै बहुत पैसा ना कमा लू।और चिठ्ठी रामायण के साथ पिता के कमरे में रख कर घर छोड कर चला गया।

समय बीतता गया..

पुत्र होशियार था होन हार था जल्दी ही बहुत धनवान बन गया. शादी की और शान से अपना जीवन जीने लगा कभी कभी उसे अपने पिता की याद आ जाती तो उसकी चाहत पर पिता से गिफ्ट ना पाने की खीज हावी हो जाती, वो सोचता माँ के जाने के बाद मेरे सिवा उनका कौन था इतना पैसा रहने के बाद भी मेरी छोटी सी इच्छा भी पूरी नहीं की.

यह सोचकर वो पिता से मिलने से कतराता था।

एक दिन उसे अपने पिता की बहुत याद आने लगी.

उसने सोचा क्या छोटी सी बात को लेकर अपने पिता से नाराज हुआ अच्छा नहीं हुआ.

ये सोचकर उसने पिता को फोन लगाया बहुत दिनों बाद पिता से बात कर रहा हूँ.

ये सोच धड़कते दिल से रिसीवर थामे खड़ा रहा.

तभी सामने से पिता के नौकर ने फ़ोन उठाया और उसे बताया की मालिक तो दस दिन पहले स्वर्ग सिधार गए और अंत तक तुम्हे याद करते रहे और रोते हुए चल बसे.

जाते जाते कह गए की मेरे बेटे का फोन आया तो उसे कहना की आकर अपना व्यवसाय सम्भाल ले.

तुम्हारा कोई पता नही होने से तुम्हे सूचना नहीं दे पाये।

यह जानकर पुत्र को गहरा दुःख हुआ और दुखी मन से अपने पिता के घर रवाना हुआ.

घर पहुच कर पिता के कमरे जाकर उनकी तस्वीर के सामने रोते हुए रुंधे गले से उसने पिता का दिया हुआ गिफ्ट रामायण को उठाकर माथे पर लगाया और उसे खोलकर देखा.

पहले पन्ने पर पिता द्वारा लिखे वाक्य पढ़ा जिसमे लिखा था ₹मेरे प्यारे पुत्र, तुम दिन दुनी रात चौगुनी तरक्की करो और साथ ही साथ मै तुम्हे कुछ अच्छे संस्कार दे पाऊं.. ये सोचकर ये रामायण दे रहा हूँ ₹,

पढ़ते वक्त उस रामायण से एक लिफाफा सरक कर नीचे गिरा जिसमे उसी गाड़ी की चाबी और नगद भुगतान वाला बिल रखा हुआ था।

ये देखकर उस पुत्र को बहुत दुख हुआ और धड़ाम से जमींन पर गिर रोने लगा।

हम हमारा मनचाहा उपहार हमारी पैकिंग में ना पाकर उसे अनजाने में खो देते है।

पिता तो ठीक है.

ईश्वर भी हमें अपार गिफ्ट देते हैं, लेकिन हम अज्ञानी हमारे मन पसन्द पैकिंग में ना देखकर, पा कर भी खो देते है।

खतरे में दुनिया में फसलों की विविधता

विजय गर्ग

दुनिया में तापमान बढ़ता रहा तो फसलों की विविधता खतरे में पड़ जाएगी। एक अध्ययन में चेतावनी दी गई है कि यदि वैश्विक तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो जाता है, तो फसल विविधता खो सकती है, जिससे विश्वव्यापी खाद्य सुरक्षा के लिए जोखिम बढ़ सकता है। शोधकर्ताओं का अनुमान है कि उच्च तापमान के कारण वैश्विक खाद्य उत्पादन का लगभग एक तिहाई हिस्सा खतरे में पड़ सकता है। फिनलैंड के आल्टो विश्वविद्यालय के विज्ञानियों ने नेचर फूड में प्रकाशित शोध में बताया है कि तापमान, वर्षा के पैटर्न और समग्र शुष्कता में परिवर्तन दुनिया भर में 30 प्रमुख खाद्य फसलों के विकास को प्रभावित करेंगे। निम्न अक्षांश क्षेत्र (भूमध्य रेखा के नजदीकी क्षेत्र), खास कर उष्णकटिबंधीय देशों के बड़े हिस्से सबसे अधिक नुकसान उठाने वाले हैं। जैसे-जैसे तापमान बढ़ेगा, इन क्षेत्रों में कृषि के लिए बहुत अधिक भूमि अनुपयुक्त होती जाएगी। फसलों की विविधता में भी भारी गिरावट आएगी।

विविधता के नुकसान का मतलब है। कि कुछ क्षेत्रों में खेती के लिए उपलब्ध खाद्य फसलों के दायरे में काफी कमी आ सकती है। इससे खाद्य सुरक्षा कम होगी और पर्याप्त कैलोरी और प्रोटीन प्राप्त करना अधिक कठिन हो जाएगा। इन बदलती परिस्थितियों से दुनिया के मौजूदा खाद्य फसल उत्पादन का आधा हिस्सा प्रभावित हो सकता है। चावल, मक्का, गेहूं, आलू और सोयाबीन जैसी प्रमुख फसलों को उपयुक्त कृषि भूमि में भारी कमी का सामना करना पड़ सकता है। इससे उन लोगों के लिए चुनौतियां बढ़ सकती हैं जो दैनिक पोषण के लिए इन फसलों पर निर्भर हैं। अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान के दक्षिण में स्थित देश सबसे अधिक प्रभावित होंगे। यदि ग्लोबल वार्मिंग तीन डिग्री सेल्सियस से अधिक हो जाती है तो इन देशों में वर्तमान उत्पादन का लगभग तीन चौथाई हिस्सा खतरे में पड़ जाएगा। वैश्विक तापमान वृद्धि का असर सब जगह एक जैसा नहीं होगा। नया अध्ययन निम्न अक्षांश और मध्य से उच्च अक्षांश क्षेत्रों (भूमध्य रेखा और ध्रुवीय क्षेत्रों के बीच में गर्म और ठंडी जलवायु वाले क्षेत्र) के बीच एक स्पष्ट अंतर को दर्शाता है। भूमध्य रेखा के नजदीकी देशों को जहां फसल की भारी क्षति और विविधता में गिरावट का सामना करना पड़ सकता है, वही ठंडी जलवायु वाले देश अपने समग्र उत्पादन स्तर को बनाए रख सकते हैं। मध्य और उच्च अक्षांश वाले क्षेत्र गर्म होती दुनिया में फसलों की एक विस्तृत श्रृंखला की खेती करने में सक्षम हो सकते हैं। ग्लोबल वार्मिंग नए कीट पैदा कर सकती है और चरम मौसम की घटनाएं ला सकती है। अगर हम भविष्य में अपनी खाद्य प्रणाली को सुरक्षित करना चाहते हैं, तो हमें जलवायु परिवर्तन को कम करना पड़ेगा और इसके प्रभावों के अनुकूल होना पड़ेगा।

मैं भी व्यवस्था का अंग हूँ!

वाह रे व्यवस्था! कितनी निराली, कितनी निरंकुश, और कितनी चालाक! और मैं? मैं भी इसका एक अभिन्न अंग हूँ। मत पूछो कि कौन-सा अंग हूँ, क्योंकि यह व्यवस्था हर किसी को अपनी ज़रूरत के हिसाब से अंग बना लेती है—कभी आँख, कभी कान, कभी ज़ुबान, और ज़्यादातर समय रीढ़विहीन शरीर का एक निष्क्रिय टुकड़ा।

जब कोई घूस लेते पकड़ा जाता है, तो मैं चुप्पी का अंग बन जाता हूँ। जब कोई नेता झूठे वादों की बरसात करता है, तो मैं ताली बजाने वाला अंग बन जाता हूँ। जब कोई अधिकारी फ़ाइल दबाकर बैठ जाता है, तो मैं इंतज़ार करने वाला अंग बन जाता हूँ। और जब कोई सड़क पर न्याय की भीख माँगता है, तो मैं आँखें मूंदकर निकल जाने वाला अंग बन जाता हूँ।

मुझे शिकायत करने की आदत भी नहीं रही, क्योंकि व्यवस्था ने सिखा दिया कि जो विरोध करेगा, उसे कुचल दिया जाएगा। इसलिए अब मैंने अपने भीतर से नैतिकता का दाँत निकलवा दिया है, ताकि वह चुभे ही नहीं। मैंने अपने आत्मसम्मान की हड्डी गलवा दी है, ताकि कभी अकड़कर खड़ा न हो पाऊँ। मैंने अपनी आत्मा को गिरवी रख दिया है, ताकि सुविधाओं की मलाई चख सकूँ।

मैं भी व्यवस्था का अंग हूँ— मुझे दिखती हैं सड़कें टूटी हुई, लेकिन मैं सर झुकाकर चलता हूँ। मुझे दिखते हैं अस्पतालों में दम तोड़ते मरीज़, लेकिन मैं उधर देखने से कतराता हूँ। मुझे दिखता है शिक्षा का बाजार, लेकिन मैं अपने बच्चों को महंगे स्कूल में भर्ती कराकर संतोष कर लेता हूँ।

कभी-कभी क्रांति का कीड़ा जरूर काटता है, लेकिन फिर टीवी पर कोई मनोरंजन शो देखकर मन बहला लेता हूँ। सोशल मीडिया पर गुस्से वाले पोस्ट लिखकर मैं खुद को ज़िम्मेदार नागरिक मान लेता हूँ। दो-चार बहसों में हिस्सा लेकर, व्यवस्था सुधारने का स्वांग भर लेता हूँ।

मैं भी व्यवस्था का अंग हूँ— लाचार, बेबस, समझौतावादी और कहीं-न-कहीं दोषी भी! लेकिन कोई बात नहीं, जब पूरा समाज ही इसी बहाव में बह रहा हो, तो अलग तैरने की जहमत कौन उठाए? जय हो व्यवस्था! जय हो मेरा अंग होना!

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

आईआईटी में गर्ल पावर: एक दशक में महिला आईआईटी छात्रों की संख्या

इंजीनियरिंग शिक्षा, जो कभी केवल लड़कों के लिए थी, अब लड़कियों द्वारा भी चुनौती दी जा रही है। देश के सबसे प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग संस्थानों, आईआईटी में प्रवेश लेने वाली लड़कियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। जेईई-एडवांस्ड परीक्षा में बैठने और आईआईटी में एडमिशन लेने वाली लड़कियों की संख्या साल दर साल बढ़ती जा रही है।

यह इस तथ्य से साबित होता है कि पिछले 9 वर्षों में, आईआईटी में प्रवेश लेने वाली लड़कियों की संख्या लगभग 3 गुना बढ़ गई है। केंद्र सरकार द्वारा देश में इंजीनियरिंग शिक्षा के प्रति लड़कियों का झुकाव बढ़ाने के प्रयासों के बाद यह स्थिति बदल गई है।

केंद्र सरकार ने वर्ष 2018 से लड़कियों के प्रवेश को प्रोत्साहित करने के लिए महिला पूल कोटा की घोषणा की। इस साल महिला पूल कोटे के ज़रिए 14 प्रतिशत सीटें महिला छात्रों ने भरी थीं. जबकि साल 2019 में इस कोटे को बढ़ाकर 17 प्रतिशत कर दिया गया और महिला पूल कोटे को 2020 कोटे में 20 प्रतिशत महिला पूल बनाया गया.

लगातार बढ़ते इस प्रयास के कारण आईआईटी में प्रवेश लेने वाली लड़कियों की संख्या पिछले 9 वर्षों में लगभग चौगुनी हो गई है। आईआईटी की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक साल 2016 में सिर्फ 847 छात्राओं ने एडमिशन लिया था. वर्ष 2017 में, 995 छात्राओं ने प्रवेश लिया। वर्ष 2018 में, 1852 छात्राओं ने वर्ष 2019 में 2432, वर्ष 2020 में 3197, वर्ष 2021 में 3228, वर्ष 2022 में 3310, वर्ष

2022 में 3411 छात्राओं ने आईआईटी में वर्ष 2023 में प्रवेश लिया। 2016 में 27778 गर्ल स्टूडेंट्स से 2024 में 41020 तक अगर बीते सालों के आंकड़ों को देखें तो आईआईटी में महिला छात्रों की संख्या साल 2016 में 27778 और 2017 में 29872 थी. जबकि 2018 में, 14 प्रतिशत महिला पूल कोटा के कारण, संख्या बढ़कर 31021 हो गई, 2019 में, 17 प्रतिशत महिला पूल के कारण, संख्या बढ़कर 33249 हो गई और वर्ष 2020 में, 32851, वर्ष 2021 में 32285, वर्ष 2021 में 33608, वर्ष 2022 में उच्चतम और 4043 में

छात्रों की यह बढ़ती संख्या आईआईटी की ओर उनके बढ़ते झुकाव को दर्शाती है। दूसरी ओर, यदि हम प्रवेश के लिए अर्हता प्राप्त करने वाले छात्रों की स्थिति में अंतर को देखते हैं, तो यह 2016 में 4570 से बढ़कर 2024 में 7964 हो गया है। महिला छात्रों की संख्या क्यों बढ़ रही है सरकार ने आईआईटी में प्रवेश के लिए लड़कियों की संख्या बढ़ाने और आईआईटी में लड़कों और लड़कियों की संख्या के अनुपात को संतुलित करने के लिए अलौकिक सीटों पर लड़कियों को प्रवेश देना शुरू किया।

इससे कम रैंक वाली लड़कियों के लिए आईआईटी में एडमिशन लेना आसान हो गया. इस स्थिति को देखकर आईआईटी की पढ़ाई के प्रति लड़कियों का झुकाव बढ़ गया. अब हालात इस बात पर आ गए हैं कि महिला पूल कोटे में हर सीट के लिए प्रतियोगिता अलौकिक महिला पूल सीटों का विकल्प मिलने के बाद लड़कों की तरह होती जा रही है।

इस साल आईआईटी मुंबई सीएस में ओपन कैटेगरी में लड़कों के एडमिशन के लिए कटऑफ 68 ऑल इंडिया रैंक थी, जबकि लड़कियों के लिए महिला पूल कोटे से कटऑफ ऑल इंडिया रैंक 421 तक थी।

ये कारण भी हैं फील्ड वर्क के अलावा इंजीनियरिंग एजुकेशन में भी ऑफिस का काम बढ़ रहा है। इसमें डिजाइन, निर्माण और निष्पादन में कार्यालय का काम अधिक आम होता जा रहा है। इससे पहले सिविल, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स, माइनिंग जैसी कोर शाखाओं में फील्ड वर्क की काफी मांग थी और कंस्ट्रक्शन साइट्स पर ड्यूटी करनी थी।

इससे लड़कियां इस क्षेत्र में करियर बनाने से बचती थीं. अब डेटा साइंस, कंप्यूटर साइंस, एआई से जुड़े कई ऐसे कोर्स आ रहे हैं जो सुरक्षित माहौल में अच्छे करियर के साथ-साथ लड़कियों के लिए उपयोगी साबित हो रहे हैं। इसीलिए लड़कियों का इंजीनियरिंग एजुकेशन के प्रति झुकाव लगातार बढ़ रहा है.

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार गली कौर चंद

विज्ञान की दुनिया के दिग्गज देख रहे सात बड़े सपने

विजय गर्ग

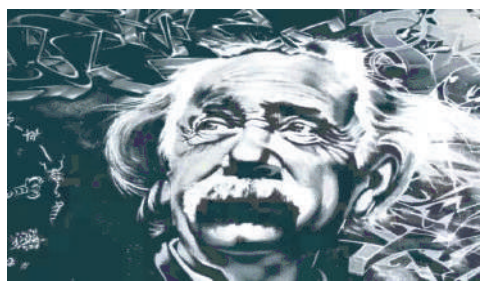

एक सदी पहले जेब के आकार के सुपर कंप्यूटर, चालक विहीन कार और वीडियो कॉल विज्ञान की विशुद्ध बनावटी बातें लगती थीं। चंद घंटों में जीनोम की पड़ताल या अलग-अलग महाद्वीपों में रहने वाले लोगों की जब चाहे आपसी बातचीत पर तो हंसी आती थी। मगर इस वर्ष (2025 में) हमने मिथेन घटाने वाले सप्लीमेंट्स से एक अप्रत्याशित जलवायु खतरे (गाय की डकार) से निपटने में सफलता पाई है। ऐसे में, सवाल उठता है कि कौन सी असंभव लगने वाली तकनीकें भविष्य को आकार दे सकती हैं? आइए, कुछ पर चर्चा करते हैं।

प्रकाश से भी तेज यात्रा : इससे हम ऐसी प्रजाति बन सकते हैं, जो तारों के बीच रहती है। हालांकि, आइंस्टीन का सापेक्षता का सिद्धांत कहता है कि द्रव्यमान वाली चीज बेहिसाब ऊर्जा के बिना प्रकाश की गति को पार नहीं कर सकती, इसलिए इस गति को पाना हमारे लिए व्यावहारिक रूप से असंभव है। मगर, नासा के ईगलवर्क्स लैब ने अल्क्यूबियर के वार्प ड्राइव का पता लगाया है, जो काल्पनिक तौर पर प्रकाश से भी तेज गति से अंतरिक्ष की यात्रा को संभव बनाता है।

टाइम-ट्रैवल, यानी समय से पार यात्रा कराने वाली मशीन आखिर कौन अपनी पिछली गलतियों को ठीक नहीं करना चाहेगा? मगर इसके गंभीर परिणाम भी होते हैं। यदि आप समय में पीछे जाते हैं और अपने अस्तित्व को रोकते हैं, तो 'ग्रैंडफादर पैराडॉक्स' (विरोधाभास की वह स्थिति, जब समय मशीन से गए व्यक्ति की हरकत से ऐसी परिस्थिति पैदा हो, जिससे घटना से पहले उसका प्रभाव घटित हो जाए) आपका दिमाग घुमा सकता है। उपग्रहों पर लगी परमाणु घड़ियां सापेक्षता के कारण समय का अंतर महसूस करती हैं, जो साबित करता है कि समय का विस्तार होता है। वैज्ञानिकों ने भी क्वांटम प्रयोगों से बताया है कि समय से पार यात्रा असंभव नहीं, बेशक अभी बहुत छोटी हो।

डायसन स्फीयर : असीम ऊर्जा देने वाले सूर्य के चारों ओर आप क्या किसी विशाल संरचना की कल्पना कर सकते हैं? डायसन स्फीयर यही है। इसके बाद न जीवाश्म ईंधन, न ऊर्जा संकट। बस निर्बाध सौर ऊर्जा। वैज्ञानिकों ने ऐसे सैटेलाइट डिजाइन किए हैं, जो वायरलेस की तरह पृथ्वी पर ऊर्जा भेज सकते हैं। चीन ने जो अंतरिक्ष में सौर फार्म की योजना बनाई है, वह अंतरिक्ष से सीधे ऊर्जा दोहन की दिशा में पहला कदम हो सकता है।

जैविक अमरता : हमने जीन एडिटिंग का उपयोग करके चूहों का जीवन बढ़ाया है और मानव कोशिकाओं में उम्र बढ़ाने वाले कुछ प्रभावों को उलट दिया है। सीआरआईएसपीआर उम्र से संबंधित बीमारियों पर काम कर रहा है और अल्टोस लैब जैसी कंपनियां कोशिका के फिर से प्रोग्रामिंग को लेकर खोज कर रही हैं। हालांकि, अमरता अभी दूर दिख रही है, फिर भी काफी लंबा और स्वस्थ जीवन अब संभव जान पड़ता है।

नियंत्रित वर्महोल : वर्महोल आपको किसी एक सूराख में अंदर जाने और फिर ब्रह्मांड में कहीं और बाहर निकलने का मौका देगा। यह सही है कि नासा की ईगलवर्क्स लैब ने उन्नत अंतरिक्ष यात्राओं से जुड़ी अवधारणाओं की जांच-पड़ताल की है, पर अभी यह दावे के साथ नहीं कहा जा सकता कि उसने एक स्थिर वर्महोल मॉडल तैयार कर लिया है।

मस्तिष्क से मस्तिष्क तक संचारः ब्रेन कंप्यूटर इंटरफेस पहले से ही लकवाग्रस्त रोगियों को अपने दिमाग को नियंत्रित करने मे मदद कर रहे हैं। ऐसे में, न्यूरल सप्लीमेंट इंटरफेस संचार में क्रांति ला सकते हैं। न्यूरालिंक ने इंसानों पर इसका परीक्षण शुरू भी कर दिया है, हालांकि अभी यह शुरुआती अवस्था में है, लेकिन भविष्य में ज्ञान का तत्काल हस्तांतरण और दिमागी संचार संभव हो सकता है, जिससे नैतिकता और निजता संबंधी चिंताएं पैदा हो सकती हैं।

डार्क मैटर - ऊर्जा का उपयोग ब्रह्मांड का एक बड़ा हिस्सा डार्क मैटर है। डार्क ऊर्जा भी अब तक रहस्यमय है। सीआरईएसएसटी और लार्ज हैड्रॉन कोलाइडर जैसे प्रयोग डार्क मैटर का पता लगाने के लिए काम कर रहे हैं। यदि हम ऐसी कोई सफलता पा लेते हैं, तो ऊर्जा उत्पादन में बड़ी कामयाबी मिल सकेगी।

बहरहाल, इनमें से कोई भी तकनीक मानव सभ्यता की दशा-दिशा बदल सकती है। अब इनमें से कितने में हम सफल होंगे, यह तो आने वाले दशक बताएंगे।

रेवड़ी कल्चर पर नारायण मूर्ति बोले - मुफ्त की योजनाओं से नहीं, नौकरी बढ़ाने से मिटेगी गरीबी

परिवहन विशेष न्यूज

इन्फोसिस के को फाउंडर एन.आर. नारायण मूर्ति ने मुफ्तखोरी (फ्री बिजली पानी) पर तीखी टिप्पणी दी है। वे हाल ही में टाईकॉन 2025 सम्मेलन में शामिल हुए थे। इस सम्मेलन के दौरान नारायण मूर्ति ने कहा कि गरीबी मुफ्त चीजे बांटने से नहीं कम होगी. इसके साथ ही उन्होंने एआई और उद्यमिता के बारे में भी कई बातें कही है।

नई दिल्ली। हाल ही में टाईकॉन सम्मेलन 2025 आयोजित हुआ था. जिसमें इन्फोसिस के को फाउंडर एन. आर. नारायण मूर्ति भी शामिल हुए थे। इस सम्मेलन के दौरान भाषण देते वक्त, नारायण मूर्ति ने मुफ्तखोरी पर तीखी टिपपणी दी।

नारायण मूर्ति ने क्या कहा?

नारायण मूर्ति ने अपने भाषण में कहा कि हमारे देश में गरीबी खत्म मुफ्त की चीजें बांटने पर नहीं, बल्कि नौकरियां पैदा करने पर होगी। उन्होंने आगे कहा कि नए-नए बिजनेस शुरू करके ही गरीबी को मिटाया जा सकता है।

इसके साथ ही उन्होंने एआई के इस्तेमाल पर कटाक्ष किया। उन्होंने कहा कि एआई पुराने प्रोग्राम को नया रूप देने जैसा है। वहीं नारायण मूर्ति ने इनोवेशन और रोजगार सृजन पर फोकस करने की अपील की। नारायण मूर्ति का मानना है कि इनोवेशन से ही गरीबी दूर हो सकती है।

मूर्ति ने एआई पर कहा कि एआई एक पुराना प्रोग्राम है, जिसे नए तरीके से पेश किया जा रहा है।

हाल ही दिल्ली चुनाव के समय बीजेपी, आप और कांग्रेस, सभी ने ही मुफ्त रेवड़ियां बांटने का ऐलान किया। इसके अलावा कई अलग-अलग स्कीम भी लॉन्च की। जिसके बाद से ही मुफ्तखोरी बनाम आर्थिक विकास चर्चा पर है।

नारायण मूर्ति ने Startup को बताया गरीबी का समाधान

नारायण मूर्ति ने कहा कि मुझे विश्वास है कि आप में से हर कोई हजारों नौकरियां पैदा कर सकता है और देश में बढ़ रही गरीबी का समाधान कर सकता है। आप मुफ्त की चीजें देकर गरीबी खत्म नहीं कर सकते।

इसके साथ ही उन्होंने ये भी कहा कि वे ये टिप्पणी राजनीतिक या प्रशासनिक नजरिए से नहीं बोल रहे हैं।

उन्होंने आगे एक उदाहरण देते हुए कहा कि अगर 200 यूनिट तक मुफ्त यूनिट दी जाती है, तो सरकार ऐसे घरों में सर्वे कर ये देख सकता है कि क्या बच्चे घरों में पढ़ रहे हैं या माता-पिता उनकी पढ़ाई में जोर दे रहे हैं।

मूर्ति का ये बयान ऐसे समय में आया है, जब सुप्रीम कोर्ट सरकार की मुफ्तखोरी वाली योजनाओं पर सवाल उठा रही है।

कब हुई इंफोसिस की शुरुआत?

इंफोसिस एक आईटी सेवा कंपनी है। इसकी शुरुआत 2 जुलाई 1981 में हुई थी। इंफोसिस आज लगभग 18.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर की कंपनी बन गई है। वहीं ये कंपनी आज NYSE में सूचीबद्ध है। वहीं अगर नारायण मूर्ति की बात करें तो वे साल 1981 से 2002 तक सीईओ रहे। इसके बाद वे 2002 से 2011 तक चेयरमैन भी बने. फिर जून 2013 में उन्हें फिर से पांच साल की अवधि के लिए कार्यकारी चेयरमैन नियुक्त किया गया।

लाल निशान पर बंद हुआ शेयर बाजार, सेंसेक्स 200 और निफ्टी 73 अंक गिरा

13 मार्च के दिन शेयर बाजार फिर लाल निशान पर क्लोज हुआ है। बाजार के मुख्य इंडेक्स सेंसेक्स और निफ्टी में भारी गिरावट दर्ज हुई। बीएसई सेंसेक्स 200 अंक लुढ़ककर 73828 पर क्लोज हुआ। वहीं निफ्टी में भी 73 अंक गिरकर 22387 पर क्लोज हुआ है। पिछले कुछ दिनों से शेयर बाजार में लगातर गिरावट देखी जा रही है।

नई दिल्ली। 13 मार्च के दिन शेयर बाजार लाल निशान पर क्लोज हुआ। बाजार के मुख्य इंडेक्स सेंसेक्स और निफ्टी में भारी गिरावट दर्ज हुई। बीएसई सेंसेक्स 200 अंक लुढ़ककर 73,828 पर क्लोज हुआ। वहीं निफ्टी में भी 73 अंक गिरकर 22,387 पर क्लोज हुआ है।

आज भी शेयर बाजार की पॉजिटिव शुरुआत हुई थी। लेकिन बंद होते वक्त मार्केट में गिरावट देखी गई।

ये रहें टॉप लूजर और गैनर

बीएसई सेंसेक्स में शुरुआत से ही MTNL टॉप गैनर बना रहा। MTNL के शेयर में 12 फीसदी की बढ़त दर्ज की गई है। अभी एमटीएनएल के एक शेयर की कीमत 48.78 रुपये है। इसके अलावा SEPC भी टॉप गैनर की रेस में बना रहा.

इसके अलावा kec, पॉलिसी बाजार, Orch फार्मा और bharat forge आज के टॉप लूजर बन गए हैं।

Stock Market Today: कल कैसा रहा शेयर बाजार?

12 मार्च को भी शेयर बाजार लाल निशान पर बंद हुए थे। शेयर बाजार के मुख्य इंडेक्स हल्की गिरावट के साथ बंद हुए। बीएसई सेंसेक्स 72 अंक लुढ़ककर 74029 पर बंद हुआ था। वहीं निफ्टी में भी हल्की गिरावट दर्ज की गई थी। एनएसई निफ्टी 27 अंक गिरकर 22470 पर क्लोज हुआ था।

पिछले कुछ दिनों से शेयर बाजार में लगातार बिकवाली देखी जा रही है। 11 मार्च को इंडसइंड बैंक सुर्खियों में रहा था. दरअसल इंडसइंट बैंक के शेयर की कीमत 27 फीसदी तक गिरी थी. अभी इसकी कीमत 672.10 प्रति शेयर है। आज में इसके शेयर में लगभग 1 फीसदी की गिरावट देखी गई थी।

ऐसा कहा जा सकता है कि अमेरिकी शेयर बाजार में हुई हलचल का असर भारतीय शेयर बाजार में भी देखने को मिल रहा है।

तीन दिन तक बंद रहेंगे शेयर बाजार?

14 मार्च को देश के अलग-अलग राज्यों में होली उत्सव मनाया जाएगा। वहीं कहीं-कहीं ये त्योहार 13 और 15 मार्च को भी मनाया जा रहा है। वहीं होली के कारण देश के तमाम जगह सरकारी छुट्टी घोषित की गई है। 13, 14 और 15 मार्च को अलग-अलग राज्य में प्राइवेट और सरकारी बैंक बंद रहेंगे।

ऐसे में सभी के मन में सवाल है कि क्या कल शेयर बाजार बंद रहेंगे? दरअसल अब आने वाले तीन दिनों तक शेयर बाजार बंद होने वाले है। कल होली के कारण शेयर बाजार क्लोज रहने वाले हैं। यानि आप इस दिन बीएसई या एनएसई पर ट्रेडिंग नहीं कर सकते हैं।

इसके अलावा 15 और 16 मार्च को भी शेयर बाजार क्लोज रहने वाले हैं।

क्या होली से पहले सरकारी कर्मचारियों का बढ़ेगा महंगाई भत्ता, जानें कितना होगा इजाफा

होली उत्सव आने से पहले ही केंद्र सरकार ने अपने कर्मचारियों को बड़ा तोहफा दे सकती है। खबर है कि सरकार जल्द ही महंगाई भत्ता में बढ़ोतरी कर सकती है। महंगाई भत्ते में 2 फीसदी की बढ़ोतरी हो सकती है। हालांकि अभी तक ऑफिशियल रूप से इसकी कोई जानकारी सामने नहीं आई है। सरकार इस बार 2 फीसदी तक इजाफा करती है।

नई दिल्ली। देश के तमाम केंद्रीय कर्मचारियों को महंगाई भत्ता दिया जाता है। अगर महंगाई भत्ते को जनवरी 2025 में लागू किया गया है, तो मार्च 2025 में क्रेंद्रीय सरकारी कर्मचारियों की सैलरी में इसका असर देखने को मिल सकता है। वहीं ये सैलरी 2 महीने का एरियर के साथ आ सकती है।

इस बारे में मिली जानकारी के मुताबिक महंगाई भत्ते में 2 फीसदी की बढ़ोतरी हो सकती है। इस बढ़ोतरी के बाद केंद्रीय कर्मचारियों को सैलरी बढ़कर मिलेगी। वहीं मार्च के महंगाई भत्ते के साथ बाकी के 2 महीने का एरियर देने की संभावना भी है।

अगर महंगाई भत्ते में इजाफा होता है, तो इससे लगभग 1 करोड़ से अधिक क्रेंद्रीय कर्मचारियों को फायदा होगा। केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों की लंबे समय से ये मांग रही है कि उन्हें मिलने वाले महंगाई भत्ते में 3 फीसदी का इजाफा किया जाएं।

केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों की मांग को देखते हुए, सरकार ने महंगाई भत्ते में बढ़ोतरी करने का फैसला लिया है। हालांकि ऐसा कहा जा रहा है कि सरकार महंगाई भत्ते में 2 फीसदी तक बढ़ोतरी कर सकती है।

Dearness Allowance: अभी इतना मिल रहा है महंगाई भत्ता

सरकारी आंकड़ों की मानें तो, अभी केंद्रीय कर्मचारियों को 53 फीसदी तक महंगाई भत्ता दिया जाता है। अगर इसमें 2 फीसदी का इजाफा होता है, तो महंगाई भत्ता 55 फीसदी तक हो जाएगा। सरकार ने पिछले साल अक्टूबर में महंगाई भत्ते में 3 फीसदी का इजाफा किया था।

अगर सरकार इस बार 2 फीसदी तक इजाफा करती है, तो इसे पिछले 7 सालों में सबसे कम बढ़ोतरी मानी जाएगी। क्योंकि सरकार ज्यादातर महंगाई भत्ते में 3 फीसदी से 4 फीसदी तक इजाफा करती है।

एक ऐसा समय जब नहीं मिला कोई महंगाई भत्ता

इस बारे में मिली जानकारी के मुताबिक कोविड-19 महामारी के समय सरकार ने सभी कर्मचारियों के महंगाई भत्ते में रोक लगा दी थी। सरकार ने जनवरी 2020 से जून 2021 तक 18 महीनों तक केंद्रीय कर्मचारियों को कोई भी महंगाई भत्ता नहीं दिया था।

वहीं कर्मचारी बहुत समय से इस पीरियड के एरियर की मांग कर रहे हैं। सरकार हर साल में दो बार महंगाई भत्ता में बढ़ोतरी करती है. ये बढ़ोतरी एक बार जनवरी से जून के लिए और दूसरी बार जुलाई से दिसंबर के लिए की जाती है।

इसके अलावा ये भी देखा गया है कि जनवरी से जून में आने वाले महंगाई भत्ते की घोषणा मार्च में की जाती है। वहीं जुलाई से दिसंबर के महंगाई भत्ते में बढ़ोतरी की घोषणा, जुलाई से दिसंबर में होती है।

पीएम किसान योजना से जुड़ने का सुनहरा मौका, 15 अप्रैल से होगा रजिस्ट्रेशन, जानें प्रक्रिया

परिवहन विशेष न्यूज

सरकार अब तक अपने तीन अभियान के जरिए पात्र किसानों को पीएम किसान योजना में शामिल कर चुकी है। 15 अप्रैल से एक बार फिर सरकार अपने अभियान के जरिए किसानों को पीएम किसान योजना में शामिल करने का प्लान बना रही है। इस योजना के तहत किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

नई दिल्ली। पीएम किसान योजना की शुरुआत फरवरी 2019 से हुई थी। इस योजना के तहत किसानों को 6000 रुपये की आर्थिक रूप से मदद प्रदान की जाती है। ये 6000 रुपये किसानों को 2000 रुपये की तीन अलग-अलग किस्तों में दिए जाते हैं।

अभी तक सरकार पात्र किसानों को इस योजना में शामिल करने के लिए तीन अलग-अलग अभियान शुरू कर चुकी है। अब एक बार फिर 15 अप्रैल से पात्र किसानों को पीएम किसान योजना में शामिल किया जाएगा।

कृषि मंत्री ने दी जानकारी

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने लोकसभा में इसकी जानकारी दी है। उन्होंने कहा कि सरकार जल्द ही उन पात्र किसानों को पीएम किसान सम्मान निधि से जोड़ेगी, जो अभी तक अलग-अलग कारणों की वजह से नहीं जुड़ पाए हैं।

चलिए अब जानते हैं कि आप पीएम किसान योजना में कैसे अप्लाई कर सकते हैं।

Apply for PM Kisan: ऐसे करें पीएम किसान योजना में अप्लाई

अगर आपने अभी तक अपना रजिस्ट्रेशन नहीं किया है, तो आप 15 अप्रैल को अपना रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं।

रजिस्ट्रेशन करने के लिए आपको नीचे बताए गए स्टेप्स को ध्यानपूर्वक फॉलो करना होगा।

स्टेप 1- सबसे पहले पीएम किसान योजना की आधिकारिक वेबसाइट पर जाएं।

स्टेप 2- इसके बाद यहां आपको फार्मर्स कॉर्नर (Farmers Corners) का ऑप्शन दिया जाएगा।

स्टेप 3- फिर यहां आपको न्यू फॉर्मर रजिस्ट्रेशन (New Former Registration) का ऑप्शन मिलेगा।

स्टेप 4- इसके बाद यहां अपना मोबाइल और आधार नबंर दर्ज करें।

स्टेप 5- जिसके बाद फोन में एक ओटीपी नंबर आएगा, इसे दिए गए विकल्प पर दर्ज करें।

स्टेप 6- इसके बाद अपनी व्यक्तिगत जानकारी दर्ज करें।

स्टेप 7- अंत में आपको सभी जानकारी भरकर सबमिट करना होगा।

क्यों नहीं आई पीएम किसान योजना की किस्त?

पीएम योजना के कई लाभार्थी ऐसे भी है, जिनका रजिस्ट्रेशन तो है, लेकिन अभी तक किस्त या पैसा नहीं मिला है। इसके कई कारण हो सकते हैं। जैसे ई-केवाईसी नहीं होना, किसान की जमीन का सत्यापन ना होना इत्यादि।

कब हुई पहली किस्त जारी?

आज से 6 साल पहले यानी साल 2019 में किसानों को पहली बार पीएम किसान योजना का फायदा मिला था. इस बारे में मिली जानकारी के मुताबिक पीएम किसान योजना का फायदा सबसे पहले बिहार के भागलपुर किसानों को दिया गया था। वहीं उस समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 9.08 करोड़ किसानों के खाते में 22 हजार करोड़ रुपये से अधिक डाले गए थे।

कितने तरीके के होते हैं बैंक चेक, कब और कहां होता है इनका इस्तेमाल

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। आज हम यूपीआई या ऑनलाइन बैंकिंग के जरिए चुटकियों में ही पैसे ट्रांसफर कर सकते हैं। लेकिन आज भी बड़े अमाउंट के लिए लोग बैंक चेक का इस्तेमाल करते हैं। क्योंकि यूपीआई के जरिए 1 लाख रुपये प्रति दिन ही ट्रांसफर किया जा सकता हैं. इसके अलावा 20 ट्रांजेक्शन की लिमिट दी गई है।

क्या आपको पता है कि जिन बैंक चेक का इस्तेमाल हम बड़े अमाउंट के लिए करते हैं। उसके कई प्रकार (bank cheques Types) हो सकते हैं। हमें ज्यादातर चार से पांच चेक के बारे में ही पता होता है। लेकिन बैंक चेक के कुल 9 टाइप के होते हैं।

बेयरर चेक (Bearer Cheque)

बेयरर चेक में डिपॉजिट करने वाले का नाम लिखा रहता है। इस चेक को पेयबल टू बियरर चेक भी कहते हैं। हालांकि ये चेक रिस्क वाला रहता है, क्योंकि अगर बेयरर चेक कहीं खो गया या भूल गए, तो बैंक होल्डर और डिपॉजिट करने वाले के परमिशन के बिना इस चेक के जरिए पैसे निकाले जा सकते हैं।

ऑर्डर चेक (Order Cheque)

ये चेक, बेयरर चेक के मुकाबले थोड़ा सुरक्षित माना जाता है, क्योंकि इसमें उस व्यक्ति का नाम भी लिखा जाता है, जिसे पैसे निकालने हो। इसलिए इस चेक में or bearer की जगह or order लिखा गया है।

क्रॉस्ड चेक (Crossed Cheque)

इस चेक के नाम से ही समझ आ रहा है, कि इस चेक का क्या उद्देश्य है। इस चेक में क्रॉस का निशान बना हुआ होता है। इसमें धोखाधड़ी के मामले कम होते है, क्योंकि इससे सीधा पैसा बैंक अकाउंट में जाता है।

ओपन चेक (open cheque)

ये चेक सुरक्षित नहीं माना जाता है, क्योंकि इस चेक के जरिए कोई भी पैसा निकाल सकता है। इसे अनक्रॉस्ड चेक भी कहा जाता है। वहीं चेक के जरिए ओरिजनल रेसिपिएंट से दूसरे रेसिपिएंट को ट्रांसफर भी किया जा सकता है।

पोस्ट डेटेड चेक (Post Dated Cheque)

पोस्ट डेटेड चेक का इस्तेमाल भविष्य के लिए किया जा सकता है। इस चेक को इश्यू होने के बाद कभी भी बैंक में जमा किया जा सकता है। लोग अक्सर सोसायटी का पेमेंट या हर महीने घर का किराया देने के लिए इस चेक का इस्तेमाल करते हैं।

स्टेल चेक (Stale Cheque)

ये वे चेक है, जिसका वैलिडिटी पीरियड खत्म हो गया हो। इसलिए इस चेक के जरिए पैसे इनकैश नहीं किए जा सकते हैं। पहले वैलिडिटी पीरियड, चेक जारी होने के छह महीने तक रखा गया था। हालांकि अब इसे घटाकर तीन महीने तक कर दिया गया है।

ट्रैवलर चेक (Traveller Cheque)

जैसा की इसके नाम से समझ आ रहा है, इस चेक का इस्तेमाल ट्रैवलिंग के समय किया जाता है। अकसर लोग ट्रैवलिंग में पैसे ज्यादा नहीं रख पाते, तो वे इस चेक का इस्तेमाल कर सकते हैं।

सेल्फ चेक (Self Cheque)

सेल्फ चेक वे है, जो अकाउंट होल्डर खुद के लिए जारी करता है। जिसका मतलब हुआ कि रिसीव करने वाला और इश्यू करने वाला दोनों एक ही व्यक्ति है। लोग इस चेक का इस्तेमाल खुद पैसे निकालने के लिए करते हैं।

बैंकर्स चेक (Banker's Cheque)

इस चेक को डिमांड ड्राफ्ट भी कहा जाता है। वहीं इस चेक का इस्तेमाल उसी शहर में होगा, जहां इसे इश्यू किया गया हो। ये एक तरह का डिमांड ड्राफ्ट (DD) होता है।

भूल गए हैं अपना UAN नंबर? देखें इसे रिकवर करने का सबसे आसान तरीका

परिवहन विशेष न्यूज

नईदिल्ली। यूएएन नंबर को universal account number भी कहा जाता है. ये 12 नंबरों का एक यूनिक नंबर है। हर नौकरीपेशा व्यक्ति के पास अपना पीएफ अकाउंट होता ही है। हमारी सैलरी का कुछ अमाउंट हर महीने पीएफ अकाउंट में जाता है। ये यूएएन नंबर इसी पीएफ अकाउंट के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

चाहे हमें अपना ईपीएफ (EPF) बैलेंस चेक करना हो या फिर अकाउंट से लिंक फोन नंबर बदलना हो। इसके अलावा भी अगर पीएफ अकाउंट से जुड़ा कोई भी काम हो, तो उसके लिए यूएएन नंबर की जरूरत होती है।

अगर आप भी अपना यूएएन नंबर भूल गए हैं, तो टेंशन की कोई बात नहीं है।

How to Recover UAN: ऐसे करें यूएन नंबर को रिकवर

अगर आप अपना यूएएन नंबर रिकवर करना चाहते हैं, तो आपको नीचें बताएं तरीकों को ध्यानपूर्वक पढ़ना होगा।

यूएएन नंबर को रिकवर करने के कई तरीके हैं। पहले जानते हैं कि ऑनलाइन किस तरीके से यूएएन नंबर को रिकवर किया जा सकता है।

Find Your UAN Online: ऑनलाइन ऐसे जानें अपना यूएन नंबर

स्टेप 1- सबसे पहले आपको यूएएन की ऑफिशियल वेबसाइट पर जाना होगा।

स्टेप 2- इसके बाद important link का ऑप्शन चुनें।

स्टेप 3- यहां आपको know your UAN का ऑप्शन दिखाई देगा।

स्टेप 4- इसके बाद आपको रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर और कैप्चा कोड दर्ज कर

Request OTP पर क्लिक करना होगा।

स्टेप 5- फिर दिए गए ऑप्शन पर ओटीपी नंबर दर्ज करें।

स्टेप 6- इसके बाद Show My UAN Number पर क्लिक करें।

जिसके बाद आपको स्क्रीन पर ही UAN नंबर नजर आ जाएगा।

अगर आप एक ऐसी जगह रहते हैं, जहां इंटरनेट की समस्या है, तो परेशान ना हो। आप

एसएमएस (SMS) के जरिए भी यूएएन नंबर आसानी से पता लगा सकते हैं।

How to Find UAN By SMS: ऐसे करें SMS से UAN नंबर पता

एसएमएस के जरिए भी आसानी से यूएएन नंबर पता लगाया जा सकता है। बस आपको ईपीएफओ (EPFO) द्वारा जारी किया गए नंबर 7738299899 पर EPFOHO UAN ENG लिख कर एसएमएस Send करना होगा। इसके बाद आपको एसएमएस पर ही कुछ वक्त बाद यूएएन नंबर रिसीव हो जाएगा।

12 अंक वाला ये यूएएन नंबर काफी जरूरी है, क्योंकि इसके बिना आप पीएफ अकाउंट एक्सेस नहीं कर पाएंगे। इसलिए अगर आप यूएएन नंबर भूल गए हैं, तो ऊपर बताएं गए तरीकों का इस्तेमाल कर सकते हैं।

आपकी सैलरी से जो पैसा पीएएफ अकाउंट में जाता है, वे रिटायरमेंट के बाद या 60 साल होने पर रदिया जाता है।

मजरा सेमर मई गांव में दम तोड़ता दिखाई दे रहा स्वच्छता भारत मिशन

परिवहन विशेष न्यूज

बिनावर: सरकार का स्वच्छता भारत मिशन ग्राम पंचायत व्यौर के मजरा सेमर मई गांव में दम तोड़ता दिखाई दे रहा है। नालियों की सफाई के अभाव में गांव के रास्तों पर जलभराव व कीचड़ की स्थिति बनी हुई है। इससे जहां गांव में संक्रामक बीमारियों के फैलने का खतरा है, तो वहीं ग्रामीणों को रास्ते पर चलने में परेशानी का सामना करना पड़ता है। यहां आपको बताते चले मामला जनपद बदायूं के विकासखंड सालारपुर क्षेत्र के ग्राम पंचायत व्यौर के मजरा सेमर मई गांव में लगभग 2 महीने से नाली की सफाई ना होने से गांव में सीसी पर जल भराव कीचड़ की समस्या बनी हुई है। यहां हैरान होने की बात तो यह है कि होली एवं रमजान त्योहार के मौके पर किसी भी उच्च अधिकारी ने इस ओर ध्यान नहीं दिया है। जिस कारण रास्ते हमेशा जलमग्न रहते हैं और कीचड़ की भरमार रहती है। सेमर मई गांव में कुछ स्थानों पर नाली बनी भी है, तो उसकी नियमित सफाई नहीं होने से समस्या जस की तस बनी रहती है। जलभराव व कीचड़ के बीच जहां संक्रामक बीमारियों के फैलने का खतरा बना रहता है वहीं ग्रामीणों को आने जाने में भी मुश्किलें झेलनी पड़ रही हैं।

ग्राम पंचायत ब्यौर का मजरा सेमरमई में सफाई व्यवस्था बदहाल कर्मचारियों की लापरवाही से सड़कों पर गंदा पानी बह रहा है

परिवहन विशेष न्यूज

सलारपुर: विकास खंड की ग्राम पंचायत ब्यौर मजरा सेमरमई मे सफाई कर्मचारियों की लापरवाही से सड़कों पर गंदा पानी बह रहा है। नालियों की सफाई काफी समय से नहीं की गई है, जिससे नालियां बंद पड़ी हैं। गंदा पानी सड़कों पर भरता है। जिस कारण राहगीरों का निकलना मुश्किल हो जाता है। गंदगी से मच्छरो का बहुत जोर है। इससे संक्रामक रोग फैलने का खतरा है। ग्रामीणों ने बताया कोई सफाई कर्मचारी मुहल्ले में सफाई करने नहीं आता है, जबकि सफाई कर्मचारियों की ग्राम पंचायत में तैनाती है। घर के सामने सड़क पर गंदे पानी से कीचड़ भरी हुई है। घरों मे आना-जाना मुश्किल है। दोनों तरफ की नाली बंद है। एक महीने से सफाई कर्मचारी मुहल्ले में नहीं आया है।

मुहल्ले में सफाई न होने से नाली बंद पड़ी है। सड़क पर गंदगी से बदबू निकल रही है। जिससे घरों में रहना मुश्किल है कीचड़ में कपड़े खराब हो रहे हैं। गांव में सफाई व्यवस्था पूरी तरह चौपट है। सफाई कर्मी दो तीन घंटे काम करके निकल जाते हैं। सड़कों पर गंदा पानी भरा हुआ है। रोड पर निकलना हुआ मुश्किल।

एम. डी. आफाक गद्दी, घर के सामने पूरी सड़क पर गंदा पानी चल रहा है। कोई नालियों की सफाई नहीं हो रही है गंदे पानी में निकल रहे हैं। मुहल्ले में सफाई कर्मचारी नहीं आता है।

सलारपुर ब्लॉक के ग्राम पंचायत ब्यौर का मजरा सेमरमई में स्वच्छता की स्थिति बिगड़ गई है।

गांव की ज्यादातर नालियां कूड़े-कचरे से भर चुकी हैं। गंदगी के कारण नालियां जाम हो गई हैं। सिर्फ एक-दो नालियां ही साफ हैं। नालियों के चोक होने से गंदा पानी सड़कों पर बह रहा है।

गांव के विभिन्न हिस्सों में कूड़ा व गंदगी रोड पर दिख रही हैं। स्थानीय लोगों ने बताया कि सफाई कर्मचारियों की अनुपस्थिति से हालात खराब हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस लापरवाही से केंद्र सरकार का स्वच्छता अभियान भी विफल हो रहा है।

आहार फाउंडेशन: मानवता की सेवा में समर्पित एक अनोखी पहल : डॉ. अंकुर शरण

फरीदाबाद के ESIC (3 नंबर) सरकारी अस्पताल में आहार फाउंडेशन की 303वीं भोजन वितरण ड्राइव एक अनुकरणीय पहल रही। मानवता की सेवा के इस सुंदर प्रयास को देखकर हृदय भावविभोर हो गया। इस पहल के माध्यम से 150 जरूरतमंद लोगों तक ताज़ा और पौष्टिक भोजन पहुँचाया गया, जो अपने परिजनों के इलाज के दौरान भोजन की कमी का सामना कर रहे थे।

एक IEC सदस्य के रूप में इस अभियान का साक्षी बनना मेरे लिए अविस्मरणीय अनुभव रहा। भोजन वितरण के दौरान देखा गया अनुशासन और स्वच्छता अत्यंत सराहनीय था। आहार फाउंडेशन की यह सतत सेवा भावना और समर्पण समाज के लिए प्रेरणा स्रोत है।

सेवा, समर्पण और स्वच्छता—इन तीन मूल्यों पर आधारित यह पहल सच में काबिले-तारीफ है। ऐसे मानवीय प्रयासों को हमारा पूरा समर्थन और सम्मान मिलना चाहिए। आहार फाउंडेशन के सभी सदस्यों का हृदय से धन्यवाद और शुभकामनाएँ!

एक अनुशासित सेवा अभियान

सेवा कार्यों के दौरान अनुशासन और प्रेम का अद्भुत समन्वय देखने को मिला। आहार परिवार के गौरव भारद्वाज, ऋचा भारद्वाज, सीमा कालिया, विकास कालिया, दिलीप सिंह, ऋधिमा भारद्वाज, सियोना कालिया और चित्रांगी भारद्वाज की उपस्थिति ने इस अभियान को और भी खास बना दिया। ESIC अस्पताल के स्टाफ का विशेष धन्यवाद, जिनकी सहयोग से यह अभियान सुचारु रूप से संपन्न हुआ।

परिवारों का योगदान: सेवा के प्रति समर्पण

303वीं ड्राइव का प्रायोजन किरण अग्रवाल जी और उनके परिवार द्वारा किया गया, जिनके इस सराहनीय योगदान ने ज़रूरतमंदों को भोजन उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह पहल न केवल भोजन वितरण तक सीमित है, बल्कि यह समाज में सेवा और करुणा की भावना को भी बढ़ावा देती है।

विशेष अतिथि के रूप में डॉ. अंकुर शरण की उपस्थिति

इस अभियान में विशेष अतिथि के रूप में मुझे (डॉ. अंकुर शरण) आमंत्रित किया गया, जहां मैंने स्वयं इस सुंदर पहल को नज़दीक से देखा और अनुभव किया। एक समाजसेवी और ग्लोबल कन्फेडरेशन ऑफ़ एनजीओज़ के प्रबंधन ट्रस्टी के रूप में, मैंने आहार फाउंडेशन के सदस्यों की निस्वार्थ सेवा भावना की सराहना की। यह पहल न केवल एक भोजन वितरण कार्यक्रम है, बल्कि यह एक सशक्त सामाजिक आंदोलन है, जो यह संदेश देता है कि कोई भी भूखा न सोए।

सेवा और सहयोग का संदेश

आहार फाउंडेशन द्वारा किया गया यह प्रयास समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का एक बेहतरीन उदाहरण है। इस तरह के कार्यक्रमों से प्रेरणा लेकर हम सभी को समाज सेवा में अपनी भागीदारी निभानी चाहिए।

इस नेक कार्य का हिस्सा बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, इसके लिए आहार परिवार और गौरव भारद्वाज जी का धन्यवाद। आइए, हम सब मिलकर इस सेवा के संकल्प को और मजबूत करें और मानवता की सेवा में अपना योगदान दें।

(शिकायत- चोरी के साहित्य की) प्रसिद्धि की बैसाखी बनता साहित्य में चौर्यकर्म

डॉ. सत्यवान सौरभ

साहित्यिक चोरी साहित्यिक क्षेत्र में एक बड़ी चुनौती बन गई है, जहाँ एक लेखक के विचारों, शब्दों या रचनाओं पर दूसरे लेखक द्वारा उचित स्वीकृति के बिना दावा किया जाता है। यह कृत्य न केवल साहित्यिक नैतिकता का उल्लंघन करता है बल्कि सच्चे लेखक की मौलिकता और रचनात्मकता को भी कमज़ोर करता है। कॉपी-पेस्ट करने का मुद्दा हिंदी साहित्य में तेज़ी से प्रचलित हो रहा है, खासकर इस डिजिटल युग में, जहाँ लेख, कविताएँ और कहानियाँ ऑनलाइन आसानी से उपलब्ध हैं। साहित्यिक चोरी में किसी और के साहित्य को बिना श्रेय दिए लेना या उसमें मामूली बदलाव करके उसे अपना बताकर पेश करना शामिल है। यह व्यवहार मूल लेखकों के अधिकारों का उल्लंघन करता है और रचनात्मकता और मौलिकता को दबाता है। कुछ व्यक्ति इस हद तक चले जाते हैं कि वे दूसरों के साहित्य को अपना बता देते हैं। साहित्यिक चोरी के एक रूप में कहानी के पात्रों को बदलना और उसे मूल रचना के रूप में विपणन करना शामिल है। इस कुकृत्य में ऐसे लोग भी हैं जो स्थापित लेखकों की प्रसिद्ध कृतियों को अपनी कृति के रूप में प्रस्तुत करते हैं, तथा अक्सर साहित्यिक क्षेत्र में मान्यता और प्रसिद्धि पाने की कोशिश करते हैं।

साहित्यिक चोरी तब होती है जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे लेखक के शब्दों को बिना अनुमति या उचित श्रेय दिए अपने शब्दों के रूप में प्रस्तुत करता है। इसमें वे स्थितियाँ भी शामिल हैं जहाँ कोई लेखक बिना उचित उद्धरण के अपने पहले से प्रकाशित साहित्यिक काम का पुनः उपयोग करता है। इसके अतिरिक्त, यदि कोई व्यक्ति मूल विचारों और संरचना को बरकरार रखते हुए किसी दूसरे की सामग्री में मामूली बदलाव करता है, तो उसे भी साहित्यिक चोरी माना जाता है। यह समस्या विभिन्न समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में प्रचलित है, और दुर्भाग्य से, यह आज भी जारी है। साहित्यिक चोरी के कई रूप हैं, और यहाँ तक कि दोहराव को भी रचनात्मक चोरी के रूप में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, कई हिंदी लेखक होली या दिवाली जैसे त्योहारों के दौरान विभिन्न प्रकाशनों में अपनी रचनाएँ पुनः प्रकाशित करते हैं। एक मजबूत समीक्षा संस्कृति की कमी ने साहित्यिक चोरी को साहित्य का एक परेशान करने वाला पहलू बना दिया है। आजकल, कोई भी किसी रचना को उसे बिना किसी जाँच के प्रकाशित करवा सकता है, जिससे ऐसी स्थिति बन जाती है जहाँ मूल लेखक ठगे रह जाते हैं। 'निजी' पाठ्यक्रमों के लिए प्रसिद्ध लेखकों की कृतियाँ लेना और उन्हें अपने नाम से प्रकाशित करना आम बात हो गई है। इस व्यवहार को खत्म करने के लिए केवल आलोचना ही अपर्याप्त लगती है। साहित्यिक चोरी सिर्फ़ नए लेखकों या प्रसिद्धि चाहने वालों की ही बैसाखी नहीं है; यहाँ तक कि स्थापित हिंदी लेखक भी दूसरों की रचनाओं में थोड़ा-बहुत बदलाव करके उन्हें अपना बता देते हैं। साहित्यिक चर्चाओं में साहित्यिक चोरी के कई उदाहरण सामने आए हैं, जिनमें कुछ लेखकों पर प्रसिद्ध पुस्तकों के अंशों को अपनी रचनाओं में शामिल करने का आरोप लगाया गया है, जिससे अंततः उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचा है।

किसी अन्य लेखक के काम या विचारों का उपयोग करते समय, उचित श्रेय देना आवश्यक है। अपने स्वयं के विचारों और शैली को व्यक्त करके मौलिक लेखन को अपनाएँ, यह सुनिश्चित करें कि हिंदी साहित्य में नए दृष्टिकोण और रचनात्मकता पनपे। दूसरों के काम की अनजाने में नकल करने से बचें। हिंदी लेखकों को अपनी बौद्धिक संपदा की रक्षा के लिए अपनी रचनाओं के लिए कॉपीराइट सुरक्षित करना चाहिए। साहित्यिक नैतिकता को बनाए रखें, और लेखकों और पाठकों दोनों को मौलिकता की वकालत करते हुए साहित्यिक चोरी के खिलाफ एकजुट होना चाहिए। साहित्यिक चोरी के खिलाफ लड़ाई में आलोचक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अफसोस की बात है कि प्रकाशन उद्योग में कई संपादक साहित्य की बारीकियों को पूरी तरह से नहीं समझ पाते हैं। ऐतिहासिक संदर्भ की समझ की यह कमी इस मुद्दे की विडंबना को और बढ़ा देती है। मौलिक साहित्यिक कृतियों का प्रभावी ढंग से मूल्यांकन करने के लिए, स्तंभों या पत्रिकाओं के संपादक के रूप में काम करने वाले किसी भी व्यक्ति के पास साहित्य में मजबूत आधार और ज्ञान होना चाहिए। हिंदी साहित्य में साहित्यिक चोरी और कॉपी-पेस्ट की बढ़ती समस्या चिंताजनक है, लेकिन इससे निपटने के लिए प्रभावी उपाय किए जा सकते हैं। साहित्य की विशिष्टता को बनाए रखने और लेखकों के अधिकारों की रक्षा के लिए जागरूकता को बढ़ावा देना और नैतिक मानकों का पालन करना आवश्यक है। साहित्यिक कृतियों में मौलिकता सुनिश्चित करके हम हिंदी साहित्य के उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। साहित्यिक चोरी लेखकों की ईमानदारी को कमजोर करती है और साहित्यिक रचनाओं की प्रामाणिकता को कम करती है। साहित्यिक दुनिया में नवाचार को बढ़ावा देने और स्वतंत्र अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने के लिए मौलिकता को संरक्षित करना महत्वपूर्ण है। इसलिए, सभी लेखकों को नैतिक प्रथाओं को बनाए रखते हुए अपने काम को रचनात्मक और मौलिक बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

दक्ष फाउंडेशन परिवार ने वृद्धाश्रम और अनाथालय में फूलों संग खेली होली : अंकुर

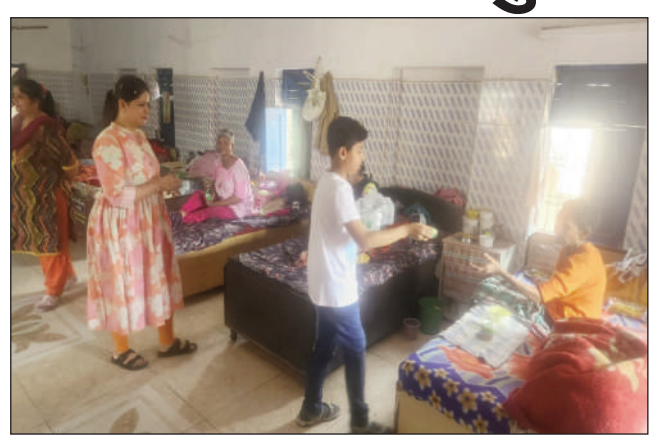

परिवहन विशेष न्यूज

दक्ष फाउंडेशन परिवार ने इस वर्ष होली का पर्व विशेष तरीके से मनाते हुए अनाथ बच्चों और बुजुर्गों के साथ खुशियां साझा कीं। फाउंडेशन के सदस्यों ने NIT-2 स्थित छात्रावास (अनाथालय) और ताऊ देवीलाल वृद्ध आश्रम में जाकर वहां के बच्चों और बुजुर्गों के साथ फूलों की होली खेली।

इस अवसर पर सभी को गुझिया, फल, एनर्जी ड्रिंक और अन्य मिठाइयाँ वितरित की गईं। होली के पारंपरिक गीतों पर नृत्य और गीत-संगीत का आयोजन भी किया गया, जिससे सभी के चेहरे पर खुशी और उल्लास देखने को मिला।

दक्ष फाउंडेशन परिवार के सदस्यों ने इस अवसर पर समाज को यह संदेश दिया कि हमें उन लोगों के साथ भी खुशियां साझा करनी चाहिए, जिनका समाज में कोई नहीं है। युवाओं से आह्वान किया गया कि वे अपने माता-पिता की देखभाल करें और उन्हें वृद्धाश्रम भेजने की स्थिति न आने दें। भारतीय संस्कृति हमेशा बुजुर्गों के सम्मान और बच्चों को स्नेह देने की सीख देती है, और इसी भावना को साकार करने का प्रयास दक्ष फाउंडेशन परिवार द्वारा किया गया।

इस कार्यक्रम में दक्ष फाउंडेशन परिवार से ब्रिगेडियर एनएन माथुर, कर्नल आदर्श कप्लास, विंग कमांडर हरिचन्द मान भूतपूर्व मेंबर मजिस्ट्रेट जे जे बोर्ड, चारु राजपाल, अंकुर शरण, और सामुदायिक पुलिसिंग टीम से सुरेन्द्र सिंह मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

झारखंड के प्राचीन गुरूकुल आश्रम मे विश्व कल्याण श्रीमद भगवद्गीता यज्ञ

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

सरायकेला, झारखंड के एक पूर्व देशी रियासत अधीन संप्रति सरायकेला खरसावां जिला स्थित बाल बह्मचारी एवं रामानंद सरस्वती के इस प्राचीन गुरूकुल आश्रम, बानाटगरानी, राजनगर में विश्व-कल्याण निहितार्थ श्रीमद् भगवत गीता यज्ञ हर वर्ष की बाती इस वर्ष भी जारी है। यज्ञ विगत 10 मार्च से अधिवास के साथ भव्य रूप से आरंभ हुआ है। पांच दिनों तक चलने वाले इस यज्ञ में कर्मकाण्ड जानकर आचार्यों द्वारा यज्ञ मंत्रोच्चारण के साथ यज्ञाहुती, महामंत्र-संकीर्तन अगले शुक्रवार को पूर्णाहुति से संपन्न होगा। इस अवसर प्रतिदिन हजारों हजार भक्तों का आगमन पूजन स्थल विशेष पर हो रहा है। तथा सभी को अन्न प्रसाद खिलाई जा रही है।

मंदिर के मठाधीश श्री कर्मानंद सरस्वती उर्फ चंदन बाबा के सानिध्य में ओडिशा से आये कर्मकांडियों / पंडितों के जरिए सरायकेला खरसावां जिला स्थित इस आश्रम में प्रतिदिन भोर 4.30 बजे मंगल आरती के साथ सूर्य पूजा 6.00बजे, गौ पूजा 9.00बजे तत्पश्चात रूद्राभिषेक 11.00बजे। इसके बाद यज्ञ मंडप में दुर्गा सप्तशती चंड़ी पाठ 12.00बजे, साध्य आरती6.00 बजे एवं शेष समय प्रवचन 8 से 9 बजे रात्रि तक चल रहा है। जहां हजारों हजार की भीड़ पूर्व की भांती होती है।

सनद रहे कि रामानंद सरस्वती के गुरु बाल ब्रम्हचारी जी ने इस महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल पर एक भव्य की आश्रम बानाटगरानी प्रखंड राजनगर प्रखंड सरायकेला में बहुत पहले स्थापित की थी। कालान्तर में यज्ञ मंदिर बना। जो सरायकेला स्टेट के सैन्य सामंत अधिकारियों के गांव से नज़दीक था। जहां विगत तीन दशकों से स्वामी कर्मानंद सरस्वती इस यज्ञ का आयोजन कराते आ रहे हैं। जहां लाखों की समावेश वर्षों से होता आ रहा है।

पुरी हवाई अड्डा ; 221 एकड़ भूमि का अधिग्रहण किया जाएगा

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: ओडिशा सरकार पुरी में प्रस्तावित श्री जगन्नाथ अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए ब्रह्मगिरी तहसील के अंतर्गत सिपासरुबली और बेलपुर क्षेत्रों में 221 एकड़ भूमि का अधिग्रहण करने जा रही है। यह पहल 1,164 एकड़ में फैले ग्रीनफील्ड हवाई अड्डे को विकसित करने की एक बड़ी योजना का हिस्सा है। पुरी के उप-कलेक्टर राजकिशोर जेना ने सोमवार को घोषणा की कि प्रस्तावित हवाई अड्डे की भूमि का अधिग्रहण किया जाएगा। जेना ने नरसंहार की तारीख का संकेत दिया है, साथ ही प्रभावित निवासियों के लिए एक पैकेज भी दिया है। सिपासरुबली मौजा के लिए पहली सार्वजनिक सुनवाई 21 मार्च को होगी। सुनवाई 28 मार्च को बेलपुर गांव में होगी। जेना ने कहा, पुनर्वास पैकेज के तहत प्रत्येक विस्थापित परिवार को 5 लाख रुपये, मकान निर्माण के लिए 3.39 लाख रुपये, परिवहन और घरेलू सामान के स्थानांतरण के लिए 1.13 लाख रुपये, एक वर्ष के लिए आजीविका के लिए 54,300 रुपये और दुकान खोलने के लिए 25,000 रुपये दिए जाएंगे। केंद्रीय वन मंत्रालय से एयरपोर्ट के लिए 25 एकड़ वन भूमि की स्थिति बदलने की अनुमति मिल गई है। उन्होंने कहा कि सामाजिक-आर्थिक प्रभाव मूल्यांकन भी किया गया है।

सरायकेला मे होली नहीं दोल यात्रा है ऐतिहासिक परंपरा, पर आज उपेक्षित

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

सरायकेला, सरायकेला में उत्कलीय परंपरा का जीता जागता नमूना होली पर ₹दोल यात्रा ₹उत्सव, जिसका आज भव्य आयोजन हुआ। कंसारी साही के राधा-कृष्ण मंदिर से यह उत्सव नगर भ्रमण के साथ देवताओं को हजारों की तादाद में लोगों ने अपने-2 आंगन मे पूजा अर्चना की।

कभी ओडिशा का अंग बाद में उसका राजस्व जिला रहा सरायकेला मे सरकारी उपेक्षा के बाबजूद आज भी इसकी झलक लोगों के दिल दिमाग में जोरदार तरीके से देखने को मिलता है। जिस उत्सव शदियों से जगन्नाथ मंदिर, पूरी एवं सैकड़ों स्थल विशेष आयोजन हिस्सा रहा है।

सरायकेला में आज का यह आयोजन सर्व प्रथम राज महल के अंदर रघुनाथ मंदिर पर पूजा अर्चना के साथ इसकी भव्य शुभारंभ घोडानाच, ढोल आदि के साथ हुई जहां राधिका-कृष्ण विमान (पालकी) में विराजमान हो नगर भ्रमण की। आयोजक ज्योति लाल साहु के अनुसार इसकी शुरुआत 1818 में तत्कालीन सरायकेला राजा ने की थी। जो महाराजा उदित नारायण सिंहदेव के समय तक ठीक ठाक चरम पर रहा। इसे रोगरोगी मौजा के कुछ गौ पालक यादव लोग किया करते थे, जिन्हें राजा ने हर संभव सहयोग प्रदान किया था तब।

बतौर साहु आज सरायकेला में ओडिया परंपरा को सरकार जानबूझकर खत्म कर रही है। आज संरक्षण का दरकार है पर सरकारें नदारद है। सरायकेला खरसावां सिंहभूम में ओडिया कभी मर मीट नहीं सकता। उन्होंने उन भक्तों की मुक्ति कामना की जो जगन्नाथ संस्कृति को तीस वर्ष पहले अक्षुण बनाकर गये है।

सच तो यह है कि इस महती कार्य को ज्योति लाल साहु द्वारा संचालित कर संरक्षण दिया जाता रहा है। जो झारखंड जैसे प्रदेश के हर सरकार को जानना चाहिए कि उनका कर्तव्य क्या है और वे करते आ रहे है क्या। उस मार्जार एग्रीमेंट का धरातल पर अधिकारी नेता कैसे झुठलाए हुए हैं उसपर लोगों ने गहन विवेचन की है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023